दिल ही तो है

एमिल ज़ोला

दिल ही तो है

(उपन्यास)

लेखक

एमिल ज्योला

अनुवादक

मखमूर जालन्धरी

महादेव 'आज़ाद'

प्रकाशक :

नवभारतीय प्रकाशन

टी० ८४, जंगपुरा लाइन,

नई दिल्ली ।

प्रकाशक :
नवभारतीय प्रकाशन,
टी० ८४, जंगपुरा लाइन,
नई दिल्ली ।

मूल्य : दो रुपया चार आना

मुद्रक :
शिवजी मुद्रणालय,
किनारी बाजार,
दिल्ली ।

ऐमिल ज्योला का परिचय

'ऐमिल ज्योला उन्नीसवीं सदी के महान् उपन्यासकारों में से हैं। उसने अपनी जिन्दगी ही में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त की और उसके बहुत से उपन्यासों पर मुकदमे चलाये गये।

ज्योला ने लगभग बीस उपन्यास १५ सालों में लिखे। ज्योला ने फ्रांस के उस समाज के बारे में उपन्यास लिखे हैं जो १८७० में दम तोड़ चुका था, इसीलिए कहा जाता है कि ज्योला ने जिन्दा शरीर के बारे में कम लिखा है और लाश के बारे में अधिक। उसके बावजूद बहुत से आलोचकों का विचार है कि ज्योला की कृतियों में अधिक ताकत व प्रभाव है। ज्योला अत्यन्त स्पष्टतावादी उपन्यासकार है जिसकी कलम नहीं रुकती, जो जिन्दगी के घिनौने सत्य को लिखने में ज़रा भी नहीं झिझकता।

ज्योला दूरदर्शी भी था, भविष्य हमेशा उसकी नजर में रहता था। उसने अपने ज़माने में आगे आने वाले ज़माने की झिलकियाँ पेश की हैं। उसका झुकाव समाजवाद की तरफ था, इसलिये वह अपने लेखों में अपनी सत्य-प्रियता का प्रदर्शन करता है। उसकी इस दूरदर्शी सत्य-प्रियता की वजह से उसे बदनाम भी किया गया कि जो चित्र वह खींचता है वह पाशविक होता है और उससे मनुष्यों का अपमान होता है। उसकी भाषा खुरदरी और अश्लीलता से भरपूर है और यह बद-नामी भी उसकी प्रतिष्ठा और महत्त्व को कलंकित न कर सके।

ज्योला का उपन्यास "थरेसा" जिसका यह हिन्दी रूपान्तर "दिल ही तो है" किया जा रहा है, उसके शुरू-शुरू के उपन्यासों से है। इस उपन्यास में भी उसने अपनी कटार की सी सच्चाई से काम लिया है और अपने ज़माने

की समाज के सड़े-गले हिस्से का स्पष्ट चित्र खींचा है। यह उपन्यास मानवीय और पाशविक एक मर्द और औरत ही का किस्सा नहीं बल्कि हमारी संवारी हुई कम और बिगाड़ी हुई ज्यादा दुनियाँ की भयावनी कथा है। जहाँ एक स्वस्थ नारी को एक बीमार के साथ बाँध दिया जाता है और जहाँ एक कलाकार क्लर्की करता है। उसके सामने उनकी लुटती हुई प्रसन्नता उसके दिल व दिमाग को परेशान कर देती है और प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अनौखी बातें करता है और अपराध करने को विवश होता है। ज्योलां की खूबी यही है कि वह सामाजिक सच्चाइयों को अपनी समझ व दृष्टिकोण के रखने के बावजूद अपने पात्रों को गोस्त-पोस्त का इन्सान रखता है और उन्हें अपनी समझ की दूरी से कठपुतलियों की तरह नचाता नहीं।

—मखमूर जालन्धरी

१
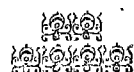
जब लोग नदी और घाट से आते हुए रियूगोइन गाड तक पूरा रास्ता चल कर आते हैं तो वे एक छतदार रास्ते तक पहुँच जाते हैं, जो एक प्रकार की अंधेरी और तंग गली है। इस गली का बहुतेरा फर्श पत्थर की सिलों का बना हुआ है। यह पत्थर की सिलें तड़ख रही हैं और उन पर तेजाबी नमी का पसीना आया रहता है। उसकी छत का शीशा चौरस खानों में बंटा हुआ है और वह स्याही की वजह से काला पड़ गया है। उस गली का नाम डगान्टनियूफ है।

गर्मियों के चमकीले दिनों में जब जलता हुआ सूरज सड़कों को भून कर रख देता है तो शीशे के इन मैले-कुचले खानों में से सफेद सी चमक गिरती है और गली में मद्धम सी रोशनी फैला देती है। सर्दी में जब मौसम खराब होता है तो धुंधली सजावट को शीशों के खाने पत्थरके फर्श तक अंधेरा कर देते हैं। गंदी और घृणित रात की तरह बाएँ तरफ मद्धम नीची और तंग दुकानें दूर तक चली गई हैं जिनसे मयखानों की सी ठंडी हवा बाहर आती है। इन दुकानों में पुरानी किताबों के व्यापारी खिलौने और गत्ता बेचने वाले रहते हैं जिनकी वस्तुएँ मिट्टी की वजह से भूरे रंग की हो चुकी हैं और वह ऊँघते रहते हैं, दुकानों की खिड़कियाँ जो शीशे के छोटे-छोटे खानों की बनी हुई हैं, दुकान में नुमायश के लिये रखे गये माल पर हरे रंग की चमक बरसाते हैं। नुमायश के लिए रखी गई वस्तुओं की छाया के पीछे दुकानें बहुत सी सूनी गुफाओं

की तरह है जिनमें विचित्र सूरतें इधर-उधर घूमती रहती हैं।

दायें तरफ सारी गली की एक दीवार है, जिसके आगे दुकानदारों ने तंग अलमारी के शोकेश बना रखे हैं। ऐसी चीजें जिनका कोई नाम नहीं और ऐसा माल जिन्हें लोग २० साल से भूल चुके हैं, बहुत ही भोंडे भूरे रंग की ढीली चूलों वाली सैल्फों पर रखा हुआ है। इस तरह की एक अलमारी में एक औरत ने नकली मोतियों की दुकान सजा रखी है। यह औरत बहुत सस्ती अंगूठियाँ बेचती है, जो महाजनी लकड़ी के सन्दूक के नीले रंग की मखमल पर बड़ी उम्दा तरीके के साथ पड़ी रहती हैं।

शीशे की छत के ऊपर दीवार काली और छालों भरी है और खुदरा पलस्तर कोढ़ का मारा हुआ और दागों से लथरा हुआ दिखाई देता है।

इपान्टनियूफ गली बिल्कुल कोई सैरगाह नहीं है। लोग इस गली से इसलिए गुजरते हैं कि चक्कर काट कर न जाना पड़े। लोग इसमें से कुछ मिनट बचाने के लिए गुजरते हैं। व्यस्त लोग इस गली का फायदा उठाते हैं यानी वह लोग जो कहीं तेजी के साथ और सीधा पहुँचना चाहते हैं। इस गली में जो लोग दिखाई देते हैं वह काम करने वाले चोगे पहने होते हैं। बगल में बंडल दबाये हुए मर्द होते हैं, औरतें होती हैं। कभी बूढ़े धीरे-धीरे कदम उठाते हुए धीमी रोशनी में चलते दिखाई देते हैं। या फिर बच्चों के झुण्ड स्कूल के पीछे दौड़ते हुए आते हैं ताकि पत्थर की सिलों पर तेज-तेज दौड़कर अपने कदमों की आवाज पैदा कर सकें। दिन भर पत्थर की सिलों पर भारी आवाजें पैदा होती रहती हैं। कोई बात नहीं करता, कोई भी नहीं रुकता और हर व्यक्ति जल्दी में होता है। हर व्यक्ति गर्दन झुकाये चलता है। तेज तेज चलता है। और दुकानों की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखता। अगर कोई व्यक्ति दुकानदार की सजाई हुई चीजों पर नजर

डालता है तो दुकानदार बड़ी घबराहट के साथ उसका मुँह ताकता है।

रात को गली के लैम्प मद्धम रोशनी छोड़ते हैं। रोशनी कभी-कभी टमटमाती है जैसे अभी बुझ जायेगी। और जब रोशनी की लौ बहुत ही मद्धम पड़ जाती है तो गली में पत्थर की सिलों पर छाया फैलने लगती है। दुकानदार अपनी दुकानों की खिड़कियों में रक्खी हुई चीजों के लिए गली की रोशनी से काम निकालते हैं और दुकान के अन्दर छायादार लैम्प जलाते हैं और उन्हें काउन्टर के कोने पर रख देते हैं। दुकानों की अगली कतार में एक गत्ता बेचने वाले की खिड़कियाँ जगमगाती हैं। दूसरी तरफ लैम्प की चिमनी में जलती हुई मोमबत्ती नकली मोतियों के शीशेदार सन्दूक को फिर इस तरह रोशन कर देती है जैसे सितारे चमक रहे हों। कुछ साल हुए इस दुकान से जरा आगे एक दुकान थी। लम्बे बोर्ड पर लिखा हुआ था "बिसाती की दुकान" और शीशेदार खिड़की पर एक औरत का नाम लिखा हुआ था "थेरिसा रक्विन" बोर्ड के अक्षर काले थे और नाम वाले अक्षर लाल थे। दिन के समय इसमें व्यापारी चीजों की प्रदर्शनी की जाती थी। एक तरफ तो मलमल के कफ और कालर, बनियान और मोजे पड़े रहते। हर चीज पीली थी और तार के एक फुन्दे के साथ लटकी रहती थी। खिड़की इस तरह नीचे से ऊपर तक सफेद-सफेद चीथड़ों से भरी हुई थी। दूसरी तरफ शीशे की खिड़की जरा तंग थी जहां हरे ऊन की गुच्छियाँ, सफेद गत्ते पर टाँगे हुए काले बटन, फौलाद के मोतियों वाले बालों के जाल नीले रंग के कागज पर प्रदर्शनी के लिए रक्खे जाते। बुनाई के लिए सिलाइयाँ, कशीदाकारी के नमूने, फीते और धागे की रीलें और धुँधली पड़ी हुई चीजें दिखाई देतीं। तमाम रंग नमी और गर्द के कारण फीके पड़ चुके थे और मिट्टी लकड़ी को चाट रही थी।

दोपहर को जब सूरज से तेज आंच निकल रही होती तो खिड़की में से एक औरत का पीला और गम्भीर चेहरा दिखाई देता। चौड़ा

माथा और लम्बी और तीखी नाक। होंठ फीके गुलाबी रंग की दो पंक्ति थे। उसकी फटी-फटी आँखें, घने बालों के नीचे छिपी हुई मालूम होतीं। औरत कई घन्टे उसी हालत में रहती।

रात को जब लैम्प जलाया जाता तो दुकान के अन्दर का दृश्य भी नजर आता। दुकान गहरी कम थी और चौड़ी अधिक थी। एक कोने में छोटा सा काउन्टर पड़ा था। दूसरे कोने में गोल घूमती हुई सीढ़ी ऊपर की मंजिल तक जाती थी। दीवार के साथ अलमारियां टेक लगाई हुई थीं। चार कुर्सियाँ और एक मेज दुकान का कुल फरनीचर थीं। यह दुकान नंगी दिखाई देती। काउन्टर के पीछे प्रायः दो औरतें बैठी नजर आतीं। नौजवान औरत के अंग-अंग गम्भीर थे लेकिन बूढ़ी औरत ऊंघते हुए मुस्कराती रहती।

बूढ़ी औरत की आयु साठ वर्ष की थी। उसका चपटा चेहरा लैम्प की रोशनी में रक्त-विहीन सफेद मालूम होता था। एक बहुत बड़ी बिल्ली बूढ़ी औरत को सोते में घूरती रहती। पीछे दूर ३० वर्ष का एक नौजवान किताब पढ़ रहा होता या नौजवान औरत से बातें कर रहा होता। वह छोटे शरीर का दुबला-पतला नौजवान था। उसके बाल भूरे थे। उसकी दाढ़ी बहुत ही चौड़ी थी। वह एक बिगड़ा हुआ और बीमार बच्चा दिखाई देता।

दस बजे से जरा पहले बूढ़ी औरत जाग पड़ी। उन्होंने दुकान बन्द कर दी और पूरा परिवार ऊपर की मंजिल पर सोने के लिए चला गया। बिल्ली ने उनका पीछा किया। ऊपर की मंजिल के तीन कमरे थे। सीढ़ी खाने के कमरे में से गुजरती थी। खाने का कमरा रहने का कमरा भी था। बाएं तरफ एक बड़े से ताक में अंगीठी थी। दीवार के साथ कुर्सियाँ लगी हुई थीं। कमरे के बीच में एक गोल सा मेज था। पीछे चमकदार ओट की दूसरी तरफ बावर्ची खाना था। खाने के कमरे के दोनों तरफ सोने के कमरे थे।

बूढ़ी औरत अपने बेटे और अपनी बहू के चुम्बन लेने के बाद अपने कमरे में चली गई। बिल्ली बावर्ची-खाने में पड़ी हुई कुर्सी पर सो गई। नौजवान जोड़ा अपने सोने के कमरे में चला गया। इस कमरे का एक दरवाजा भी था जो सीढ़ी के मुँह पर खुलता था और सीढ़ी गली तक जाती थी।

पति जो बुखार के कारण कांप रहा था सीधा बिस्तर पर जा गिरा। इतने में नौजवान औरत ने खिड़की खोल दी और पर्दा डाल दिया। वह खिड़की के पास कुछ मिनटों तक खड़ी रही। वह गली की दीवार की तरफ देखती रही। फिर वह खामोशी के साथ पलटी और अनिच्छा के साथ बिस्तर पर लेट गई।

२
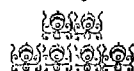
मादाम रेकुन की पहले वरनिन में बिसाती की दुकान होती थी। वह इस शहर में लगभग २५ वर्ष तक एक छोटी सी दुकान में रहती थी। अपने पति की मृत्यु के बाद वह थक गई और उसने अपनी दुकान बेच दी, दुकान बेचने से उसे ४० हजार फ्रांक मिले। उसने यह पूंजी एक और कारोबार में लगा दी और इस तरह उसे २ हजार फ्रांक वार्षिक आमदनी होने लगी। वह एकांत में ज़िन्दगी बसर करने लगी। इस दुनियां के दुखों से दूर रहकर वह सन्तोषजनक और शान्तिमय ज़िन्दगी बिताने लगी।

चार सौ फ्रांक पर उसने एक मकान किराये पर ले लिया, जिसका

बाग सीन नदी के किनारे तक जाता था। यह मकान एक मठ की याद दिलाता था। इस मकान की खिड़कियाँ नदी और सुनसान पहाड़ की तरफ खुलती थीं। इसको सिर्फ अपने बेटे कमीलस और अपनी भांजी की प्रसन्नता प्राप्त थी। थरेसा को एक खुशहाल जिन्दगी प्राप्त हुई।

कमीलस इस समय २० वर्ष का था। इसकी मां इससे बहुत लाड करती और इस तरह इसकी आदतों को बिगाड़ती। उसे अपने बेटे से इसलिये प्यार था कि उसने अपने बेटे की खातिर मौत से जंग की थी। क्योंकि उसका बेटा बचपन और जवानी में लम्बी बीमारी का शिकार रहा था। मादाम ने अपने बेटे की खतरनाक बीमारियों के साथ १५ साल तक जंग की थी। उसने उन सब पर अपने धैर्य और साहस से विजय पाई थी। मौत से छुटकारा पाने पर कमीलस के पालन-पोषण में रुकावट पैदा हुई। उसका शरीर छोटा रहा। उसके दुबले पतले अंग बहुत धीरे-धीरे हरकत करते। उसमें जरा भी फुर्तीलापन बाकी न रहा। उसकी मां उसकी कमजोरी के कारण उससे और भी ज्यादा प्यार करती थी और वह अनुभव करती कि उसने अपने बेटे को कम से कम एक दर्जन बार जिन्दगी दी है।

बच्चे ने वरनिन के स्कूलों में शिक्षा पाई। स्कूल वह उन्हीं दिनों में जाता जब उसे कोई न कोई बीमारी न घेरे होती। उसकी शिक्षा अधूरी ही रही। मादाम रेकुन को जब सलाह दी गई कि वह अपने बेटे को कालिज में भेजदे तो वह कांप उठी। वह जानती थी कि अगर उसका बेटा उससे अलग हुआ तो मर जायेगा। उसका विचार था कि अधिक पढ़ाई उसे जान से मार डालेगी। कमीलस अशिक्षित ही रहा और यह अशिक्षा उसकी बड़ी कमजोरी बन गई।

१८ वर्ष की आयु में मां की मधुर ममता से उकता कर उसने एक व्यापारी की दुकान में नौकरी कर ली। उसे ६० फ्रांक मासिक वेतन मिलने लगा। उसकी तबीयत बहुत बेचैन रहती थी। हाथ पर

हाथ रख कर बैठे रहना उसके लिये असह्य था, वह सख्त मेहनत करके बहुत खुश होता। वह अपने डैस्क पर दिन भर झुका रहता। शाम को जब वह थक कर घर लौटता तो उसका सिर भारी होता और उसे दिमाग का भारीपन एक नशा मालूम होता और वह बहुत खुश होता। मां ने उसके नौकरी करने पर सख्त विरोध किया मगर नौजवान बेटे ने सख्त मांग पेश की। क्योंकि काम उसके स्वभाव की जरूरत बन गया था। मां की ममता, लाड और प्यार ने उसे बहुत ही परिश्रमी बना दिया था। यद्यपि वह अपने साथ सहानुभूति करने वालों से प्यार करता था लेकिन वास्तव में वह एक अलग-थलग जिन्दगी बसर कर रहा था। वह अपने आप में मस्त था। उसे किसी दूसरे की जरा भी परवाह नहीं थी, उसे अगर चिन्ता थी तो अपनी ही। जब मां की ममता उसके रग-रग में सवार हो गई तो उसने नौकरी करली। शाम को दफ्तर से घर लौट कर वह अपनी ममेरी बहिन थरेसा के साथ सीन के किनारे पर सैर की इच्छा से निकल पड़ता। थरेसा की आयु १८ वर्ष की थी। १६ वर्ष पहले जब मादाम रेकुन की अपनी दुकान होती थी उसका भाई कप्तान डिगंज उससे मिलने के लिये आया। उसके बाहुओं में एक दो साल की बच्ची थी और यह थरेसा थी वह अलजेरिया से लौटा था।

"यह बच्ची तुम देख रही हो ना, तुम उसकी फूफी हो।" उसने मुस्करा कर कहा—"उसकी मां मर चुकी है और मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं उसे कहाँ ले जाऊँ। इस बच्ची को मैं तुम्हारे हवाले कर रहा हूँ।"

मादाम रेकुन ने बच्ची को अपनी गोद में ले लिया। मादाम रेकुन मुस्कराई। उसने उसके पतले-पतले गालों का चुम्बन लिया। उसका भाई कप्तान डिगंज एक सप्ताह तक वरनिन में रहा। उसकी बहिन ने बच्ची के बारे में उससे कोई सवाल न किया। उसे बड़े गुप्त तरीके से पता चला कि यह बच्ची औरान में पैदा हुई और उसकी मां अलजीरिया

की एक बहुत ही सुन्दर नारी थी। कप्तान जब जाने लगा तो उसने अपनी बहिन मादाम रेकुन को एक प्रमाण-पत्र दिया जिसमें लिखा था कि थरेसा उसकी बेटी है। कप्तान फिर कभी वापस न आया।

थरेसा कमीलुस के बिस्तर में सोकर जवान हुई। उसकी फूफी ने उससे बहुत ही प्यार किया। थरेसा का शरीर बड़ा गठीला था। फिर भी उससे बीमार बच्ची का सा बर्ताव किया जाता और वह अपने फुफेरे भाई की दवाऐं पीती। घंटों तक वह अंगीठी के सामने बैठकर उठती हुई आग की लपटें देखती रहती। इस तरह उसकी जिन्दगी एक बीमार की जिन्दगी की तरह बना दी गई। वह खामोशी के साथ चलती। आंखें बहुत कम झपकती। फिर भी कभी कभी जब वह अपना बाजू ऊपर उठाती या कदम आगे बढ़ाती तो उसके शरीर का मजबूत कंधा और भावना का श्रोत दिखाई देता। बीमारी का वातावरण उसके शरीर को कमजोर न कर सका लेकिन उसका चेहरा जरूर पीला पड़ गया और अंधेरे में वह बहुत ही कुरूप नजर आती।

जब मादाम रेकुन ने दुकान बेच दी और सीन नदी के किनारे इस मकान में रहने लगी तो थरेसा बहुत खुशी से उछल पड़ी। जब उसने बाग देखा और पेड़ों को आकाश से बातें करते पाया तो उसके दिल में फूफी की लगातार डाट-डपट के बावजूद तेजी से दौड़ने और जोर से चीखने की इच्छा ने अंगड़ाई ली। उसे अपने पहलू में दिल पहली बार जोर जोर से धड़कता हुआ सुनाई दिया। मगर जब उसकी फूफी ने उससे पूछा कि यह घर उसे पसन्द आया कि नहीं तो वह मुसकरा दी।

उसकी जिन्दगी अच्छी हो गई। सचमुच वह एक ऐसी बच्ची रही जो एक बीमार के बिस्तर पर पली-पोसी हो लेकिन वह मानसिक-चिन्ता से जलती हुई और जोश से भरी हुई जिन्दगी गुजारती रही। जब वह नदी के किनारे घास पर अकेली होती तो वह जमीन पर पेट के बल लेट जाती। उसके शरीर के पट्ठे तन जाते जैसे वह किसी पर झपट

पड़ने पर तैयार हो और इस तरह वह घण्टों लेटी रही।

शाम को वह कुछ शान्त होती और अपनी फूफी के पहलू में बैठकर कुछ-न-कुछ बुनती रहती। कमीलस आराम कुर्सी में धँसा हुआ उसके शरीर के बारे में सोचता रहता।

मादाम रेकुन अपने बच्चों की तरफ बड़ी ममता भरी नजर से देखती। उसने काफी समय पहले दोनों की शादी कर देने का इरादा कर लिया था। वह अभी तक यह सोचती थी कि उसका बेटा कब्र में पाओं लटकाये हुए है एक दिन वह मर जायेगा और उसकी बूढ़ी माँ अकेली रह जायेगी। थरेसा की खामोशी मादाम रेकुन के दिल में विश्वास करा देती। थरेसा ताकतवर थी और मादाम रेकुन जानती थी कि यह लड़की उसके बेटे के लिए रक्षक सिद्ध होगी। इसलिए वह अपने बेटे को थरेसा देना चाहती थी। इनकी शादी होनी चाहिए और जरूर होनी चाहिए।

बच्चे बहुत समय से जानते थे कि किसी दिन उनकी शादी होगी। मादाम रेकुन प्राय: कहती "थरेसा २१ वर्ष की हो जाये तो फिर......" और वह बड़े धैर्य के साथ इन्तजार करती रही कि थरेसा कब २१ वर्ष की होती है।

कमीलस के खून को लम्बी बीमारी ने बहुत पतला कर दिया था और वह जवानी की इच्छाओं से बिलकुल बेखबर था। वह अपनी ममेरी बहिन के लिये एक बच्चा ही रहा। वह उसके गाल पर इस तरह चुम्बन देता जैसा अपनी माँ के गाल पर चुम्बन दिया करता था। वह जब कभी थरेसा को अपनी गोद में लेता तो थरेसा उस वक्त उसके नजदीक लड़की न होती बल्कि उसका कोई दोस्त लड़का होता। उसे थरेसा के चलते हुए होंठ चूसने का ध्यान तक न आता और वह उसके बाहुओं में कुलबुलाती रहती।

जब कभी उसकी शादी की बात होती तो थरेसा बहुत ही गम्भीर

हो जाती और मादाम रेकुन जो कुछ भी कहती उसके जवाब में अपना सिर हिला देती।

गर्मियों की शाम को नौजवान जोड़ा नदी के किनारे भाग जाता। कमीलस अपनी माँ की हर वक्त की निगरानी से तंग आ जाता। किसी क्षण वह बगावत करना चाहता, दौड़ना चाहता। वह थरेसा को बाहों से पकड़ कर घर से बाहर ले जाता और उससे कुश्ती लड़ना चाहता। एक दिन उसने थरेसा को धक्का दिया और वह गिरते गिरते बची। लेकिन दूसरे ही क्षण थरेसा उस पर जंगली जानवरों की तरह झपट पड़ी। उसकी आँखों से आग निकलने लगी। कमीलस गिर पड़ा। वह बहुत भयभीत हो गया।

महीने गुजरते गये। साल बीत गये। शादी का दिन आ गया। मादाम रेकुन थरेसा को एक तरफ ले गई और उसने उसके माँ-बाप का जिक्र किया और उसे बताया कि उसका कैसे जन्म हुआ। लड़की ने अपनी फूफी की बात गौर से सुनी और फिर उसकी बातों का जवाब दिये बिना उसके मुरझाये हुए गालों का चुम्बन लिया।

उस रात को थरेसा अपने कमरे में जाने की बजाये जो सीढ़ियों की बाएँ तरफ था अपने फुफेरे भाई के कमरे में चली गई। कमीलस का कमरा सीढ़ियों की दाएं तरफ था। अगली सुबह को जब नौजवान जोड़ा नीचे उतरा तो कमीलस के चेहरे पर अभी तक बीमारी के चिह्न थे और थरेसा अभी तक गम्भीर थी।

@

३

अपनी शादी के एक सप्ताह के बाद कमीलस ने बड़े रूखेपन के साथ अपनी माँ से कहा कि वह वरनिन छोड़कर पेरिस जाना चाहता है। मादाम रेकुन ने इस इरादे के खिलाफ आवाज उठाई। उसने अपनी जिन्दगी का एक रास्ता बना लिया था जिसे वह किसी कीमत पर बदलना नहीं चाहती थी। बेटा आपे से बाहर हो गया। उसने धमकी दी कि अगर उसकी इच्छा को पूरा न किया गया तो वह फिर बीमार पड़ जायेगा। उसने कहा—"माँ मैंने आज तक तुम्हारी बात मानी है। मैंने अपनी ममेरी बहन से शादी कर ली है। तुमने मुझे जो दवा पिलाई वह मैंने बिना चूँ चा किये पीली, मगर मेरी अपनी भी एक इच्छा है और तुम्हें मान जाना चाहिए। हम इस महीने के अन्त में पैरिस के लिए रवाना हो जायेंगे।"

मादाम रेकुन को उस रात नींद नहीं आई, वह रात भर सोचती रही। हाँ इसको अपनी जिन्दगी को एक नया रंग देना होगा। शायद घर में बच्चे भी आ जायें। इसलिये कुछ और दौलत पैदा करना जरूरी है। सुबह तक वह भी पेरिस जाने पर सहमत हो गई।

दोपहर के खाने पर तो मादाम रेकुन चहकती रही।

"सुनों मैं कल पेरिस जाऊँगी। मैं वहाँ एक बिसाती की दुकान मोल ले लूँगी। मैं और थरेसा दुकान में बैठ कर सुइयाँ-धागे बेचा करेंगी और तुम कमीलस! तुम्हारे जो जी में आये वही करना। सैर

किया करना या कोई नौकरी कर लेना।"

"मैं कोई नौकरी ढूँढ लूँगा।" कमीलस ने उत्तर दिया।

वास्तव में बात तो यह थी कि कमीलस की यह एक मूर्खता पूर्ण इच्छा थी जो उसे वरनिन छोड़ने पर मजबूर कर रही थी। वह एक बहुत बड़ी दुकान की नौकरी करना चाहता था। वह प्राय: अपने आप को एक बहुत बड़ी मेज के पास कान पर कलम रक्खे बैठा हुआ ख्याल करता।

थरेसा की सलाह न ली गई। वह सदा जैसी उसको आज्ञा मिले मान जाती थी। उसके पति ने उसकी राय पूछना पसन्द नहीं किया। जहाँ वह जाते वह भी चली जाती।

मादाम रेकुन पैरिस में पहुँच कर सीधी डपान्टनियूफ गली में पहुँची। वरनिन में एक बूढ़ी मगर अविवाहित स्त्री ने उसे अपने एक सम्बन्धी के यहाँ भेजा था, जो बिसाती की दुकान करता था और उसे बेचना चाहता था। मादाम रेकुन ने दुकान को तंग, अन्धेरी और छोटी पाया। इस गली में क्योंकि शान्ति थी इसलिए यह दुकान इसे पसन्द आ गई और फिर उस दुकान के बहुत कम दाम की माँग की गई तो उसने तुरन्त उसे खरीद लेने का इरादा कर लिया। यह दुकान उसे दो हजार फ्राँक में मिल गई। दुकान और घर का किराया कुल मिला कर १२ सौ फ्रांक सालाना था। मादाम रेकुन के पास ४ हजार फ्राँक थे। और उसने सोचा कि वह अपने असली पूँजी को छोड़े बिना दुकान भी खरीद सकती है। और दो साल का किराया भी अदा कर सकती है।

वह खुश-खुश वरनिन लौट आई। आते ही उसने कहा—कि एक खजाना उसके हाथ आ गया है और दुकान पैरिस के बीचों-बीच स्थित है और शाम तक पैरिस की नमदार दुकान एक महल बन गई।

"बेटी! थरेसा तुम वहां जाकर बहुत खुशी होगी। ऊपर की मंजिल में तीन कमरे हैं। गली में लोगों की भीड़ लगी रहती है। हम वहां

कभी नहीं उकता सकेंगे। बूढ़ी मादाम रेकुन इस तरह बातें बनाती रही।

आखिरकार यह छोटा सा परिवार सीन नदी के किनारे वाला मकान छोड़कर पेरिस में डपान्टनियूफ की गली में चला गया।

जब थरेसा ने दुकान में प्रवेश किया जो आज के बाद उसका अपना घर बनने वाली थी तो उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे वह एक गन्दी नाली में उतर रही हो। उसका जी मतलाने लगा। गला सूख गया। उसने गंदी और भीगी गली में नजर डाली। दुकान का निरीक्षण किया और ऊपर गई। फरनीचर के खाली नंगे कमरों से डर लग रहा था। उस पर भी थरेसा चुप रही। जब उसकी फूफी और उसका पति पहुँच गये तो वह एक ट्रंक पर बैठ गई। उसका गला हिचकियों से भरा हुआ था लेकिन उसके मुंह से एक आह तक न निकली।

मादाम रेकुन को जब वास्तविकता का सामना करना पड़ा तो वह घबरा गई। उसे अपनी साफ सोच और स्वप्नों पर शर्म आने लगी, उसने जो सौदा पटाया था वह अब भी उसके बचाव में कई बातें कर रही थी। दुकान में अंधेरा देखकर उसने कहा—"बाहर डर छाया हुआ है।" और अंत में कहा—"अच्छी तरह झाड़ देने से इस दुकान का रूप निखर आयेगा।"

"अम्मा छोड़ो भी बहुत अच्छी जगह है और फिर हम शाम से पहले यहाँ आया ही कब करेंगे। मैं तो छै बजे से पहले कभी घर नहीं लौटूंगा। तुम दोनों साथ रहोगी इसलिए उकताने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

कमीलस ने कभी चूहे के बिल की तरह इस दुकान में रहना स्वीकार न किया होता अगर इसके ख्याल में अभी तक आरामदायक दफ्तर न होता। उसने अपने आपको इस तरह तसल्ली दी कि वह एक शानदार दफ्तर में दिन भर रहेगा जहां अंगीठी में आग जलती होगी

और रात को वह जरा जल्दी सो जाया करेगा।

हफ्ता भर दुकान अव्यवस्थित हालत में रही। पहले ही दिन थरेसा काउन्टर के पीछे जा बैठी और वहीं देर तक बैठी रही। मादाम रेकुन इसके चाल-ढाल पर बहुत हैरान हुई। इसका विचार था कि नौजवान स्त्री अपना घर बसायेगी। खिड़कियों में गुलदस्ता रक्खेगी दीवारों पर नया फूलदार कागज चिपकायेगी। खिड़कियों पर नये पर्दे लटकायेगी। फर्श पर दरियां बिछायेगी। मादाम रेकुन ने सलाह दी कि मकान की थोड़ी बहुत मरम्मत करवा लेनी चाहिए तो थरेसा ने कहा—"अम्मा वह क्यों। हम बड़े मजे में हैं। हमें ऐशो-आराम की कोई चीज नहीं चाहिए।"

मादाम रेकुन जब थरेसा को हर वक्त इधर-उधर फुदकती नजर आती तो उसे बहुत कष्ट होता। उसने कोयला बेचने वाली औरत को नौकर रख लिया और इस तरह बूढ़ी मादाम रेकुन को एक जगह जमकर बैठने पर मजबूर कर दिया।

पूरे एक महीने तक कमीलस को कोई काम न मिला। वह दिन भर सड़कों पर आवारा घूमता रहा। वह इस तरह उकता कर घर लौटता कि प्रायः वरनिन जाने की बातें करता। आखिरकार उसे रेलवे के दफ्तर में नौकरी मिल गई। उसे एक सौ फ्रांक मासिक वेतन मिलने लगा। उसका स्वप्न सच हो गया।

वह सुबह आठ बजे घर से निकलता और शाम को घर लौटता। घर आते ही वह खाना खाता और फिर कोई किताब पढ़ने लगता। हर शाम को बीस या तीस पृष्ठ पढ़ता। कभी-कभी वह इतिहास और विज्ञान की किताबें भी पढ़ता। उसका विचार था कि इस तरह वह अपनी शिक्षा में वृद्धि कर रहा है। कभी-कभी वह अपनी पत्नि को भी किताब का कोई भाग पढ़कर सुनाता। थरेसा सारी शाम खामोशी में गुजार देती। वह किताब को हाथ तक न लगाती और उसका पति

सोचता कि उसकी पत्नि मध्यम वर्ग की समझ रखती है।

थरेसा को किताबें पसन्द नहीं थीं। वह बेकार रहना और सोचना चाहती थी। वह आज्ञा पालने की खातिर अपना पूरा जोर लगा रही थी।

कारोबार ठीक ही चल रहा था। हर महीने एक ही सी आय होती। थरेसा ग्राहकों से बहुत ही कम बातें करती मगर मादाम रेकुन को बातों से खूब रिझाती। मादाम रेकुन की बातें ही ग्राहकों की प्रायः इज्जत किया करतीं।

तीन साल तक दिन यूँ ही गुजरते रहे। कमीलस एक रोज भी दफ्तर से गैर हाजिर न हुआ और उसकी माँ और उसकी पत्नि ने कभी दुकान से बाहर कदम न रखा। थरेसा के लिए हर रात को वही मनोरंजन होता और हर सुबह को वही उजाड़ और बेमस्त दिन शुरू होता।

४
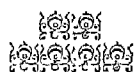
हफ्ते में एक बार शुक्रवार की शाम को रेकुन परिवार उत्सव मनाता। खाने के कमरे में एक बहुत बड़ा लैम्प जलाया जाता। चाय की केतली चूल्हे पर रख दी जाती। यह एक अच्छा आराम होता। शुक्रवार की शाम तमाम दूसरी शामों से भिन्न होती। यह परिवार सम्मानित लेकिन शानदार ऐशो-आराम की जिन्दगी बिताने लगा।

मादाम रेकुन को पैरिस में अपना एक पुराना मित्र मिल गया था।

मादाम रेकुन का यह मित्र पुलिस सुपरिटैन्डेण्ट मैचाड था और वह २० साल तक वरनिन में रहा था और फिर उस घर में जिसमें मादाम रेकुन रहती थी। इन दोनों में गहरी छनती थी। जिस समय विधवा मादाम रेकुन ने सीन नदी के किनारे अपनी दुकान बेच कर घर ले लिया था तो वह एक दूसरे से अलग हो गये थे। मैंचाड इस घटना के कुछ दिनों बाद वरनिन छोड़कर पेरिस चला आया था और १५ सौ फ्रान्क मासिक की पेंसन पर अब रीयूड-लासीन में शान्तिमय जीवन बिता रहा था। एक दिन जब वर्षा हो रही थी तो उसकी मुठभेड़ गली डपान्टनीयूफ में मादाम रेकुन से हुई और उस रात को मादाम रेकुन ने उसे खाने पर बुलाया। बस इस तरह शुक्रवार की शाम को उत्सव शुरू हुआ। मैंचाड हफ्ते में एक बार जरूर आता। एक दिन वह अपने बेटे आलवर को भी अपने साथ ले आया। आलवर का शरीर लम्बा था मगर दुबला-पतला था। उसकी पत्नि ठिगने कद की थी और प्रायः बीमार रहती थी। आलवर पुलिस के विभाग में नौकर था और उसे तीन हजार फ्रांक मासिक वेतन मिलाता था। कमीलस इससे ईर्ष्या करने लगा। थरेसा को भी यह घमण्ड से फूला हुआ नौजवान पसन्द नहीं था, जो यह ख्याल करता था। कि वह अपने आने से उनकी दुकान का सम्मान कर रहा है।

कमीलस एक और मेहमान को घर लाया। यह रेलवे के विभाग का एक बूढ़ा नौकर था और २१०० फ्रान्क मासिक वेतन पाता था। रेलवे के दफ्तर में यही व्यक्ति दूसरे नौकरों में काम बाँटता था। इस लिए कमीलस इस बूढ़े नौकर ग्रीयूट का मान करता था और अपने स्वप्नों में कमीलस प्रायः अपने आप से यह कहा करता कि एक दिन यह बूढ़ा मर जायेगा और वह इसकी कुर्सी पर जा बैठेगा। मादाम रेकुन के आव-भगत से ग्रीयूट बहुत खुश हुआ।

इसके काम से शुक्रवार की शाम का यह उत्सव बहुत महत्वपूर्ण हो

गया। सात बजे मादाम रेकुन चूल्हा जला देती और लैम्प में तेल डाल कर मेज पर रख देती। आठ बजे से मैंचाड और ग्रीयूट दुकान के दरवाजे पर मिलते। वह दोनों आकर मेज के गिर्द बैठ जाते और आलवर उसकी पत्नि की प्रतीक्षा करने लगते। जब हर व्यक्ति पहुँच जाता तो मादाम रेकुन प्यालियों में चाय उड़ेलती और कमीलस डोमिनो खेल के मोहरे मोम जामे पर रख लेता और हर कोई खेल में जुट जाता।

थरेसा बड़ी अच्छी तरह खेलती और कमीलस भिन्ना उठता। वह अपने एक बाजू में मादाम रेकुन की बड़ी बिल्ली को बिठा लेती और दूसरे हाथ से मोहरें उठा-उठा कर रखती जाती। शुक्रवार की शाम थरेसा को भारी मालूम होता। वह प्रायः सिर दर्द का बहाना करती ताकि वह आराम से कुछ कहे बिना बैठ सके। वह ऊँघती रहती।

बूढ़े मैंचाड का चेहरा सफेद था। एक बूढ़े का मुर्दा चेहरा। ग्रीयूट के अंग-अंग खिचे-खिचे थे, आँखें गोल थीं और पतले-पतले होंठ थे। आलवर की हड्डियाँ उसकी खाल को तोड़ कर बाहर निकल आने के लिए बेचैन मालूम होती थीं। चिकना चेहरा था और शरीर तो बहुत ही कुरूप था। आलवर की पत्नि पीली और पतली थी। उसकी आँखें धुँधली थीं। होंठ बेरंग थे। थरेसा जब उनमें बैठती तो उसे एक भी जिन्दा आदमी न मिलता। कभी-कभी थरेसा तो सोचती कि उसे एक गहरी कब्र में बन्द कर दिया गया है।

दरवाजे के साथ एक घन्टी बांध दी गई थी ताकि जब कोई ग्राहक दुकान में प्रवेश करे तो यह घन्टी बज उठे। थरेसा के कान घन्टी पर लगे रहते। वह ग्राहक के आने पर उठ कर नीचे जाती और ग्राहक के चले जाने के बाद काफी देर तक काउन्टर के पीछे ठहरी रहती। मगर वह अधिक देर तक नीचे न ठहर सकती क्योंकि कमीलस उसकी अनुपस्थिति में झल्लाने लगता। वह आवाज देता—"तुम नीचे क्या कर रही हो?" और ग्रीयूट सदा विजयी रहता।

थरेसा बड़ी उदासी के साथ ऊपर आती और मैचाड के सामने आकर बैठ जाती और इस तरह ग्यारह बजे तक वह बिल्ली को अपनी गोद में लिये बैठी रहती।

◉

५

एक शुक्रवार को कमीलस दफ्तर से लौटते हुए अपने साथ एक ऊँचे कद और चौड़े कंधों वाले नौजवान को घर लाया "अम्मा" उसने मादाम रेकुन से कहा "तुम इसे नहीं पहचानतीं ?"

बूढ़ी औरत ने ऊँचे कद के नौजवान की तरफ देखा और कुछ सोचने लगी। मगर उसे कुछ भी याद न आया। थरेसा बड़ी दिलचस्पी के साथ यह दृश्य देख रही थी।

"क्या तुम इसे नहीं पहचानतीं। यह लारां है। बूढ़े लारां का बेटा, जिसके गेहूँ के खेत हैं। क्या तुम सचमुच ही भूल गईं ? यह मेरे साथ पढ़ता रहा है। हम इकट्ठे स्कूल जाया करते थे। तुम इसे मुरब्बा के साथ रोटी दिया करती थीं।"

मादाम रेकुन को तुरन्त "छोटा लारां" याद आ गया। मगर वह सोच रही थी कि लारन्ट का कद कितना लम्बा हो गया। लारां को इसे देखे हुए २० साल बीत चुके थे।

"अम्मा तुम्हें हैरानी होगी यह व्यक्ति भी मेरे ही रेलवे के दफ्तर में डेढ़ साल से नौकर है, मगर मुझ से भेंट आज ही हुई है। हमारा दफ्तर भी तो बहुत बड़ा है।"

लारां ने कमीलस को बात पूरी करने दी और फिर झुक कर नमस्कार किया। कमीलस ने उसका पूरा परिचय कराया। "देखो तो सही इसकी सेहत कितनी अच्छी है। १५ सौ फ्रांक वेतन लेता है। कालिज में भी शिक्षा पाई है और चित्रकारी भी करता है"

मादाम रेकुन ने कहा "आज का खाना यहीं खाओ।"

"बहुत अच्छा। मुझे सचमुच ही खुशी होगी।" लारां ने जवाब दिया। वह टोपी उतार कर बड़े आराम से कुर्सी पर बैठ गया।

थरेसा ने अतिथि की तरफ देखा। उसने आज तक इतने पास से किसी सगे आदमी को भी नहीं देखा था। वह उसकी तरफ तारीफी नजरों से देखती रही। एक पल तक उसकी नजर लारां पर ही रही। फिर उसकी नजर उसके मजबूत घुटनों और हाथों पर गई। उसके पट्ठे मज़बूत थे। वह ठोस प्रकार के मांस-पेशी का बना हुआ मनुष्य था।

उसके बाद कमीलस ने लारां को अपनी किताबें दिखाईं और फिर बोला—"तुम मेरी पत्नी से तो मिलो। तुम्हें याद होगा कि मेरी छोटी सी बहिन मेरे साथ खेला करती थी।"

"हां मैंने देखते ही तुम्हारी पत्नी को पहचान लिया है।" लारां ने निस्संकोच होकर थरेसा की तरफ देखते हुए कहा।

लारां की नज़र थरेसा को अपने शरीर में प्रवेश करती हुई मालूम हुई। थरेसा घबरा गई। उसने जबरदस्ती अपने होठों पर मुस्कराहट पैदा की और एक दो वाक्य भी बड़ी कठिनाई से कहे। फिर वह अपनी फूफी की मदद के लिये चली गई।

रात का खाना शुरू हुआ। शोरबा के आते ही कमीलस का ख्याल आया कि उसे अपने मित्र की तरफ ध्यान देना चाहिये।

"तुम्हारे पिता जी कैसे हैं?" कमीलस ने पूछा।

"मुझे खबर नहीं। तुम्हें शायद मालूम नहीं हमारा झगड़ा हो गया था। हमने तो ५ वर्ष से एक दूसरे को पत्र तक नहीं लिखा।"

"यह क्या कह रहे हो" रेलवे का कलर्क कमीलस अपने मित्र के बर्ताव पर बहुत हैरान हुआ।

"हमारा बुजुर्ग भी अजीब तरह के विचार रखता है। सदा पड़ो-सियों से झगड़ता रहता है। उसने मुझे कालिज में इसलिये भेजा कि मैं वकील बन जाऊँ। उसके मुकदमे जीता करूँ। बूढ़ा लारां कोई उमंग और कोई इच्छा नहीं रखता। वह तो अपनी बेवकूफियों से भी लाभ कमाना चाहता है।"

"और तुमने वकील बनना पसंद नहीं किया।" कमीलस और भी अधिक हैरान हुआ। "बिल्कुल नहीं, दो साल तक तो मैं बहाने करता रहा कि मैं खूब अध्ययन कर रहा हूँ। यह बहाना इसलिये करता रहा कि बूढ़े से बारह सौ फ्रांक सालाना ले सकूँ। मैं अपने कालिज के एक मित्र के साथ रहा करता था। वह चित्रकार है मैंने भी चित्रकारी शुरू करदी। केवल आराम करने के लिये। यह काम सचमुच ही एक आराम है। जरा भी थकान नहीं मालूम होती। हम दिन भर सिगरेट पीते, बातें करते।"

रेकुन परिवार की आँखें फटी की फटी रह गईं।

लारां ने बातचीत का सिलसिला जारी रखते हुए कहा—"दुर्भा-ग्य से यह काम जारी न रह सका। मेरे पिता जी को पता चल गया कि मैं उससे झूठ बोल रहा हूँ। उसने मेरी सहायता बन्द करदी। फिर मैंने धार्मिक चित्र बनाने शुरू कर दिये। लेकिन यह व्यवसाय फजूल है। जब मैं भूखों मरने लगा तो मैंने चित्रकारी छोड़ दी और नौकरी की तलाश शुरू कर दी। बूढ़ा इन दिनों अपनी आँखें सदा के लिए बन्द करने वाला था और मैं इस घटना का इच्छुक था ताकि कुछ किये बिना जिन्दगी बसर कर सकूँ।"

उसने कुछ शब्दों में अपनी कहानी कुछ इस तरह वर्णन की थी कि उसका सारा मतलब स्पष्ट हो गया था। वह आसानी से प्राप्त होने

वाली खुशियों की खोज में था। उसका मजबूत शरीर उससे मांग कर रहा था कि वह सदा बेकार रहे। वह बेफिक्री के साथ सोना, अच्छा खाना और अपनी इच्छाओं को अच्छी तरह पूर्ण होते हुए देखना चाहता था। बस दो चीजों पर वह झुँझलाता था। एक तो जिन्दगी में औरतें उसे बहुत कम प्राप्त हुई थीं और दूसरे उसने कभी बातचीत करते हुए खाना नहीं खाया था।

कमीलस ने बड़े गौर से उसकी बातें सुनीं और बार-बार बेवकूफी की। कमीलस के बीमार शरीर ने कभी किसी के लिये जोशीले शब्द नहीं निकाले और वह अपने मित्र के बनाये हुए स्टूडिओ की जिन्दगी के स्वप्न देखने लगा था। वह उन औरतों के बारे में विचार करने लगा जो अपने शरीर की प्रदर्शनी करती हैं। उसने लारां से सवाल किया। "अच्छा तो औरतें तुम्हारे सामने कपड़े उतार देती थीं ?"

"बिल्कुल" लारां ने थरेसा की तरफ मुड़ कर मुस्कराते हुए कहा।

"पहली बार तुम्हें बड़ी हैरानी हुई होगी ? अगर मै होता तो घबरा जाता।"

लाराँ ने जवाब दिये बिना अपनी हथेलियों की तरफ देखना शुरू कर दिया। उसके गाल तमतमा गये थे और उसकी अँगुलियाँ अकड़ गई थीं।

"नहीं मुझे तो यह बात बिल्कुल बनावटी मालूम हुई। बड़ी मजेदार चीज है लेकिन एक पाई की आमदनी नहीं होती। एक बार एक ऐसी मौडल लड़की मेरे स्टूडिओ में आई, जिसके बाल बड़े प्यारे और लाल थे। साफ सुथरी खाल थी। गठा हुआ शरीर था। छातियाँ बहुत ही शानदार थीं और कूल्हे तो इतने चौड़े थे........."

लारां ने अपना सिर उठाया और थरेसा को अपने सामने भौंचक्का पाया। वह जैसे अपने आप में सैंकड़ों बल खा गई थी। और वह बड़े गौरव के साथ उसकी बातें सुनती रही थी। लारां ने उसके बाद कमीलस

की तरफ देखा और उसने एक इशारे के साथ अपना वाक्य खतम कर दिया। खाना मेज पर परोस दिया गया तो लारन्ट ने कमीलस से कहा—

"मैं तुम्हारा चित्र बनाऊँगा।" यह विचार मादाम रेकुन को बहुत पसंद आया। थरेसा चुप रही।

"अभी गर्मियों का मौसम है। हम दफ्तर से क्योंकि चार बजे आ जाते हैं इसलिए मैं यहाँ सीधा आ सकता हूँ और दो घन्टे तक काम कर सकता हूँ। तुम्हारा चित्र एक सप्ताह में खतम हो जायेगा।"

"बिल्कुल ठीक है।" कमीलस ने जवाब दिया।

"तुम रात का खाना हमारे यहाँ खाया करना। मैं अपने बाल घुंघराले बनवा लूँगा और छोटा कोट पहन लिया करूँगा।"

घड़ी ने आठ बजाये। ग्रीयूट और मैचाड दाखिल हुए। आलवर और उसकी पत्नी सोजपन भी उनके बाद फौरन आ पहुँचे।

कमीलस ने अपने मित्र का उनसे परिचय कराया। ग्रीयूट ने नाक-भौं चढ़ाई। वह लाराँ को घृणा की नजर से देखता था क्योंकि लारां का वेतन बड़ी तेजी के साथ बढ़ गया था और फिर उसको यह शिकायत थी कि इस परिवार में एक और मेहमान व्यर्थ में बढ़ा लिया गया। रेकुन परिवार के मेहमान एक नवागन्तुक के स्वागत में निर्दयता को प्रकट किये बिना कैसे रह सकते थे।

लारां इस निर्दयता पर बिल्कुल नाराज नहीं हुआ। वह सच्ची हालत को पहचानता था। उसने स्वयं को वहाँ प्रिय बनाने की कोशिश की। ऐसी कहानियाँ सुनाईं कि ग्रीयूट भी उसका मित्र बन गया।

इस शाम को थरेसा ने नीचे जाने की कोशिश न की। वह अपनी कुर्सी में ११ बजे तक धँसी रही।

आज उसने खूब बातें भी कीं और लारां की आँखों से अपनी आँखें चुराती रही। नौजवान लारां की आवाज, ऊँचा कहकहा और

उसके शरीर से निकलती हुई तेज सुगन्ध नौजवान औरत को बेचैन कर रही थी।

उस दिन के बाद से लारां हर शाम को रेकुन परिवार के यहाँ आता। वह रियूनेट विकर में रहता था। उसका छोटा सा कमरा था और वह उसका १८ फ्रांक मासिक किराया देता था। लारां अपने कमरे में रात गये लौटा। कमीलस से मिलने से पहले उसके पास एक फूटी कौड़ी नहीं थी।

दुपान्टनियूफ गली में दुकान उसकी आश्रम-गृह बन गई। इस दुकान में उसे प्रेम और ममता पूर्ण बातचीत करने का अवसर मिला। अब उसकी कुछ रकम बच जाती और वह मादाम रेकुन की बहुत अच्छी चाय पीता। वह इस दुकान में दस बजे तक रहता और उस समय तक वहाँ से नहीं जाता जब तक कि कमीलस को दुकान बन्द करने में सहायता न दे लेता।

एक शाम को वह अपनी ब्रुशें और रंगों के बक्स उठा लाया। दूसरे दिन उसे कमीलस का चित्र बनाना था। कैनवस खरीद ली गई और चित्र के बनाने की तैयारियाँ पूरी करली गई। आखिरकार चित्रकार ने कमीलस का चित्र बनाना शुरू कर दिया। यह चित्र नौजवान जोड़े के सोने के कमरे में बनने लगा। क्योंकि चित्रकार का विचार था कि सोने के कमरों की रोशनी चित्र के लिए बहुत ठीक थी।

तीन शामों में उसने केवल कमीलस के सिर का खाका खींचा, वह कैनवस पर बड़ी सावधानी के साथ चार कल की लकीरें खींचता। उसके चित्र में किसी किसी स्थान का अनुमान कठोर और सख्त था। पुराने निपुण चित्रकारों का सा। चौथी शाम को उसने कुछ रंग लगाया। उस ने कैनवस पर बहुत से धब्बे फैला दिये।

हर स्थान के बाद मादाम रेकुन और कमीलस के मुँह से वाह! वाह निकलती मगर लारां ने कहा कि उन्हें अभी कुछ और इन्तजार करना चाहिये। फिर कहीं जाकर एक रूपता पैदा होगी। जब चित्रकारी शुरू हुई तो थरेसा हमेशा सोने के कमरे में रहती। यह सोने का कमरा स्टुडियो बन गया था और वह लारन्ट को चित्र बनाता हुआ देखती रहती थी। वह पहले से अधिक पीली पड़ गई। खामोश और गम्भीर हो गई।

हर रात को अपने कमरे की तरफ लौटते समय लारां सोचता और अपने आपसे बातें करता कि उसे थरेसा को अपनी प्रियतमा बनाना चाहिये कि नहीं।

"यह नन्हीं सी औरत" वह अपने आप से "कहता एक दिन मेरी दासी होगी। वह हर समय मेरी पीठ पर हाजिर रहती है। हर समय मुझे देखती रहती है। अपनी नजरों से मुझे तोलती रहती और जब मैं घूम कर देखता हूँ तो वह झक-झक करती है। इसमें जरा भी शक नहीं है कि उसे एक चाहनेवाले की जरूरत है। यह इच्छा उसकी आँखों में नजर आती है।"

वह एक पल के लिए रुक गया और बहते हुए सीन नदी का दृश्य देखने लगा। "पहला अवसर मिलते ही मैं उसे भींच कर चूम लूँगा। मैं शर्त लगाता हूँ कि वह मेरे दामन में आकर गिरेगी।" लारां अपने आपसे बातें कर रहा था। उसने फिर चलना शुरू कर दिया। अब उसने सोचा "थरेसा कुरूप है। उसकी नाक लम्बी है, मुँह बहुत बड़ा है।

इसके इलावा मैं उससे प्रेम नहीं करता। कहीं कोई मुसीबत ही न आये—
"खैर सोच लो।"

लारां बड़ा चिन्तित था। वह हफ्ता भर सोचता रहा। उसने अपने रास्ते में आने वाली तमाम कठिनाइयों का अन्दाजा लगाया। फिर उसने यह फैसला किया कि वह उस समय खतरा मोल लेगा जब वह इस बात को साबित कर लेगा कि ऐसा करना उसके हक में लाभदायक होगा।

थरेसा इसके लिए कुरूप थी और वह इससे प्रेम भी नहीं करता था। लेकिन वह इसकी जेब पर भार भी तो नहीं होगी। वह जिन औरतों को पैसा देकर खरीदता था वह भी इतनी ही कुरूप होती थीं। बचत के ख्याल से उसने इरादे को पक्का कर लिया कि वह अपने मित्र की पत्नी को अपनी दासी बना लेगा। इस इरादे के बाद उसको विश्वास हो गया और अवसर की इन्तजार में रहने लगा।

उसने नया फैसला किया कि अवसर पर ही वह हिम्मत से काम लेगा। उसे भविष्य के सौन्दर्य की परछाईं दिखाई देने लगीं जब पूरा रेकुन परिवार उसके आराम के लिए उत्साह जनक होगा।

कमीलस का चित्र लगभग पूरा हो चुका था और अभी तक लारां को अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। अन्त में वह दिन भी आ गया जब उसे यह कहना था कि चित्र पूरा हो चुका है। उसने एक शाम को रेकुन परिवार को यह सूचना दी कि चित्र कल पूरा हो जायेगा।

मादाम रेकुन ने कहा—"हम चित्र के उदघाटन का उत्सव मनायेंगे और चित्रकार की सेहत का जाम पियेंगे।"

दूसरे दिन लारैन्ट ने कैनवस पर रंग का आखरी ब्रुश भी फेर दिया और पूरा परिवार यह कहने के लिए चित्र के आगे जमा हो गया कि चित्र कमीलस से बिल्कुल मिलता जुलता है। चित्र बड़ा गंदा था। हर तरफ किरमजी रंग के मोटे धब्बे लगे हुए थे। लारां चमकदार रंगों को भी गदला बनाये बिना इस्तेमाल नहीं कर सकता था। अपने

स्वभाव के अनुसार उसने चित्र के चेहरे के पीलेपन को बहुत अधिक स्पष्ट कर दिया था। और कमीलस का चेहरे का चेहरा मिला हुआ हरे रंग का मालूम हो रहा था। जैसे दुम्बे के बाद आदमी का हो जाता है। खुरदरी नक्शा-कशी ने एकरूपता को और अधिक उभार दिया था। कमीलस बहुत खुश था। उसने कहाकि "मैं इस चित्र में प्रसिद्ध आदमी दिखाई देता हूँ।"

अपने रूप की खूब प्रशंसा कर चुकने के बाद घोषणा की कि वह सम्पेन की दो बोतलें लाने के लिये जा रहा है। मादाम रेकुन दूकान में लौट आई। चित्रकार थरेसा के साथ अकेला रह गया।

नौजवान स्त्री वहीं बैठी रही जहाँ वह बैठी हुई थी। वह जमीन की तरफ देख रही थी। वह बड़ी बेचैनी के साथ किसी बात की इच्छुक थी। लारां एक पल के लिये झिझका। उसने चित्र की तरफ देखा और अपने ब्रुशों से खेलता रहा। अधिक समय नहीं था। कमी-लस किसी क्षण वापिस आ सकता था। शायद ऐसा अवसर फिर कभी हाथ न आये। एकदम चित्रकार घूमा और अब वह थरेसा के सामने था। कुछ सैकंडों के लिए उन दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा। और फिर एकदम फुर्ती के साथ लारां झुका और नौजवान स्त्री को अपनी छाती से लिपटा लिया। थरेसा का सिर पीछे की तरफ गिर गया और उसने उसके होठों को अपने होठों से कुचल दिया। वह कुछ देर तक अपने आपको छुड़ाने के लिये संघर्ष करती रही, लेकिन अंत में हारकर उसने स्वयं को लारां के अर्पण कर दिया।

◉

७

शुरू ही से दोनों चाहने वालों ने अनुभव किया कि इन प्रेमियों का मिलन जरूरी था। यही भाग्य में लिखा था। स्वाभाविक था। पहली बार जब दोनों आपस में मिले तो उन्होंने एक-दूसरे के साथ निस्संकोच होकर बातें कीं। घबराहट के बिना उन्होंने एक-दूसरे का चुम्बन लिया, जैसे उनमें वर्षों से गहरी घनिष्टता चली आ रही हो। उनको अपने नये सम्बन्ध पर विश्वास था। उन्होंने आपस में फैसला किया कि उन्हें आपस में कैसे मिलना चाहिए। थरेसा घर के बाहर कदम नहीं रख सकती थी। उन्होंने फैसला किया कि लारां को थरेसा के घर आना चाहिये। साफ आवाज में नौजवान औरत ने लारां को बताया कि उसने क्या उपाय सोचा है। वह थरेसा के पति के कमरे में मिलेंगे। उसका चाहने वाला ड्योढ़ी में से होता हुआ दरवाजे तक आयेगा और थरेसा सीढ़ी वाला दरवाजा खोल दिया करेगी। कमीलस दफ्तर में होगा और मादाम रेकुन दुकान में। इसमें क्योंकि बड़ी हिम्मत की जरूरत थी इसलिये इस युक्ति की निश्चय ही सफलता थी।

लारां मान गया। अपनी तमाम युक्तियों के बावजूद उसमें पाशविक हौसला भी था। वह बड़े बाजुओं वाला निडर मनुष्य था। उसकी परिस्थिति का शान्ति-पूर्ण व्यवहार उससे आग्रह कर रहा था कि वह इस भावना से आनन्दमय हो जिसकी इतने हौसले के साथ पेशकश की जा रही है। उसने एक बहाना बनाया और अपने दफ्तर के उच्च

अफसर को इस बात पर सहमत कर लिया कि वह दफ्तर के बन्द होने के समय से दो घंटे पहले उसे छुट्टी दे दें। छुट्टी मिलते ही डपान्टनियूफ गली की तरफ तेज़-तेज़ कदम उठाता हुआ चल दिया।

गली में घुसते ही उसकी भावनाएँ चिन्ताग्रस्त हो गईं। वह औरत जो नकली गहने बेचती थी ड्योढ़ी के ठीक सिरे पर बैठी हुई थी। उसको इस बात का इन्तजार करना पड़ा कि वह कब अपने धंधे में लगती है और यह कब ड्योढी के अंधेरे में गुम होता है। एक लड़की ताँबे की अंगूठी या कानों की बालियाँ खरीदने के लिये आई। उस लड़की के आते ही वह ड्योढ़ी में दाखिल हो गया और सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। नमी से चिकनी दीवारों के साथ घिसटता हुआ वह ऊपर पहुँचा। पत्थर की सीढ़ियों पर उसके पैर बजने लगे। हर आवाज पर उसे अपने कलेजे में छुरी चलती हुई मालूम होती। इतने में दरवाजा खुला और दहलीज में थरेसा खड़ी दिखाई दी। उसने पेटीकोट और सोने का लम्बा कोट पहन रक्खा था। वह दरवाजा बन्द करते ही उस की गर्दन में लटक गई। उसके शरीर से सुगन्ध आ रही थी। ताजा नहाए हुए शरीर और धोबी के धुले हुए कपड़ों की सुगन्ध।

लारां आश्चर्य में डूब गया। आज उसे अपनी प्रेमिका बहुत ही सुन्दर मालूम हुई। यह औरत जो उसके सामने खड़ी थी लारां ने उसे पहले कभी नहीं देखा था। छोटे शरीर की मजबूत औरत थरेसा अपना सिर पीछे की तरफ डाल कर उससे आलिंगित हो गई। यह चेहरा प्रेम में लीन औरत का चेहरा था। उसके होठों पर नमी थी। उसकी आँखों में चमक थी। यह औरत अनुपम सौंदर्य के साथ मनोरंजक हो गई थी। यह ऐसा सौंदर्य था जो बिल्कुल एक प्रेममय होता है। उसका चेहरा दिल की रोशनी से चमकीला हो गया था। उसका अशान्त शरीर जल रहा था। वह कमीलस के बीमार बाजुओं से लारां के स्वस्थ बाजुओं में चली गई थी।

लारां ने ऐसी औरत पहले कभी नहीं देखी थी। आम तौर से उस के दामन में आने वाली औरतों ने उसका इस तरह कभी स्वागत नहीं किया था। वह ठंडी और बुझी हुई भावनाओं से संघर्ष करता रहा था।

दूसरे दिन जब उसकी बुद्धि का स्तर अपनी असली हालत पर आ गया तो उसने सोचा कि क्या वह ऐसी औरत को रोक सकेगा जिसके चुम्बन से उसके खून में संचार हो जाता है। पहले पहल उसनें फैसला किया था कि वह थरेसा से अब मिलने नहीं जाया करेगा। लेकिन बाद में वह कमजोर हो गया। उसने थरेसा को उसकी बहुत सख्त गर्मी और उसकी प्रिय और प्रेममय समर्पण के साथ भूलने की कोशिश की लेकिन दूसरे ही क्षण उसको फिर याद आने लगती। उसने हथियार डाल दिये।

एक दिन दूसरी मुलाकात का इन्तजार किया गया, उस दिन के बाद से थरेसा उसकी जिन्दगी का एक हिस्सा बन गई। वह कभी सोचता, कभी भयभीत हो जाता। यह मुलाकात उसे कई प्रकार के झटके देती लेकिन उसका डर और उसकी इच्छा के आगे बेबस हो जाती।

थरेसा की समझ में न कोई डर था न शक। वह खुद को बड़े निस्संकोच हो कर उसको अर्पण कर देती। वह सीधी उस तरफ जाती जिस तरफ उसकी भावनाएं उसे ले जातीं। कभी-कभी वह लारां की गर्दन में बाहें डाल देती। उसके मुँह पर सिर रख देती और हाँफती हुई आवाज में कहती, "काश तुम्हें मालूम होता कि मैंने कितना दुःख उठाया है, मैं एक बीमार के नमदार कमरे में पली हूँ। रात को इसके बीमार शरीर से उठती हुई दुर्गन्ध से नाक में दम हो जाता और वह रात जाग कर काटती। अपनी फूफी को खुश करने के लिए वह हर दवा पी लेती जो कमीलस के लिए आती।"

वह सिसकियाँ भर कर रोने लगी लेकिन बड़ी गर्म जोशी के साथ

उसने अपने कथन को जारी रखा—"मैं उनका बुरा नहीं चाहती। उन्होंने मुझको पाल-पोस कर बड़ा किया है लेकिन मैं अत्यन्त घुटन-घुटन में जिन्दगी बसर करती रही हूँ। अभी जब मैं नन्हीं सी बच्ची थी तो बाहर सड़क पर धूल में नंगे पांवों फिरना चाहती थी। मुझे बताया गया कि अफ्रीका के किसी कबीला के सरदार की बेटी मेरी मां थी और मुझे भी कभी कभी यही मालूम होता था। मेरा खून और मेरा सम्मान इस बात की गवाही देता था।" थरेसा जोर-जोर से सांस लेने लगी। और उसने अपने चाहने वाले के गिर्द अपने बाजुओं को पकड़ कर और भी तंग कर दिया। वह इन शब्दों में जैसे अपना बदला ले रही थी। उसने आगे चलकर कहा—"शायद तुम्हें विश्वास न हो उन्होंने मुझे झूठा और धूर्त बनायाउन्होंने अपनी तीव्र मधुर वाणी से मेरा गला घोंट दिया। मैंने अपने चेहरे पर पर्दा डाल लिया और उनकी तरह बेखौफ जिन्दगी बसर करने लगी। मै प्राय: अपनी आहों को दबाने की खातिर तकिया में अपने दांत गाड़ देती। दो बार मैंने भागने की कोशिश की। मैं कमीलस से शादी करना नहीं चाहती थी और जब घर में इस शादी का इरादा किया गया तो मैं इसका विरोध न कर सकी। कमीलस को देखकर सहानुभूति की भावना जागृत होती थी और फिर मुझे अपने पति में वही बीमार लड़का नजर आया जिसके साथ मैं बचपन में एक ही बिस्तर में सोया करती थी। मुझमें अनिच्छा और बेचैनी ने अपना फन उठाया। मुझे वह दवायें याद आईं जो मुझे जबरदस्ती पीनी पड़ीं थी।"

थरेसा उठकर बैठ गई और उसने लारां के चौड़े कंधों और मजबूत गर्दन की तरफ देखा। "और तुम ! मुझे तुमसे प्रेम है। उसी रोज से प्रेम है। जब कमीलस तुम्हें पहली बार अपने साथ लाया था। तुम शायद मुझे घृणा की दृष्टि से देखते हो क्योंकि मैंने फौरन ही खुद को

तुम्हारे अर्पण कर दिया था......मेरी समझ में नहीं आता कि मैं तुमसे क्यों प्रेम करने लगी। तुम्हें देखते ही मेरा अंग-अंग अंगड़ाई लेने लगता था। इसलिए मैं तुमसे घृणा करती थी। फिर भी मैं तुम्हारा इन्तजार करती। तुम आते तो पहरों तुम्हारी कुर्सी के पीछे बैठी रहती और तुम्हें देखती रहती। मैं तुम्हारे इर्द-गिर्द मंडलाती हुई हवा में सांस लेती तो मुझे अपार खुशी होती। मुझे ऐसा मालूम होता जैसे मैं तुमसे चुम्बनों की भीख मांग रही हूँ।" इसके बाद थरेसा चुप हो गई। वह काँप रही थी। वह उस समय घमंड में थी जैसे उसने अपना बदला ले लिया हो।

हर नई मुलाकात एक नया प्रेमरूप लेकर आती। औरत अपनी बेशर्मी और अपनी बेवकूफी से खुश होती। उसके दिल में जरा भी डर और जरा भी झिझक नहीं थी। जब उसका चाहने वाला आता तो वह केवल इतनी सावधान हो जाती कि अपनी फूफी से कहती कि वह आराम करने के लिए ऊपर जा रही है और जब उसका चाहने वाला पहुँच जाता तो वह बढ़ कर बातें करती। कमरे में चक्कर लगाती उसकी हर हरकत आजाद होतीं और वह इस बात की भी परवाह न करती कि वह ऊंची आवाज से बोल रही है। शुरू-शुरू में लारां बहुत भयभीत हुआ।

"ईश्वर के लिए इतने जोर से तो न बोलो।" उसने भविष्य वाणी की। "मादाम रेकुन ऊपर आ जायेगी।"

"क्या बेवकूफी की बातें करते हो।" उसने हँसते हुए कहा—"तुम हमेशा डरते रहते हो वह तो काउन्टर के पीछे कील के साथ गड़ी हुई है। तुम यह क्यों सोचते हो कि वह ऊपर आ जायेगी। और वह अगर आना चाहती है तो आ जायें। तुम छुप सकते हो। मैं तुमसे प्रेम करती हूँ और मुझे मादाम रेकुन से कोई डर नहीं है।"

लारां को उस पर विश्वास दिला देने पर भी यकीन न होता।

आखिरकार इस रोज के स्वभाव ने उसे भी निडर बना दिया। यह मुलाकातें दिन-दहाड़े कमीलस के कमरे में होती रहीं जो मादाम रेकुन के कमरे से दो ही कदम पर था। एक दिन मादाम रेकुन ऊपर ही आ गई। यह डर था कि उसकी भतीजी बीमार है। नौजवान औरत ऊपर की मंजिल में पूरे तीन घन्टे से थी। थरेसा यहाँ तक दिलेर हो जाती थी कि वह अपने दरवाजे की अन्दर से कुंडी भी नहीं चढ़ाती थी।

जब लारां ने बूढ़ी औरत के कदमों की आहट सुनी तो उसके होश-हवाश गुम हो गए और अपनी बनियान और टोपी की तरफ लपका। थरेसा हँसने लगी। उसने लारां को दाएँ बाजू से पकड़ लिया और पलंग के पास ही उसे बिठा दिया। उसने दृढ़ता से कहा—"यहीं बैठे रहो।"

उसके ऊपर उसने तमाम मर्दाना कपड़े एक जगह फेंक दिये और उन कपड़ों पर अपना सफेद पेटीकोट उतार कर डाल दिया। उसने यह सब कुछ तसल्ली के साथ किया। वह बाल उलझाये और बिल्कुल नंगी हालत में पलंग पर पड़ गई। मादाम रेकुन ने बड़े धीरे के साथ दरवाजा खोला और पलंग के पास आ गई। थरेसा ने नींद का बहाना किया। लारन्ट सफेद पेटी कोट से ढका हुआ पसीने से लथपथ था।

मादाम रेकुन ने पूछा—"थरेसा ! मेरी बच्ची क्या तू बीमार है ?"

थरेसा ने अपनी आंखें खोलीं, जम्हाई ली और करवट बदली और जवाब दिया कि उसके सिर में दर्द हो रहा है। उसने अपनी फूफी से प्रार्थना की कि वह उसे सोने दे। बूढ़ी औरत बिना शोर किये बड़े धीरे के साथ उल्टे पाँव लौट गई।

दबी-दबी हंसी हंसते हुए दोनों चाहने वालों ने एक दूसरे का जोर जोर से चुम्बन लिया।

"देखो तुमने।" थरेसा ने बड़ी विजयी स्वर के साथ कहा—"हमें

बात का डर नहीं। वह सब अंधे हैं।"

दूसरे दिन थरेसा को एक विचित्र विचार आया। बड़ी बिल्ली कुर्सी में बैठी इन दोनों की तरफ़ देख रही थी। थरेसा ने कहा—"बिल्ली की तरफ देखो जैसे वह सब कुछ समझ रही हो और कमीलस को बताने का इरादा कर रही हो। कितनी विचित्र बात होगी अगर यह बिल्ली बोलना शुरू करदे।"

यह विचार कि बिल्ली बोलने लगेगी, थरेसा को बहुत पसन्द आया। लारां ने बिल्ली की तरफ देखा और उसको अपने शरीर में कम्पन सी मालूम हुई।

थरेसा बच्चों की तरह हरकतें कर रही थी। लारां के रगों में जैसे खून जम गया था। उसने सोचा था कि थरेसा का मजाक बहुत बेहूदा है। वह उठा और उसने बिल्ली को कमरे से बाहर निकाल दिया। वह सचमुच डर रहा था। उसकी प्रेमिका अभी पूरी तरह से अपने काबू में नहीं ला सकी थी। लारां की दिल की गहराइयों में अभी तक बेचैनी मौजूद थी जो उसने थरेसा के पहले चुम्बनों के समय अनुभव किया था।

◉

८

मादाम रेकुन की दुकान में शाम गुज़ार कर लारां बहुत खुश था। वह दफ्तर से कमीलस के साथ आता था। मादाम रेकुन उसे भी अपना बेटा समझने लगी थी। मादाम रेकुन जानती थी कि लारां गरीबी है। सस्ता खाना खाता है। सस्ते कमरे में रहता है। मादाम रेकुन को इस

नौजवान से बहुत प्रेम था क्योंकि वह बहुत अच्छी बातें किया करता था और खूब बोलता था और फिर वह उसके शहर का रहने वाला था। वह आता तो मादाम रेकुन को गुजरे समय की बहुत सी बातें उभरने लगती। लारां ने उसके मेहमान-नवाजी का बड़ी आजादी के साथ लाभ उठाया। दफ्तर से लौटते वक्त वह कमीलस के साथ हो लेता। इस तरह वे दोनों रास्ते में उकताते भी नहीं और चलते चलते बातें भी करते रहते। लारां दुकान का दरवाजा खोलता। कुर्सियों को ढंग से रखता जैसे वही दुकान का मालिक हो। सिगरेट बहुत पीता। जहाँ चाहता थूक देता जैसे यह घर उसका अपना घर हो।

थरेसा की मौजूदगी उसे बिल्कुल परेशान न करती। वह थरेसा के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करता और मजाक करता और उससे बातें करते हुए उसके चेहरे पर जरा भी परिवर्तन न आता। कमीलस भी इन बातों को पसन्द करता। एक दिन तो उसने थरेसा से यह भी कहा कि वह लारां से कठोर व्यवहार करती है।

लारां ने ठीक भविष्यवाणी की थी कि वह कमीलस का दोस्त था। कमीलस की पत्नी का चाहने वाला था और बुढ़िया का बेटा था। रेकुन परिवार उसके लिये बहुत खुशियें पेश कर रहा था। वह सब से निसंकोच होकर बातें करता था। दुकान में उसकी प्रेमिका एक ऐसी औरत थी जिसे वह छोड़ना नहीं चाहता था और जो कोई अस्तित्व नहीं रखती थी।

इसके उलट थरेसा अधिक भावुक थी। उसे व्यर्थ में अभिनय करना पड़ता था। और वह अपने पार्ट को बड़ी अच्छी तरह से किया करती थी। उसके पालन-पोषण ने उसे कपटता सिखादी। १५ वर्ष से वह झूठ बोल रही थी और वह दुरंगी जिन्दगी बसर कर रही थी। अपनी भावनाओं का गला घोंट रही थी। वह जान बूझकर निडर नजर आने की कोशिश करती रही थी। इसलिये लारां जब आया तो उसने उस औरत

को मुर्दा और कुरूप पाया। इसे कमीलस और मादाम रेकुन को धोखा देने में मजा आता। लारां की तरह वह केवल इच्छाओं को पूरा करने के विचार में ही नहीं डूबी थी। वह जानती थी कि वह क्या गलती कर रही है। ऐसे क्षण भी आते जब वह उठकर लारां से आलिंगन करना चाहती। अपने पति और अपनी फूफी को यह दिखाने के लिये कि वह बेवकूफ नहीं है वह एक स्वस्थ आदमी से प्रेम करती है।

कभी ऐसा होता कि खुशी की लहरें रगों में दौड़ने लगतीं क्योंकि वह एक बहुत अच्छी अभिनेत्री थी। इसलिये अपने प्यार की अनुपस्थिति में वह गाने भी लगती। इस समय उसे इस बात का डर नहीं था। कि उसका भेद खुल जायेगा। कभी-कभी यह अनोखी बात मादाम रेकुन को बहुत अच्छी मालूम होती क्योंकि वह कई बार थरेसा पर दोष लगा चुकी थी कि वह बहुत गम्भीर है। थरेसा ने फूलों के गमले खरीदे और उन्हें खिड़की के नीचे रख दिया। उसने नये पर्दे सिलवाये। वह कालीन भी खरीदना चाहती थी और सारी सजावटें लारां के लिये थीं।

ऐसा मालूम होता कि कुदरत और परिस्थिति ने उस औरत को लारां ही के लिये बनाया था। वह एक दूसरे की पूर्णता थे और एक दूसरे की रक्षा करते थे। शाम को लैम्प की रोशनी में जब वह एक दूसरे के सामने होते तो उनके चेहरे से उनकी एकता की शक्ति चमक उठती।

जब कभी अचानक कमीलस और मादाम रेकुन नीचे चले जाते तो थरेसा अपनी कुर्सी से उठकर लारां से लिपट जाती और वह इस तरह हांफते-हांफते एक दूसरे से उस समय तक आलिंगन करते जब तक कि सीढ़ियों पर कदमों की आवाज न सुनाई देने लगती थरेसा के चेहरे पर जो ताजगी पैदा हो जाती वह कमीलस और मादाम रेकुन के आने पर फौरन उसी गम्भीरता और चिन्ता में बदल जाती। वह खुश होती कि किस तरह इन नेक लोगों को धोखा दे रही है।

शुक्रवार की शाम को लारां बहुत बेजारी अनुभव करता। उसे ग्रीयूट और बुढ़े मैंवाड़ की फीकी बातें सुननी पड़तीं। गैंचाड कतल और चोरों के बारे में कई बार सुनाई हुई कहानियाँ फिर से सुनाता। और ग्रीयूट नौकरों की, मालिकों की और अपने दफ्तर की बातें करता। थरेसा शुक्रवार की शाम ही को लारां के साथ मुलाकात का दिन नियुक्त करती। जब कमीलस और मादाम रेकुन दरवाजे तक अपने मेहमानों को छोड़ने के लिये जाते तो वह उठती और चुपके-चुपके कानों में लारां संदेशा देती। कभी-कभी उसका हाथ दबा देती।

आठ महीने तक थरेसा और लारां ने खूब खुशी से जिन्दगी गुजारी। थरेसा कुछ नहीं माँगती थी। लारां को बिल्कुल यह डर नही था कि उसकी धोखे वाली जिन्दगी एक दम खतम हो जायेगी।

९
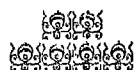
एक दिन को जब लारां दफ्तर से उठने ही वाला था और थरेसा से मिलने की खातिर जल्दी में था। दफ्तर के बड़े क्लर्क ने उसे बुलाया और उससे कहा कि अब वह समय से पहले दफ्तर से नहीं उठ सकता, क्योंकि वह छुट्टियाँ ले चुका है और अब कम्पनी ने फैसला किया है कि अगर वह अपने काम पर से आगे से गैर-हाजिर रहा तो उसे नौकरी से जवाब मिल जायेगा।

अपनी कुर्सी में धंसा हुआ वह शाम तक बेचैन रहा। उसे अपनी रोजी पैदा करनी थी। इसलिये वह नौकरी नहीं छोड़ सकता था। शाम

को थरेसा का चेहरा लाल भभका हो रहा था। उसे बहुत रंज हुआ। वह बता न सकी कि आज उससे क्या बीती है। जिस समय कमीलस दुकान बन्द कर रहा था वह तेजी के साथ थरेसा के पास पहुँचा और बोला—"अब हम एक दूसरे से नहीं मिल सकेंगे। मेरे मालिक ने मुझे अब छुट्टी देना बन्द कर दिया है।"

कमीलस दुकान बन्द करके लौट आया। इसलिये लाराँ विस्तार-पूर्वक सारी बात न बता सका। और वह थरेसा को संक्षिप्त सी सूचना द्वारा आश्चर्य में डुबा कर छोड़ गया। उस रात थरेसा को नींद न आई और भविष्य की मुलाकातों के बारे में बहुत सी युक्तियाँ सोचता रहा।

शुक्रवार को वह लारां से केवल एक मिनट के लिए बात कर सकी। उनकी चिंता इस बात से और भी बढ़ गई कि आज आगे की मुलाकात हो तो कहाँ हो। मुलाकात के बिना दो हफ्ते गुजर गये। अब उसे अनुभव हुआ कि थरेसा उसके लिए कितनी बड़ी जरूरत बन चुकी है। थरेसा के साथ उसकी मुलाकातों ने सख्त किस्म की भूख पैदा कर दी थी। जुदाई से उसकी इच्छायें तीव्र हो गई थीं। अगर एक साल पहले उससे यह कहा जाता कि वह औरत का गुलाम हो गया है तो वह जोर से हँस पड़ा होता। अब उसमें इतनी हिम्मत भी नहीं थी कि वह विना नागा कूचा डिपान्ट नीयूफ में जा सके। उसे शक था कि वह कोई मूर्खता-पूर्ण हरकत न कर बैठे। उसे इस बात का यकीन हो चुका था। कि अगर उसे जिन्दा रहना है तो उसे थरेसा की सख्त जरूरत है। जैसे जिन्दा रहने के लिए खुराक और पानी जरूरी होता है।

वह सचमच कोई बखेड़ा खड़ा कर देता अगर उसे थरेसा का पत्र न मिलता, जिसमें उसने लिखा था कि वह अगले रोज उससे मिलने के लिए आ रही है। थरेसा ने लिखा था कि वह कल रात को ८ बजे उससे मिलने आयेगी।

दूसरे दिन जब वह दफ्तर से उठा तो उसने कमीलस से यह कह

कर दामन छुड़ा लिया कि वह बहुत थक चुका है और सीधा घर जा रहा है। थरेसा रात के खाने के बाद उठी और उसने भी अपना पार्ट अदा किया। उसने एक ग्राहक का जिक्र किया जो अपनी रकम अदा किये बिना दूसरे मुहल्ले में चला गया था। उसने कहा कि वह उससे रुपया वसूल करके लायेगी। और वह ग्राहक शहर के पेठी गोलोज जिला में रहता था। मादाम रेकुन और कमीलस ने इस लम्बे रास्ते का ख्याल किया मगर रुपये की वसूली का ख्याल बुरा नहीं था। थरेसा को घर से बाहर जाने की इजाजत मिल गई।

थरेसा पटरी पर फिसलती, राहगीरों से टकराती और तेज कदम उठाती हुई जामो मुलाकात की तरफ लपकती रही। उसके चेहरे पर पसीने की बूँदें झलमलाने लगीं। उसकी हथेली में से आग सी निकलने लगी। ऐसा मालूम होता था जैसे उसने पी रखी हो। वह सीढ़ियों पर खट खट करती हुई चढ़ गई। लारां सातवीं मंजिल पर रहता था। और उसने लारां को जंगले पर झुका हुआ पाया वह इसका इन्तजार कर रहा था।

वह कमरे में दाखिल हुई। कमरा बहुत ही छोटा था और वह इस में बड़ी मुश्किल से मुड़ सकती थी। उसने अपनी टोपी उतार कर दूर फेंक दी और बेहोशी की अवस्था में पलंग का सिरहाना पकड़ कर खड़ी हो गई। जलते हुए बिस्तर पर चाँदनी ठंडक की वर्षा कर रही थी। प्रेमी और प्रेमिका दोनों वहाँ देर तक रहे। अचानक थरेसा ने क्लाक को दस बजाते सुना। वह घबराहट की अवस्था में उठी और उसने कमरे में नज़र दौड़ाई जैसे उसने पहले देखा ही नहीं था।

"मुझे जाना चाहिये।"

लारां उसके पास आ कर उस पर झुक गया था।

"ईश्वर रक्षा करे" उसने बिना हरकत के कहा।

"ईश्वर रक्षा करे नहीं" वह चिल्लाया! "ईश्वर रक्षा करे का

मतलब तो फिर कभी नहीं होता।"

थरेसा ने उसकी आंखों में झाँक कर देखा।

"अच्छा जाती हूँ" वह चुप रहा।

"अच्छा मैं जाती हूँ" उसने धीरे से और नम्रता से कहा।

इस समय लारां को कमीलस का ख्याल आया।

"यह ठीक है कि कमीलस से मुझे कोई शिकायत नहीं मगर वह हमारे रास्ते का रोड़ा बन रहा है। क्या तुम उसे कहीं बाहर नहीं भेज सकतीं ?"

"बाहर भेज दूँ" थरेसा ने जवाब दिया। "तुम्हारा क्या ख्याल है कि कमीलस जैसा व्यक्ति सफर कर सकता है ? उसके लिए तो केवल एक रास्ता है जहाँ से कोई लौट कर नहीं आता। मगर वह यह सफर भी नहीं करेगा। जिन लोगों का दम हमेशा होठों पर रहता है वह कभी नहीं मरते।"

कुछ देर तक चुप्पी रही आखिरकार लारां बोला—"मैंने एक स्वप्न देखा है। मैं तुम्हारे बाजुओं पर तमाम रात सोना चाहता हूँ। और सुबह को तुम्हारे चुम्बनों से बेजार होना चाहता हूँ। मैं तुम्हारा पति बनना चाहता हूँ। कुछ समझीं ?

"हाँ ! हाँ ! मैं समझती हूँ।" थरेसा ने काँपते हुए कहा—अचानक वह लारां के चेहरे पर झपकी और उसने उसके गालों पर असंख्य चुम्बन लिये।

"ऐसी बात न कहो वरना मुझ में इतनी ताकत नहीं रहेगी कि मैं घर जा सकूँ।"

"जाओ मगर कल जरूर आना" लारां ने विनय पूर्वक कहा।

"नहीं मैं कल नहीं आ सकती। मैं कोई बहाना नहीं कर सकती, और अगर तुम चाहो तो मैं कमीलस से साफ साफ कह सकती हूँ कि मैं तुम से प्यार करती हूँ। मुझे तो सिर्फ तुम्हारा डर है वरना मैं यह

हिम्मत भी कर सकती हूँ। मैं तुम्हारी जिन्दगी में परेशानी पैदा करना नहीं चाहती। मैं तो तुम्हारी जिन्दगी को प्रसन्न बनाने की इच्छुक हूँ।"

इस समय लारां को एक युक्ति सूझी—"तुम ठीक कहती हो। हमें बच्चों की सी बातें नहीं करनी चाहियें। अगर तुम्हारा पति मर रहा होता।"

"मेरा पति मर रहा होता तो क्या होता ?"

"हम दोनों शादी कर लेते। फिर हमें किसी का डर न रहता। जिन्दगी कितनी मधुर होती।" थरेसा के होंठ पीले पड़ गये। "मगर इस बात का ख्याल रक्खो। कभी कभी लोग मर जाते हैं मगर जो लोग जिन्दा रहते हैं उनके लिये जिन्दगी नर्क बन जाती है।"

लारां ने कोई जवाब नहीं दिया।

"जिन्दगी का हर तरीका युक्ति युक्त है।" थरेसा ने कहा।

"तुमने मुझे गलत समझा है।" लारां ने शान्ति के साथ कहा—"मैं बेवकूफ नहीं हूँ। मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम शान्तिमय जिन्दगी गुजारो। मैं तो यह सोच रहा था कि दुनियां में घटनायें होती हैं। हर रोज हर कदम पर घटनायें होती हैं। कभी कभी पांव फिसल जाता है। कभी कभी छत की ईंटें सिर पर गिर पड़ती हैं। समझीं! इस हालत में किसी पर कोई दोष नहीं आता।"

उसकी आवाज़ में अनोखापन था। वह मुस्कराया। "घबराओ नहीं हम ऐश्वर्य के साथ जिन्दगी गुजारेंगे। याद रखना कि मैं तुम्हारे ऐश्वर्य के लिये सब कुछ कर रहा हूँ।"

थरेसा दरवाजे तक पहुँच चुकी थी और कमरे के बाहर निकलने वाली थी। लारां ने उसे अपने बाजुओं में थाम लिया।

"तुम मेरी हो! कसम खाओ कि तुम सिर से पाँव तक मेरी ही रहोगी।"

"हाँ ! हाँ ! मैं बचन देती हूँ कि मैं तुम्हारी हूँ और केवल तुम्हारी ......"

एक क्षण के लिये वह दोनों खामोश और डरते रहे। फिर थरेसा ने एक दम खुद को उसके दामन से छुड़ाया और वह पीछे मुड़े बिना सीढ़ियाँ उतरने लगी। लारां उसके दूर होते हुए कदमों की आवाज़ सुनता रहा। जब उन कदमों की आवाज़ सुनाई देना बन्द हो गई वह अपनी तंग व अंधेरी कोठरी में वापिस आकर पलंग पर लेट गया। बिस्तर की चादर अभी तक गरम थी। वह इस छोटे से कमरे में दम घुटता हुआ अनुभव कर रहा था जहाँ थरेसा अपने शरीर की सुगन्ध छोड़ गई थी।

सुबह तक उसके दिमाग में एक ही ख्याल घूमता रहा। थरेसा के आने से पहले उसने कमीलस को कतल करने के बारे में सोचा तक नहीं था। भावनाओं की लहर में बहा कर उसने उसकी मौत का जिक्र किया था। उस वक्त उसे यह चिन्ता थी कि वह अपनी प्रेमिका से अब फिर कभी नहीं मिल सकेगा। अपनी भावुकता में उसने कतल के बारे में भी सोचना शुरू कर दिया था।

अब रात के सन्नाटे में शान्ति होने के बाद वह कतल के बारे में युक्ति सोचने लगा। क्या कठिनाइयाँ पेश आ सकती हैं। कैसे जाल बिछाया जाये। असफल होने की कितनी आशायें हैं और कतल सफल होने के बाद उसे कितना लाभ होगा। उसके तमाम स्वार्थ उसे कतल करने को उकसा रहे थे। उसने सोचा कि उसका किसान बाप अभी मरने वाला नहीं है। शायद उसे अभी दस वर्ष तक क्लर्की करनी पड़ेगी, सस्ते रैस्टुरैंटों में खाना पड़ेगा। इसी तंग व अंधेरे कमरे में बिना औरत के रहना पड़ेगा और फिर उसने दूसरा तरीका सोचना शुरू किया। जिन्दगी कितनी आराम दायक होगी। थरेसा को मादाम रेकुन का रुपया उत्तराधिकार में मिलेगा। वह नौकरी छोड़ देगा और बेफिक्री

के साथ धूप में बेकार आवारा फिरेगा। लेकिन वह जल्दी स्वप्न दुनियाँ से वास्तविक दुनियां की तरफ लौट आया। कमीलस उस रास्ता रोके खड़ा था। उसने अपनी मुट्ठियां भींच लीं। जैसे वह कमीलस पर प्राण घातक चोट लगाने के लिए तैयार हो।

वह रात भर कतल की युक्ति सोचता रहा। उसे एक भी युक्ति सूझी। वह बेवकूफ़ नहीं था। वह जहर देना या चाकू इस्तैमाल नहीं करना चाहता था। वह तो कोई खुफिया हथियार इस्तैमाल करना चाहता था। सांप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। धीरे-धीरे नींद ने उसे आ घेरा।

थरेसा ११ बजे घर पहुँची। उसके सिर में जलन हो रही थी। उसके दिमाग की तमाम रगें तनीं हुईं थीं। वह गली डपान्ट नीयूफ में, उसे मालूम नहीं कैसे पहुँची। उसे ऐसा मालूम हो रहा था कि वह अभी तक लारां के कमरे के बाहर की सीढ़ियाँ उतर रही है और उसके कानों में लारां के शब्द अभी तक गूंज रहे थे। उसने मादाम रेकुन और कमीलस को अपना इन्तजार करते पाया। वह दोनों चिन्तित थे। उसने उनके सवालों का जवाब बड़ी नर्मी और तसल्ली के साथ दिया। उसने कहा कि उसका सफर व्यर्थ गया और उसे बस का एक घंटा तक इन्तजार करना पड़ा।

जब वह बिस्तर पर लेटी तो उसे चादर टेढ़ी और गीली मालूम हुई। घृणा के कारण उसका अंग-अंग ठिठुर रहा था। कमीलस को जल्दी नींद आ गई। थरेसा ने रक्त-हीन रूप को तकिया पर पड़ा देखा। कमीलस का मुँह खुला था। वह उससे जरा हट के लेट गई। उसका जी चाहा कि वह अपनी भींची हुई मुट्ठी उसके मुँह पर दे मारे।

◉

१०
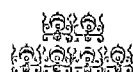
तीन हफ्ते गुजर गये। लारां जब भी दूकान में आता तो हर वक्त कुछ न कुछ सोचता रहता। वह बीमार और थका मांदा मालूम होता। उसकी आँखों के गिर्द मध्यम से नीले हल्के दाग पड़ गये थे। उसके होठों का रंग पीला पड़ गया था। उसके बावजूद उसने अपनी अनोखी बात को कायम रक्खा। कमीलस के साथ निसंकोच होकर बातें करना।

थरेसा पहले की तरह ही गम्भीर और खामोश रही। वह पहले से भी अधिक शान्त दिखाई देती थी। जैसे उसके लिए लारां का अब कोई महत्त्व न रहा हो। वह उसकी तरफ बहुत कम नजर उठा कर देखती। उसकी तरफ से बिलकुल लापरवाह हो गई। मादाम रेकुन जिसका नरम दिल अपनी भतीजी के इस बर्ताव पर दुखता था, उससे बोली—"तुम मेरी भतीजी की कठोरता का बुरा न मानना। मैं इसे अच्छी तरह जानती हूँ। वह ऊपर से नर्म है मगर उसके दिल में गर्मी है।"

दोनों प्रेमी-प्रेमिका में अब और कोई मुलाकात न हो सकी।

शुक्रवार की एक शाम को रेकुन परिवार के महमान रोज की तरह बातें करने लगे। उनकी बात-चीत का विषय यह था कि बूढ़े मैंचाड़ से पूछा जाये कि नौकरी के बीच में वह कैसी-कैसी विचित्र घटनाओं से दो-चार रहा है। ग्रीयूट और कमीलस पुलिस सुपरिंटैन्डेन्ट की कहानियों को आश्चर्य और डर के साथ सुनते।

उस शाम को मैंचाड ने जिसने अभी-अभी एक भयानक कतल की खबर पढ़ी थी दूसरे महमानों को उसके विस्तार पूर्वक वर्णन से कुछ इस तरह सावधान किया कि सभी काँप उठे। फिर उसने सिर हिलाते हुए कहा—"इस कतल का अभी तक कोई सुराग नहीं मिला। कितने ही ऐसे अपराध हैं जिनका पता नहीं चलता। कितने ही कातिल कानून के बंधन से बच कर निकल जाते हैं।"

ग्रीयूट ने हैरानी से पूछा—"तुम्हारा क्या विचार है कि सामने की सड़क पर ऐसे अपराधी चल रहे हैं। जिन्होंने कतल का अपराध किया है और अभी तक गिरफ्तार नहीं किये गये?"

आलवर हंसा और अपनी कठोर आवाज में बोला—"वह इसलिये नहीं पकड़े गये कि कोई यह नहीं जानता कि उन्होंने कतल का अपराध किया है।"

ग्रीयूट को इस दलील से तसल्ली न हुई। कमीलस उसकी मदद के लिये बोला—"जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं जनाब ग्रीयूट के मत से सहमत हूँ। मुझे यह कहना पड़ेगा कि पुलिस का विभाग नकारा है।"

आलवर ने समझा इस तरह उस पर हमला किया जा रहा है—"पुलिस बड़ी चौकसी और होशियार है मगर दुनियाँ में कुछ ऐसे बदमाश हैं जिन्हें खुद शैतान शिक्षा देता है। वह तो ईश्वर की नजर से भी बच निकलते हैं।"

"बिल्कुल ठीक" बूढ़े मैंचाड ने कहा—"मैं जब वरनिन में था, मादाम रेकुन, तुम्हें शायद याद हो एक छकड़े वाले को ठीक सड़क के बीच कतल कर दिया गया था। उसके शरीर के टुकड़े उड़ाकर उसे खाई में फेंक दिया गया था। उसके कातिल का पता ही नहीं चला शायद वह आज भी जिन्दा हो। शायद वह हमारे पास ही यहीं कहीं रहता हो। हो सकता है कि जनाब ग्रीयूट की उससे मुलाकात घर जाते हुए रास्ते ही में हो जाये।"

ग्रीयूट का रंग फक हो गया। उसमें इतनी हिम्मत न रही कि वह अपनी गर्दन मोड़ सके। उसने ऐसा ख्याल किया कि छकड़े वाले का कातिल उसके पीछे खड़ा है। वैसे जी ही जी में वह भयभीत होकर खुश था।

"नहीं नहीं! ऐसा कभी नहीं हो सकता।" वह बुड़बुड़ाया। खुद उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है। "मुझे विश्वास नहीं होता। एक कहानी मुझे भी याद है। एक नौकरानी थी जिसे अपने मालिक के घर से एक चाँदी का बर्तन चुराने के अपराध में जेल भेज दिया गया था। दो महीने के बाद जब एक पेड़ काटा गया तो वह चाँदी का बर्तन कौवे के घोंसले से निकला। चोर कौआ था। दो महीने के बाद नौकरानी को छोड़ दिया गया.........देखा आपने किस तरह हर अपराधी को हमेशा सजा होती है।"

ग्रीयूट की जीत हुई। आलबर मुस्कराया।

"अच्छा तो कौवे को जेल भेज दिया गया?"

"नहीं जनाब! ग्रीयूट का यह मतलब नहीं था।" कमीलस ने झल्ला कर कहा। वह नाराज था कि उसके अफसर का मजाक उड़ाया जा रहा था। एक क्षरण के बाद उसने कहा—"आओ डोमिनो खेलें।"

जब मादाम रेकुन डोमिनो खेल का बक्स लाने गई तो कमीलस ने कहा—"अच्छा तो आप मानते हैं कि पुलिस बेबस है।" वह मैंचाड की तरफ मुंह किये हुये था, "और ऐसे कातिल मौजूद हैं जो इस वक्त सड़कों पर घूम फिर रहे हैं।"

"दुर्भाग्य से यह बात सच्ची है।" पुलिस अफसर ने जवाब दिया,

"यह बिल्कुल अनुचित है।"

इस बात चीत के बीच में थरेसा और लारां चुप रहे। वह तो ग्रीयूट की बेवकूफी पर मुस्कराये तक नहीं थे। वह दोनों मेज पर झुके हुए थे और उनके चेहरे पीले पड़ गये थे। एक क्षरण के लिये उनकी

आँखें चार हुई थीं। थरेसा के बालों की जड़ों में पसीने की बूदें प्रकट हो गयी थीं और लारां के रगों में ठंडी झरझरी दौड़ गई थी।

◉

११
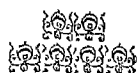
कभी कभी एतवार को जब मौसम अच्छा होता तो कमीलस थरेसा को सैर पर जाने के लिये मजबूर करता। थरेसा दुकान में रहना पसंद करती। अंधेरी और नमदार दुकान में, क्योंकि वह अपने पति की बाज़ू पर झुकी हुई बेजार हो जाती। जब वह पटरियों पर चलता हुआ उसका अगुआ बनता उस वक्त थरेसा और भी निडर हो जाती। जब कमीलस किसी चीज़ पर अपनी राय देता। वाह ! वाह करता या काफी देर तक खामोश रहता।

जिस दिन वह सैर को निकलते मादाम रेकुन गली के सिरे तक अपने बच्चों का साथ देती। जब वह उनसे अलग होती तो उनके गालों का चुम्बन लेती जैसे वह एक लम्बे सफर पर जा रहे हों। इसके बाद वह उन्हें बहुत दुआएँ देती कि वह हर तरह से अपना ख्याल रक्खें। आखिरकार वह उनसे आज्ञा चाहती और देर तक उन्हें जाता हुआ देखती रहती।

कभी कभी यह नौजवान जोड़ा शहर के बाहर भी सैर को जाता। वह नदी के किनारे किसी रैस्टुरैन्ट में खाना खाता और इस बात का महीनों जिक्र छिड़ा रहता।

एक एतवार को कमीलस, थरेसा और लारां ११ बजे के लगभग

शहर के बाहर सैंट धोवन के कस्बे की तरफ रवाना हुए। उस सैर की युक्ति बहुत पहले सोची गई थी बहार नजदीक आ रही थी। रात को रगों में मस्ती लाने वाली हवा चलती थी।।

उस सुबह को आसमान साफ था। धूप बड़ी तेज थी और पेड़ों की छाया के नीचे भी गर्मी मालूम होती थी।

यह एक मोटर में रवाना हुए और मादाम रेकुन को लड़ता झगड़ता छोड़ गये। दोपहर को सैंट धोवन पहुँचे। उन्होंने वहाँ पहुँचते ही छायादार पेड़ों की तलाश शुरू कर दी। पेड़ों की छाया में हरियाली बिछी हुई थी। वह एक तालाब को पार करके पेड़ों के झुँड में दाखिल हुए। टूट कर गिरे हुए पत्तों की तह उस वक्त मोटी थी।

कमीलस एक सूखी जगह देखकर वहीं बैठ गया। थरेसा ने घूमते हुए और पेटीकोट को लहराते हुए अपने आप को पत्तों पर गिरा दिया। उसका शरीर उसके कपड़ों में से झलक रहा था और उसकी एक टांग घुटने तक नंगी थी। वह छाया के नीचे तीन घंटे तक बैठे रहे। वह सूरज के ढलने की इन्तजार में थे ताकि रात का खाना खाने के लिए रैस्टुरेंट तक जायें। थरेसा ने अपनी आँखें बन्द कर ली थीं और वह देर तक नींद का बहाना किये रही। कमीलस पहले तो अपने दफ्तर के बारे में बेवकूफी की बातें करता रहा और फिर थक कर सो गया। लारां धीरे-धीरे रेंगता हुआ थरेसा के पास पहुंच गया। उसने देखा कि थरेसा सो नहीं रही थी बल्कि आसमान को घूर रही थी, वह कुछ सोच रही थी।

कमीलस का चेहरा सफेद हो रहा था और वह एक मुर्दे का चेहरा मालूम होता था। उसका शरीर उसकी कमजोरी को प्रगट कर रहा था। वह खुर्राटे ले रहा था। सुर्ख बाल उसके तमाम चेहरे पर फैले हुए थे। उसकी गर्दन पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। उसकी आँखें

अधखुली थीं और हर साँस के साथ उसकी आँखों के ढेले हरकत में मालूम होते थे।

कमीलस की तरफ देखते हुए लारां ने अपने बूट की एड़ी ऊपर उठाई जैसे वह कमीलस को कुचल देना चाहता हो। थरेसा के गले में चीख उभर कर दब गई। उसका रंग पीला पड़ गया और उसने अपनी आँखें बन्द करलीं और वह एक तरफ को हट गई ताकि खून के छींटे उसकी पोशाक को खराब न कर दें कुछ क्षणों तक लारां ने अपने बूट की एड़ी ऊपर उठाये रक्खी। उसके बूट की एड़ी ठीक कमीलस के चेहरे के ऊपर थी। फिर उसने धीरे-धीरे अपनी टाँग उसके चेहरे पर से हटा ली। उसने जी ही जी में अपने आपसे कहा कि कोई बेवकूफ ही इस तरह कतल का अपराध करेगा, यह कुचला हुआ सिर शहर की पूरी पुलिस को इसका पीछा करने पर मजबूर कर देगा। वह कमीलस से केवल इसलिये छुटकारा हासिल करना चाहता था कि थरेसा से शादी कर सके। वह अपने अपराध के बाद दिन की पूरी रोशनी में छकड़े वाले के उस कातिल की तरह जिन्दा रहना चाहता था जिसका जिक्र मैचाड ने किया था।

वह पानी के बहाव को देखने के लिये नदी की तरफ निकल गया और फिर वहाँ से वापिस लौटा। इतने में उसने एक युक्ति सोची।

उसने सोये हुये कमीलस को उसकी नाक में तिनका देकर जगाया। कमीलस को एक छींक आई और वह घबराकर उठ बैठा और उसने लारां की इस हरकत को एक बहुत अच्छा मजाक समझा। वह लारां से इस प्रकार के मजाक के कारण प्रेम करता था। लारां ने फिर थरेसा को भी झंझोड़ कर डराया जिसने अपनी आँखें बन्द करली थीं। वह अपना लहंगा झाड़ती हुई उठी।

वह घने पेड़ों से निकल कर सड़क पर चलने लगे। वह सड़क

छुट्टियाँ मनाने वाले लोगों से भरी हुई थी। भड़कीली पोशाक पहने हुए लड़कियाँ झाड़ियों में दौड़ रही थीं। गा रही थीं।

कमीलस ने अबकी थरेसा को अपना बाजू पेश नहीं किया था। कमीलस अपने दोस्त के मजाक और उसकी बातों पर खिला-खिला कर हँस रहा था। थरेसा अपना सिर झुकाये हुए चल रही थी। कभी-कभी वह घास की पत्ती झुक कर तोड़ लेती। कभी-कभी वह उनसे बहुत पीछे रह जाती। उस वक्त वह अपने चाहने वाले और अपने पति को दूर से देखती।

"हो! क्या तुम्हें भूख नहीं लगी?" कमीलस ने थरेसा को आवाज दी।

"भूख तो बहुत जोर की लगी है।" थरेसा ने दूर से जवाब दिया।

"तो फिर तेज-तेज कदम उठाओ।"

थरेसा को बिल्कुल भूख नहीं लग रही थी। वह थकी हुई थी और बहुत सुस्त थी। वह लारां की युक्ति के बारे में कुछ भी नहीं जानती थीं और वह इस बात पर गौर कर रही थी कि लारां के जी में क्या है। चिन्ता और घबराहट के कारण उसकी टाँगें काँप रही थीं।

नदी के किनारे पर उन्होंने किसी रैस्टुरेंट की तलाश शुरू कर दी। एक सस्ते रैस्टुरैंट में जिससे चकनाहट और शराब की दुर्गन्ध आ रही थी उन्हें एक कोने में खाली मेज़ मिल गई। रेस्तु रैंट में शोर-गुल बहुत था। तस्तरियों की खनक, बदमस्तों के बेढंगे सुरों में गीत।

सामने नदी के किनारे अमीर आदमियों के झुंड थे। औरतें और मर्द अपनी टोपियाँ गर्दन तक खिसका कर बच्चों की तरह खेल रहे थे। उनकी नापाक आँखों में नम्रता के आँसू मालूम होते थे। विद्यार्थी पाइप पी रहे थे इन्हें नाचता हुआ देख रहे थे और कभी-कभी आवाज कस देते थे।

"बैरा इधर आओ।" लारां ने आवाज दी। और फिर जैसे उसे

कोई बात सूझ गई हो। उसने कमीलस से कहा—"पहले किस्ती की सैर क्यों न कर लें। खाना आकर खायेंगे। खाने का आर्डर दिये जाते हैं। तब तक वह कुछ चीजें तैयार भी कर लेंगे।

"जैसी तुम्हारी मर्जी।" कमीलस ने जवाब दिया "मगर थरेसा को भूख लगी है।"

"नहीं नहीं, मैं इन्तजार कर सकती हूँ।" थरेसा बोली और उसने देखा कि लारां की नजरें उस पर जमी हुई थीं। और वह उसके जवाब देने से पहले गुस्से से भरी थीं।

उन्होंने उठने से पहले खाने का आर्डर दिया और कहा कि वह एक घंटे तक लौटेंगे। यह रैस्टुरैंट किस्तियां भी किराये पर देता था। उन्होंने हुक्म दिया कि एक किस्ती उनके लिये खोल दी जाये। लारां ने एक तंग किस्ती को चुना वह इतनी हल्की थी कि कमीलस डर गया। इसमें तो हम पूरी तरह समा भी नहीं सकेंगे।"

बात यह थी कि क्लर्क कमीलस को पानी से बहुत डर लगता था। बरलिन में अपनी बीमारी के कारण उसने कभी सीन की सैर नहीं की थी। उसके स्कूल के साथी नदी में दौड़ते और गोते लगाते थे। लारां एक दिलेर तैराक बन चुका था। कमीलस के दिल में पानी के लिए वही डर मौजूद था जो प्राय: बच्चों और औरतों के दिल में पाया जाता है। लारां ने किस्ती को एक ठोकर लगाई। केवल यह यकीन दिलाने के लिए कि वह बहुत सख्त थी।

"आओ भी।" लारां ने हँसते हुए कहा—'तुम तो हमेशा डरते रहते हो।" कमीलस ने इतना सुनते ही किस्ती के अन्दर पांव रख दिया और एक सीट पर गम्भीर होकर बैठ गया। जब किस्ती ने हरकत की तो उसने बड़े आराम के साथ अपनी सीट को टेक लगादी और अपनी हिम्मत दिखाने के लिए मजाक करने लगा।

थरेसा अभी तक किनारे पर खड़ी थी और फिर रस्सी को पूरी तरह खोलते हुए लारां ने कान में कहा—

"होशियार रहना मैं इसे नदी में फेंकने आया हूँ। जो कुछ मैं कहूँ वैसा ही करती चली जाना।"

थरेसा का रंग पीला पड़ गया। उसके कदम मानों भारी हो गये। और जहाँ वह खड़ी थी वहीं जम कर रह गई।

"अब आकर किस्ती में बैठ भी जाओ।" लारां ने फिर कान में कहा।

थरेसा अपनी जगह से न हिली। उसके अन्दर एक सख्त कशमकश हो रही थी। उसने अपने इरादे को मजबूत बनाने के लिए अपना पूरा जोर लगा दिया। उसे डर था कि वह धम से जमीन पर गिर पड़ेगी और फूट फूट कर रोने लगेगी।

"हाँ! हाँ!" कमीलस ने कहकहा लगाय और कहा—"लारां जरा थरेसा की तरफ देखो। डर तो थरेसा रही है। वह किस्ती में कहाँ बैठेगी।"

थरेसा ने कमीलस की तरफ देखा। उसकी हँसी ठट्ठा एक स्वार्थ-पूर्ण था जिससे वह बिलबीला उठी और वह गड़ाप से किस्ती में कूद गई।

चाँदनी छिटकी हुई थी और पेड़ों की घनी छाया बरस रही थी। दोनों किनारों के बीच पानी काला पड़ चुका था। किस्ती अब सीन नदी के बीचों बीच थी। ताजी हवा किस्ती को बहा कर लिये जा रही थी। लारां ने चप्पू चलाने बन्द कर दिये और किस्ती को पानी की लहर के सहारे बहने दिया।

उस वक्त आसमान और नदी का पानी एक ही तत्व से बने हुए मालूम होते थे। बहार की चाँदनी रात से और कोई चीज इतनी उदास नहीं होती।

किस्ती के तीनों मुसाफिर खामोश थे।

कमीलस जो किस्ती में पेट के बल लेट गया था अब अपने हाथ नदी के पानी में डुबो रहा था।

"पानी ठंडा है।" बहुत ठंडा है वह चिल्लाया "मैं इसमें अपना शरीर डुबोने की हिम्मत नहीं कर सकता।"

लारां ने कोई जवाब नहीं दिया। वह इस वक्त दोनों किनारों को बेचैन हो कर देख रहा था। वह अपने होंठ चबा रहा था। थरेसा अपनी गर्दन पीछे की तरफ डाल कर बिना किसी हरकत और भयंकर घटना की इन्तजार में थी।

किस्ती नदी के बहुत ही तंग मार्ग में दाखिल हो रही थी। उनके पीछे एक नावक गा रहा था। और सामने नदी खाली पड़ी थी और वहाँ कोई भी नहीं था।

लारॉ किस्ती में उठ कर खड़ा हो गया और उसने कमीलस को कमर से पकड़ कर ऊपर उठा लिया। और हंसने लगा।

"बस करो। मेरे गुदगुदी हो रही है। इस वक्त मजाक न करो। मैं गिर पड़ूंगा।"

लारां ने उसे एक जोर से झटका दिया और उसके बाद उसे जोर से धक्का दिया। कमीलस ने मुड़कर अपने दोस्त का खिचा हुआ चेहरा देखा। एक अज्ञात डर ने उसे दबोच लिया। वह चिल्लाना चाहता था मगर लारां ने उसका गला जोर से दबा रक्खा। एक जानवर की तरह जो अपनी रक्षा में तेज मिजाजी हो जाता है। वह जोर लगा कर घुटनों के बल खड़ा होगया और उसने किस्ती का एक किनारा मजबूती से पकड़ लिया और कुछ सैकंडों तक लारां से संघर्ष करता रहा।

"थरेसा थरेसा।" वह बैठी हुई आवाज में पुकारा। थरेरा अपनी सीट को दोनों से सख्ती के साथ थामे हुए यह सब कुछ देखती रही। वह अपनी आँखें भी इस वक्त बन्द नहीं कर सकती थी। एक खास

जरूरत उसे आँखें फाड़कर देखने पर मजबूर कर रही थी। उसकी नजरें उनकी जोर अजमाईं पर जमी हुई थीं और वह खुद उस वक्त एक मूर्ति बनी बैठी थी।

"थरेसा ! थरेसा ! कमीलस चिल्लाया। उसके गले में उसका साँस बज रहा था।

इस आखरी अपील पर थरेसा ने आह भरी। उसके शरीर के अंग जवाब दे चुके थे। वह थर-थर काँप रही थी।

लाराँ कमीलस के गले को एक हाथ से दबोचे हुए उसे अभी तक झटके दे रहा था। आखिर कार उसने अपने दूसरे हाथ की मदद से कमीलस को किश्ती के किनारे छोड़ने पर मजबूर कर दिया। उसने एक बच्चे की तरह कमीलस को हवा में उठा लिया। लारां की गर्दन जोर लगाने के कारण पूरी खिंच गई थी और वह नंगी हो गई थी। उसके शिकार ने असीम क्रोध की अवस्था में अपने कातिल की गर्दन में अपने दांत जोर से गाढ़ दिये और जब कातिल ने दर्द की टीस को दबाने की कोशिश करते हुए कमीलस को नदी में फैंक दिया तो कमीलस के दाँतों में उसकी गर्दन के माँस का एक छिछड़ा भी साथ चला गया।

कमीलस के मुँह से एक चीख निकली और वह छप से पानी में जा गिरा। वह दो या तीन बार पानी की सतह पर उभरा। सतह पर उभरते ही वह मदद के लिए पुकारता रहा।

लारां ने होशियारी से काम लिया। उसने अपना घाव छुपाने के लिए अपने कोट का कालर ऊपर उठा लिया। फिर उसने अपनी बेहोश प्रेमिका को आपने बाजुओं में ले लिया और ठोकर मार कर किश्ती को उलट दिया और खुद अपनी प्रेमिका के साथ सीन नदी में कूद गया। उसने थरेसा को पानी के ऊपर ही रक्खा और वह भी मदद के लिए पुकारने लगी।

उनकी पीछे की नाव, जिसका खवैया गा रहा था तेजी से किश्ती

खेता हुआ उनकी तरफ लपका उन्होंने देखा कि घटना हो चुकी है। उन्होंने थरेसा की जान बचा ली और उसे किनारे पर लाकर बैंच पर बैठा दिया। लारां ने अपने दोस्त की मौत पर विलाप करते हुए सीन नदी में दुबारा छलांग लगा दी और अपने दोस्त की तलाश शुरू कर दी। वह उसे ऐसी जगहों पर ढूँढ़ता रहा जहाँ वह हो ही नहीं सकता था। वह रोता हुआ वापिस आ गया। नाविकों ने उससे सहानुभूति दिखाई और धैर्य दिलाया।

"यह मेरा अपना कसूर है।" वह रोता हुआ बोला—"मुझे कमील्स को किश्ती में नाचने की इजाजत नहीं देनी चाहिये थी। किश्ती उलट गई और हम सब गिर पड़े। उसने गिरते हुए कहा कि मैं उसकी बीवी की जान बचाऊँ।"

जैसा कि प्राय: होता है दो-तीन नाविकों ने आग्रह किया कि उन्होंने अपनी आँखों से यह दुर्घटना होते हुए देखी। "हाँ! हाँ हमने आपको संघर्ष करते हुए देखा। गरीब औरत होश में आते ही न जाने उस पर क्या गुजरेगी।"

उन्होंने लारां और थरेसा को अपनी किश्तियों में बैठा लिया और उन्हें बड़े किनारे तक ले आये। जहां रैस्टुरैन्ट था और जिसे खाना तैयार करने का उन्होंने आर्डर दे रक्खा था। किनारे पर उस दुर्घटना की खबर पहुँच चुकी थी और सभी को इस दुर्घटना का पता था। नाविकों ने इस दुर्घटना का आँखों देखा हाल जिक्र किया।

रैस्टुरैन्ट का मालिक और मालकिन नरम दिल इंसान थे, जिन्होंने थरेसा के लिए अपना सोने के कमरे का दरवाजा खोल दिया। थरेसा को होश आया तो वह फूट फूटकर रोने लगी। कुदरत इस भयानक दुख में अपना हाथ बटा रही थी।

जब थरेसा कुछ शान्त हुई तो लारां उसे रैस्टुरैन्ट के मालिकों की देख-रेख में छोड़ कर पैरिस रवाना हो गया कि वह डूबने वाले की माँ

को इस दर्दनाक दुर्घटना की सूचना देना चाहता है और सब बात तो यह थी कि वह थरेसा की घबराहट से डर गया था। उसने थरेसा को सोचने के लिए कुछ समय देना चाहा ताकि जो पार्ट उसे अदा करना है वह उसके लिये तैयार होसके। नाविकों ने कमीलस और उसके साथियों का खाना खाया।

१२

उस बस के अंधेरे कोने में जो उसे पेरिस ले गई। लाराँ ने अपनी बाकी युक्तियें तैयार कीं। उसे यकीन था कि वह कानून की पकड़ से बच निकलेगा। उसके दिल में खुशी थी। एक सफल अपराध की खुशी जब वह कलेची दरवाजा तक पहुँचा तो उसने एक टैक्सी किराये पर ली और मैंचाड के घर की तरफ चल पड़ा। रात के नौ बजे थे।

उसने मैंचाड को मेज के गिर्द आलवर और उसकी बीवी सोजीन के साथ बैठा पाया। वह यहाँ अपनी रक्षा करने के मतलब से आया था ताकि उस पर कोई शक भी गुजरे तो मैंचाड के साथी उसकी रक्षा करें। और फिर वह मादाम रेकुन को यह सूचना नहीं देना चाहता था। उसे डर था कि मादाम रेकुन ठायें मारकर रो पड़ेगी और वह अपना पार्ट अच्छी तरह से पूरा नहीं कर सकेगा।

जब मैंचाड ने अपने घर में खुरदरी पोशाक में उसे देखा तो उसने उसकी तरफ साफ नजर डाली। लारां ने हकलाती हुई आवाज में उसे

दुर्घटना का हाल सुनाया। जैसे वह बहुत शोक से काँप रहा हो और उसकी जबान लड़खड़ा रही हो।

"मैं आपके पास आया हूँ क्योंकि इस वक्त मुझे कुछ भी नहीं सूझ रहा है कि मैं उन दो शोक में डूबी हुई औरतों से क्या बात करूँ। उन्हें कैसे समझाऊँ मुझ में कमीलस की माँ के नजदीक जाने की हिम्मत नहीं। आप मेरे साथ चलिये मैं प्रार्थना करता हूँ।"

जिस वक्त वह यह बातें कर रहा था आलवर उसे नजरों से टटोलने के भाव से देख रहा था। वह दिल के पार होती हुई उन नजरों से डर रहा था। कातिल ने खुद को पुलिस अफसरों की दया-दृष्टि पर छोड़ दिया था। और उसने इस ख्याल से बड़ी जल्दी के साथ काम लिया कि इस तरह वह बच जायेगा। इसलिये जब पुलिस अफसरों की नजरें वह अपने ऊपर जमी हुई अनुभव करता तो डर जाता। जिन आँखों में हैरानी और सहानुभूति थी उसे उनमें शक नजर आ रहा था। वह घबरा रहा था। सोजीन और भी पीली पड़ गई थी आलवर जो मौत की खबर पाकर बेहोश हो गया था, मगर वैसे ठंडा था। बहुत हैरान था और हर बात पर हैरान होता था। बूढ़ा मैंचाड केवल शोक प्रगट कर रहा था।

"ओ मेरे ईश्वर! कितनी दर्दनाक दुर्घटना है। सैर के लिए निकलना और मर जाना गरीब मादाम रैकुन को इस दुर्घटना से तसल्ली न हो सकेगी। तुमने अच्छा किया कि सीधे हमारे पास चले आये। हम तुम्हारे साथ चलते हैं!" उसने तेजी के साथ अपनी छड़ी और टोपी उठाई और लाराँ से उसने कहा कि वह दुर्घटना को बिस्तार से वर्णन करे।

चारों सीढ़ियों से नीचे उतरे और गली डपान्टनीयूफ के सिरे पर मैंचाड ने लारां को रोक लिया "तुम अन्दर मत आना। तुम्हारी मौजू-

दगी मादाम रेकुन की तकलीफ और बढ़ा देगी। तुम हमारा यहीं इन्त-जार करो।

इस फैसला ने कातिल को बहुत विश्वास दिलाया। जबकि वह दुकान में दाखिल होने के ख्याल ही से काँप रहा था। वह गली में चलने-फिरने लगा। उसने सुबह से कुछ भी नहीं खाया था। उसे सख्त भूख लगी थी और वह केक पेस्टटी की दुकान में दाखिल हुआ और तेजी के साथ पेस्टटी निगलने लगा।

दुकान में दिल को बहुत हिलादेने वाला दृश्य छाया हुआ था। बूढ़े मैचाड की सावधानी के बावजूद और उसके नाम और मित्रतापूर्ण शब्दों के बाबजूद मादाम रेकुन फौरन ताड़ गई कि यह दुर्घटना उसके बेटे के साथ हुई है। उसने फौरन माँग की कि उसे सच्ची बात से जानकारी कराई जाये। वह अपने पुराने मित्र के सामने गिड़गिड़ाने लगी और मैचाड सच्ची बात बताने के लिये मजबूर हो गया। और जब मादाम रेकुन को वास्तविकता का पता चला तो उसका दुख सुनने वालों के लिये असह्य हो गया। उसके शरीर में झुर्झरी पैदा हुई। वह चीखती और चिल्लाती रही। वह जमीन पर गिर के एड़ियाँ रगड़ती अगर सोजीन ने उसकी कमर में हाथ न डाल दिया होता। आलवर और उसका पिता मैचाड खड़े रहे और बूढ़ी माँ अपने बेटे को सीन नदी में हाथ पाँव मारते हुये देखती रही। उसने अपने बेटे को अपनी गोद में भी देखा। जब वह उसे मौत के मुँह से निकाल रही थी। उसने तीस साल तक अपने बेटे को प्यार किया था। फिर उसे वह कम्बल याद आये जिनमें वह उसे लपेटा करती थी और वह जी ही जी में सोच रही थी कि वह उस दुःख को सहते हुए दम तोड़ देगी।

मैचाड को वहाँ से जल्दी चले आने की जल्दी थी। उसने सोजीन को मादाम रेकुन के पास छोड़ा और आलवर के साथ लाराँ से मिलने के लिए दुकान से बाहर निकला। वह सीन नदी के किनारे पर उस

पार जाना चाहता था जहाँ थरेसा बेहोशी की हालत में पड़ी थी।

रास्ते में उन्होंने कोई बात न की। हर आदमी मोटर की पीठ से टेक लगाकर बैठ चुका था। मोटर सड़क पर हिचकोले खा रही थी। वह सब के सब गतिहीन थे।

जब वह नदी के किनारे स्थित रैस्टुरैंट में पहुचे तो थरेसा एक पलंग पर लेटी हुई थी। उसका सिर और उसका हाथ जल रहे थे। रैस्टुरैंट के मालिक ने उनसे कान में कुछ कहा कि "नौजवान औरत को बहुत तेज बुखार हो रहा था।" सच्ची बात तो यह थी कि थरेसा ने खुद कमजोर और कम हिम्मत पाकर और इस डर से कि कहीं सिथिलता में वह कतल को मान न जाये बुखार का बहाना बनाया था। वह बिल्कुल खामोश हो गई थी और हर किसी से मिलने से इन्कार कर दिया था। वह अभी तक कमीलस और लाराँ को किस्ती के किनारे पर संघर्ष करता हुआ देख रही थी। इस दृश्य ने उसकी रगों में खून के संचार को तेज कर दिया था।

बूढ़े मैंचाड ने उससे बात करने की कोशिश की। वह उसे तसल्ली देना चाहता था। मगर थरेसा ने बेचैनी की हालत में करवट बदली और सिसकियाँ भरने लगी।

"आप इसे एकान्त में छोड़ दीजिए हजूर। यह तो जरासी आवाज पर काँप उठती है।" रैस्टुरैंट का मालिक बोला।

रैस्टुरैंट की निचली मंजिल पर एक कांस्टेबल इस दुर्घटना की रिपोर्ट लिख रहा था। मैंचाड और उसका बेटा नीचे आये। जब आल-वर ने बताया कि पुलिस विभाग में उसका क्या पद था तो सारा मामला दस मिनट में निबटा दिया गया। वह नाविक अभी तक रैस्टुरैंट में मौजूद थे और अभी तक हर आने वाले को इस दुर्घटना की कहानी सुना रहे थे। मैंचाड और लारां के दिल में अगर कोई शक भी था तो इन नाविकों के बयान से दूर हो गया जो लारां को डूबने वाले आदमी

का गहरा दोस्त बता रहे थे और उसने किस तरह अपने दोस्त की जान बचाने के लिए नदी में छलंग लगा दी थी।

दूसरे दिन अखबारों में दुर्घटना की खबर विस्तार पूर्वक प्रकाशित की गई और खबर अभागी माँ, असहाय विधवा और हिम्मती दोस्त की कहानी थी।

जब सरकारी तौर पर रिपोर्ट पूरी हो गई तो लाराँ ने विश्वास का सांस लिया। अब उसके शरीर में एक नई जिन्दगी दौड़ने लगी। जब से कमीलस ने उसकी गर्दन पर अपने दाँत गाड़े थे तब से उसके अन्दर हर चीज मुर्दा मालूम होती थी। वह उस वक्त से एक मशीन की तरह काम करता रहा था और जिस वक्त उसे यकीन हो गया कि वह कानून की पकड़ से आजाद हो चुका है तो उसकी रगों से खून उसी राग और मिठास के साथ बहने लगा। उसने अब कमीलस के गहरे दोस्त का पार्ट अदा करना शुरू कर दिया। जिसे घटनाओं और परिस्थितयों ने उस पर लागू कर दिया था।

"मेरे ख्याल में हमें थरेसा को घर ले जाना चाहिए।" उसने बूढ़े मैंचाड से कहा —"वह कहीं किसी खतरनाक बीमारी का शिकार न हो जाये। आप मेरे साथ आइये हम उसे मजबूर करेंगे कि वह हमारे साथ चली चले।"

ऊपर की मंजिल में उसने थरेसा से प्रार्थना की कि वह घर चले। थरेसा ने जब लारां की आवाज सुनी तो उसके सारे शरीर में कपकपी की लहर दौड़ गई। लेकिन उसने अपनी आँखें खोलीं और लारां की तरफ देखा। वह उठकर बैठ गई। उस वक्त तमाम आदमी बाहर निकल गए और उसे रैस्टुरैंट के मालिक की बीबी के साथ कमरे में अकेला छोड़ दिया गया। कपड़े पहन कर वह लड़खड़ाती हुई सीढ़ी पर से उतरी आलवर के सहारे मोटर में बैठ गई।

सफर खामोशी में कट गया। मोटर के अन्दर अंधेरे में लारां थरेसा के सामने बैठा था उसने बड़ी बेशर्मी के साथ थरेसा की उँगलियाँ अपने हाथ में ले लीं। वह उसका चेहरा नहीं देख सकता था। उसने थरेसा का हाथ अपने हाथ में जोर से दबाया। उसने थरेसा को काँपते हुआ अनुभव किया। थरेसा को इस घड़ी कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि उन दोनों का खून एक दूसरे के हाथ के द्वारा एक दूसरे के शरीर में दाखिल हो रहा है।

जिस वक्त मोटर रुकी तो मैचाड और उसका बेटा सबसे पहले बाहर निकले। लारां ने थरेसा की तरफ झुक कर कहा—"हिम्मत से काम लो। अभी हमें बहुत समय तक इन्तजार करना होगा।"

अभी तक थरेसा ने कोई बात नहीं की थी। पहली बार उसके होंठ हिले। "हाँ" उसकी आवाज भी कंपकपा रही थी।

लारां ने अपने हाथ के सहारे से थरेसा को गाड़ी से उतरने में मदद दी। मादाम रेकुन पलंग पर लेटी हुई थीं और उसकी सिथिल हालत थी। आलबर की बीबी सोजीन, मादाम रेकुन की देखभाल में लीन थी। अवसर देखकर लारां ने थरेसा को यकीन दिलाया कि घटनायें इस तरह हो रही थीं जैसा कि उन्होंने चाहा था। लारां ने अवकाश चाहा और अपने कमरे की तरफ रवाना हो गया। रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी और गलियों में ताजी हवा चल रही थी, और हवा की खनखनाहट उसे गुदगुदा रही थी। अंधेरा इसमें नयी उमंग पैदा कर रहा था। आखिरकार वह अपने अपराध में सफल हो गया था। उसने कमीलस को कतल कर दिया था और सब कुछ खतम हो चुका था। अब वह उस वक्त की बात सोच रहा था जब थरेसा उसकी अपनी होगी।

१३
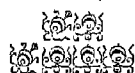
दूसरे दिन सुबह को लारां उठा तो वह ताजा दम था। उसे गहरी नींद आई थी। खिड़की से आती हुई ठंडी हवा उसके ऊँघते हुये खून की तेज गति बना रही थी। आज उसे कल की घटनायें याद भी नहीं रही थीं। अगर कमीलस के दाँतों का बनाया हुआ जख्म उसकी गर्दन पर न होता तो गुजरा कल उसके लिये दुखदायक न होता।

उसने अपने कालर नीचे की तरफ मोड़ा और एक सस्ते से शीशे में अपना जख्म देखा। यह जख्म छोटी दुवन्नी जितना गहरा था। खून उसके सीने तक बह चुका था। उसने अपनी गर्दन खींच कर और पीठ मोड़ कर एक बार फिर अपने जख्म को गौर से देखा। उसने अपना जख्म पानी से साफ किया और अपने आपको यकीन दिलाया कि यह जख्म कुछ रोज में अच्छा हो जायगा। उसने कपड़े बदले और दफ्तर को चल पड़ा।

दफ्तर में उसने इस दुर्घटना की कहानी भर्राई हुई आवाज में सुनाई। उसके साथी इस दुर्घटना का जिक्र अखबारों में पढ़ चुके थे और यह अपने दफ्तर का हीरो बन चुका था। एक हफ्ते तक उसके दफ्तर के नौकरों ने कोई और बात न की। उठते-बैठते इसी दुर्घटना का जिक्र छिड़ता रहा।

अब लारां को केवल एक ही बात का संतोष था कि कमीलस की मौत का अभी अभी सरकारी तौर पर एलान नहीं किया गया था।

थरेसा का पति सचमुच मर चुका था मगर अभी तक उसकी लाश नहीं मिली थी ताकि मौत का सर्टिफिकेट सरकार की तरफ से जारी हो जाता। डूबे हुए आदमी की व्यर्थ में तलाश की जा रही थी। ऐसा ख्याल किया जा रहा था कि लाश किसी गड्ढे में अटक गई थी।

हर सुबह को लारां मारग पहुँचता जहाँ डूबने वालों की लाशें लाकर रक्खी जाती थीं। वह बाकायदा एक हफ्ते तक वहीं जाता रहा और डूबने वालों के चेहरों को गौर से देखता रहा। कमीलस की लाश अभी तक ला पता थी। वह खिड़की के शीशे के साथ लग कर खड़ा हो जाता और मुर्दा खाने के अन्दर झाँक कर देखता जहाँ लाशें ही लाशें थीं। कुछ लाशों पर अभी तक जिन्दगी की झलक मालूम होती थी और कुछ गले सड़े मांस के लोथड़े दिखाई देते। उन लाशों के पीछे पतलून, कोट, लहँगे और फ्राकें टँगी रहतीं। वह केवल डूबी हुई लाशों में दिलचस्पी रखता था जो फूल जाती थी और नीली पड़ जाती थी।

एक दिन वह बहुत डर गया था। वह कुछ मिन्टों तक एक छोटे से कद की लाश देखता रहा था। उस लाश का चेहरा मशक हो गया था माँस इतना नरम हो गया था कि पानी उसके शरीर के अंगों को धीरे धीरे अपने साथ बहाये लिये जा रहा था। मारग के दौरे से उसे रात को बहुत ही भयानक स्वप्न दिखाई देते। उसने अपने दिल को बहुत मजबूत बनाने की कोशिश की मगर उसका शरीर विद्रोह कर देता और एक अनिच्छा सी उसके होश-हवास और हरकत करने लगती।

जिस दिन कोई डूबी हुइ लाश न आती वह आराम से साँस लेता। वह मौत का इश्क बन चुका था और उसे भयानक मौत देखने में एक विचित्र प्रकार का मजा आता था।

हर रोज वह देखता कि उसकी तरह वहाँ कुछ और भी तमासाई आते थे। मारग इतना सस्ता तमाशा है कि हर जेब के लिये ठीक है। मारग का दरवाजा खुला रहता है और जिस व्यक्ति का मन चाहे अन्दर

जा सकता है। लारां बहुत जल्द ऐसे लोगों से परिचित हो गया।

लारां ने एक दिन एक स्त्री को देखा जिसने अपनी नाक पर रुमाल रक्खा हुआ था। उसकी पोशाक रेशमी थी। उसने अपने चेहरे पर एक पतला पर्दा भी ओढ़ रखा था। सामने एक देव-तुल्य लाश थी। गठा हुआ शरीर, चौड़ा सीना, मजबूत पट्ठे। वह स्त्री उस लाश का बड़े। गौर से देख रही थी। इसने अपने चेहरे का पर्दा उठाकर देखा और देर तक यूँ ही खड़ी रही और फिर वहाँ से चल दी।

एक हफ्ते के बाद लारां उकता गया। रात को उसे स्वप्न में लाशें दिखाई देने लगीं। रोज रोज की इस तकलीफ ने जिसका कि वह आदी हो गया था। उसे एक ऐसी सीमा तक पहुँचा दिया जहाँ उसने फैसला किया कि अब वह वहाँ केवल दो वार और जायेगा।

दूसरी सुबह को जब वह मारग पहुँचा तो उसका दिल धक से रह गया। बर्फ की एक सिल पर कमीलस लेटा हुआ था। और वह लारां की तरफ देख रहा था। उसकी आँखें आधी खुली थीं।

कातिल खिड़की के शीशे की तरफ बढ़ा जैसे उसे कोई वहाँ बुला रहा हो। लाराँ की आँखें अभी तक कमीलस पर जमी हुईं थीं। पाँच मिनट तक वह गतिहीन खड़ा रहा। उस वक्त उस पर बेहोशी सी छाई थी। और वह अपनी स्मृति पर स्वर्गवासी कमीलस के अंग-अंग को चित्रित कर रहा था।

कमीलस उस वक्त बहुत ही भद्दा मालूम हो रहा था! वह दो हफ्तों तक पानी में रहा था। उसका चेहरा अभी तक गम्भीर था। उसकी लाश गला हुआ मास मालूम होती थी। उसके पहलुओं में हड्डियाँ हरे रंग की धारियाँ बन गई थीं। वह बुरी तरह गल रहा था और उसके पावों तो इस तरह मालूम होते थे जैसे पिघल रहे हों। लारां कमीलस की तरफ देखता चला गया। डूबी हुई लाश उसकी लाश से

ज्यादा नहीं थी। "मैने इसका क्या हुलिया बना दिया है?" लारा ने अपने आपसे कहा।

मारग से वह चला मैचाड के यहाँ पहुँचा और उसने उसे बताया कि वह कमीलस की लाश देखकर आरहा है। जरूरी रस्मो रिवाज की गईं और कमीलस को दफना दिया गया। मौत का सार्टीफिकट भी जारी हो गया। लारा की परेशानियाँ खतम हो गईं। और अब वह अपने अपराध को को भुला देने की तैयारी करने लगा।

१४
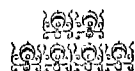
गली डपान्ट नियूफ की दुकान तीन दिन तक बन्द रही और अब उस दुकान को दुबारा खोला गया तो वह पहले से भी ज्यादा शीतल और अंधेरी नजर आने लगी। गर्द से ढकी हुई चीजें भी शोक मनाती हुई मालूम हो रही थीं। खिड़की में हर चीजों पर धूल पड़ी हुई थी, जैसे उन पर सालों तक ध्यान न दिया गया हो।

उस गली की तमाम दुकानदार औरतों ने सहानुभूति प्रकट की। तीन दिन तक मादाम रेकुन और थरेसा बिस्तर में लेटी रहीं। उन्होंने एक दूसरे की तरफ देखा भी नहीं और बात भी नहीं की। बूढ़ी औरत तकिये पर सिर रखकर आकाश की तरफ घूरती रही। वह देर तक बिना हरकत और सख्त गम में डूबी रहती और फिर चुपके चुपके रोने लगती। साथ के कमरे में थरेसा ऐसी मालूम होती कि सो रही है। उसने अपना मुँह दीवार की तरफ कर लिया था। और अपनी आँखों

को चादर से छिपा लिया था। यूँ कहा जा सकता है कि वह अपने विचारों से भी छुपने की कोशिश कर रही थी।

तीसरे दिन थरेसा ने अपनी चादर एक तरफ फेंक दी। उसने अपने बाल अपनी गर्दन की तरफ झटके और एक क्षण तक उसने अपने हाथ अपनी कनपटियों पर रखे और फिर फटी फटी आँखों से सामने देखने लगी। उसकी खाल में कहीं कहीं झुरियाँ पड़ गई थीं। वह बूढ़ी हो गई थी।

सोजीन कमरे में आई तो वह उसे देखकर हैरान हो गई। थरेसा ने उसकी बातों पर कोई ध्यान न दिया। उसने काँपते हुए कपड़े पहने और शीशे की तरफ बढ़ी। उसने अपने चेहरे पर अपना हाथ फेरा जैसे किसी गन्दगी को पोंछना चाहती हो और फिर कुछ कहे बिना वह मादाम रेकुन के सोने के कमरे में दाखिल हुई।

बूढ़ी मादाम रेकुन उस वक्त बहुत ही शांत थी। जब थरेसा उसके कमरे में दाखिल हुई तो वह उसकी हरकतों को जाँचने लगीं फिर थरेसा उसके पास आकर खामोश खड़ी हो गई। एक क्षण के लिये दोनों औरतों ने एक दूसरे की ओर देखा। उस वक्त मादाम रेकुन को याद आया कि उसके सामने उसकी भतीजी थरेसा खड़ी थी। उसने बाएं फैलादीं और थरेसा को गले से लगा लिया। "आह मेरा बच्चा। आह मेरी बच्ची! मेरा कमीलस!" बुढ़िया फूट-फूट कर रोई और उसके आंसू विधवा के गरम शरीर पर खुश्क हो गये। थरेसा इसी हालत में उस वक्त तक खड़ी रही जब तक कि बूढ़ी माँ के आंसू खतम न हो गये।

उसके दिल में इस पहली मुलाकात के लिये डर मौजूद था इसलिये वह देर तक बिस्तर में पड़ी रही थी और वह एकान्त में इस भयानक पार्ट का अध्ययन करती रही, जो पूरा करना था। जब उसने देखा कि मादाम रेकुन को कुछ धैर्य हुआ तो उसने मादाम रेकुन को बिस्तर छोड़ने की सलाह दी। अपनी भतीजी के अचानक आ जाने पर मादाम

रेकुन का दिल का बन्द टूट गया था और अब उसे अपने चारों तरफ और उसमें रहने वाले लोगों का पता चला। उसने थरेसा को धन्यवाद दिया और जब उसने थरेसा को कमरे से बाहर जाते देखा तो वह फिर रोई। उसने थरेसा को आवाज दी और सिसकियाँ भरते हुए उसके गालों का चुम्बन लिया और भर्राई हुई आवाज में उससे कहा कि उसके सिवा अब दुनिया में उसका और कोई नहीं है।

थरेसा को साफ दिखाई दे रहा था कि उसकी फूफी को कितना दुख हुआ है। बुढ़िया के पावों मनों भारी हो गये थे और खाने के कमरे में उसे घिसट कर आना पड़ता था और जब वह उस कमरे तक पहुँचती तो उसे ऐसा मालूम होता है कि दीवारें घूम रही हैं। मगर दूसरे दिन ही उसने चाहा कि दुकान खोल दी जाय। उसका ख्याल था कि अगर वह अकेली रही तो पागल हो जायगी। वह लकड़ियों की सीढ़ियों से उतर कर मुश्किल से नीचे पहुँच गई और काउन्टर के पीछे जा बैठी और वहीं जम कर बैठी रही। थरेसा सोच में डूबी रही। दुकान में फिर गंभीर वातावरण छाने लगा था।

१५
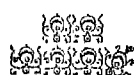
कभी-कभी शाम को लारां भी आता। हर दूसरे तीसरे दिन वह दुकान ही में रहता और आध घंटे तक मादाम रेकुन से बातें करता और फिर वह चला जाता और थरेसा की तरफ आँख उठाकर भी नहीं। देखता। बूढ़ी औरत अपनी भतीजी का रक्षक और नेक दिल दोस्त सम-

झती। जिसने उसके बेटे की जान बचाने की हर मुमकिन कोशिश की थी।

शुक्रवार की एक शाम को लाराँ दुकान ही में मौजूद था। जब बूढ़ा मैंचाड और ग्रीयूट दुकान में दाखिल हुए। आठ बज रहे थे। हर मेहमान ने अथवा मैंचाड ने और बूढ़े कलर्क ने अपने दिल में फैसला कर लिया था कि अब वह किसी बात में रुकावट हुए बिना अपनी पुरानी आदत को ताजा कर सकते थे, इसलिये वह ठीक वक्त पर शुक्रवार की शाम को मादाम रेकुन के यहाँ पहुँच गये। उनके बाद आलवर और सोजिन आये। वह सब खाने के कमरे में दाखिल हुए। मादाम रेकुन को उनकी आने की आशा नहीं थी। वह सब हाथ में प्याले लिये हुए ठोमीनो खेल का बक्सा उलट रहे थे। उन्हें देखकर मादाम को बीते दिन याद आ गये और वह फूट-फूट कर रोने लगी। वहाँ एक खाली कुर्सी पड़ी थी। यह उसके बेटे की थी। उसकी उदासी मेहमानों को बेचैन कर रही थी क्योंकिउसकेदिलों में स्वर्गीय कमीलस की याद जरा भी बाकी नहीं थी।

"मादाम रेकुन आप को इस तरह रंज नहीं करना चाहिये। आप बीमार पड़ जायेंगी।" बूढ़ा मैंचाड बोला।

"हम सब नाशवान हैं।" ग्रीयूट ने समर्थन किया।

आपके आँसू आप को आप का बेटा देने से रहे।" आलवर ने गम्भीरता से जवाब दिया।

"खुदा के लिये हमें भी दुखी न कीजिये।" सोजीन बोली।

जब मादाम रेकुन ने अपने आँसुओं को रोकने की कोशिश करते हुए आह भरी तो बूढ़ा मैंचाड फिर बोला—"धैर्य रखिये। भूलने की कोशिश कीजिये।"

बूढ़ी औरत ने अपने आँसुओं को रोकने की बहुत कोशिश की। शायद वह अपने महमानों की खुदगर्जी को जानती थी। उसने अपने आँसू पोंछे। ठोमीनो खेल के पत्ते उसके हाथ में काँपते रहे। कुछ आँसू

उसकी पलकों पर झलमलाते रहे। वह देर तक खेलते रहे।

लारां और थरेसा इस छोटे से दृश्य को देखते रहे। लारां को शुक्रवार की शामों को फिरसे शुरू होने पर बहुत ही खुशी होती। वह सच्चे दिल से उनकी इच्छा करता रहा था और आज उसने थरेसा की तरफ देखने की हिम्मत की।

काली पोशाक पहिने, पीली और उदास थरेसा उसे आज बहुत ही सुन्दर मालूम हुई। इस तरह सुन्दर थरेसा को उसने पहले कभी नहीं देखा था। उससे नजरें मिला करके वह बहुत खुश था। थरेसा अभी तक तन मन से उसकी थी।

१६
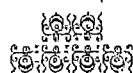
एक साल और तीन महीने गुजर गये शुरू-शुरू के दिनों की गर्मी कम हुई। हर दिन एक नयी शान्ति लेकर आता। जिन्दगी अपने पुराने ढर्रे पर चल निकली। जिन्दगी निडर और गति हीन बन गई। जिसके बाद हमेशा एक संकट आता है। शुरू में लारां और थरेसा ने खुद को नई बुरी प्रकृति की लहर पर बहने दिया। उस नई बुरी प्रकृति की लहर पर जो उनकी काया पलट रही थी उन के दिल की गहराइयों में एक ऐसा आचरण शुरू हुआ था, जिसके प्रयोग के लिये बड़ी नम्रता की जरूरत थी।

लारां अब हर रात को दुकान में आने लगा था मगर अब वह खाना उनके यहाँ नहीं खाता था। वह साढ़े नौ बजे के लगभग आता

और दुकान बन्द होने पर चला जाता। ऐसा मालूम होता था कि वह अपने आने से उन दोनों औरतों की सेवा कर रहा था और अगर किसी दिन वह शाम को न आता तो एक नौकर की सी नम्रता के साथ खुद को अपराधी मानने लगता। वह जब आता तो मादाम रेकुन का हर बात में हाथ बटाता। मादाम रेकुन को बड़ी खुशी होती।

थरेसा शान्ति के साथ इधर उधर टहलते हुये देखती रहती। उसके चेहरे का पीलापन जाता रहा था। उसका स्वास्थ्य पहले से अच्छा हो गया था। अब कभी कभी ऐसा होता था कि जब वह घबराहट में अपने मुँह को बल देती तो उसके मुँह के गिर्द दो झुर्रियाँ उभर आती थी जो उसके चेहरे को बेचैन व तकलीफ का रंग दे देती थीं। लाराँ और थरेसा ने अभी एकान्त में मिलने की कोशिश नहीं की थी, उन्होंने एक दूसरे को मुलाकात के लिए कभी कोई सन्देशा भी नहीं दिया था। कत्ल ने उनके शरीर की आग को ठन्डा कर दिया था। उसके बावजूद प्रेम की स्वतंत्र जिन्दगी गुजारने के लिए उनको बहुत मौके थे। इस जिन्दगी के स्वप्न ही ने तो उन्हें कत्ल पर मजबूर किया था। कमजोर और गतिहीन मादाम रेकुन उनके रास्ते में रुकावट नहीं थी। यह घर उनका था। वह इसे छोड़कर जहाँ भी चाहे जा सकते थे लेकिन प्रेम अब उनके दिलों को गुदगुदाता नहीं था। उनकी भूख मिट चुकी थी। फिर भी वह जानते थे कि एक दूसरे की मौजूदगी में उन्हें कौन सी बात असम्बन्धता पर मजबूर करती है। वह अपनी इस कठोरता का कारण अपनी युक्ति को बताते। उनके लिए उनकी शान्ति, उनकी दोषों से बचना उनकी बड़ी समझदारी का होना था। कभी कभी वह अपने पुराने स्वप्नों को व्यवहारिक रूप देने की कोशिश करते लेकिन अब उनकी समझ की दुनिया उजड़ चुकी थी। फिर वह शादी के सोच से चिमट जाते और वह सोचते यह शादी जल्दी ही होगी यह आशा उन्हें शान्ति प्रदान करती और वह विनाश की गहराइयों में उतरने से बच जाते। वह अपने आप को उस

बात से बहलाते कि उन्हें एक दूसरे से उतना ही प्रेम है जितना पहले था। वह उस समय की इन्तजार में थे जो उन्हें पूर्ण-रूप से प्रसन्न बना देगी और हमेशा के लिए एक दूसरे से मिला देगी।

रात को थरेसा बहुत ही खुशी अनुभव करती क्योंकि अब बीमार कमीलस उसके पहलू में नही होता था। वह अपने लम्बे-चौड़े कमरे पर खुश होती। उसे अब तो उस कमरे के अंधियारे से भी प्रेम हो गया था। वह लारां के बारे में बस उसी रोज सोचती जब रात को उसे कोई भयानक स्वप्न दिखाई देता। वह अब लारां के बारे में इस तरह सोचती थी कि वह एक भीषण कुत्ता है। जो उसकी रक्षा और देख भाल कर सकता है।

दिन को दुकान में वह अपने इर्द-गिर्द पड़ी हुई चीजों में दिलचस्पी लेती। अब वह खुलकर सामने आती थी और अब वह एक खुफिया विद्रोह, बदला और घृणा की हालत में साँस नहीं लेती थी। ज्यादा सोच उसे बेचैन कर देती थी। अब वह चीजों को देखती और काम करते रहने की जरूरत को अनुभव करती थी।

गली पर उसकी सदा नजर रहती थी। एक दिन उसने एक छोटी उम्र के विद्यार्थी को देखा जो बहुत ही सस्ते होटल में रहता था। थरेसा ने अनुभव किया कि उसकी चाल-ढाल नजर में खबली है। यह विद्यार्थी उसकी दुकान के आगे से दिन में दो तीन बार गुजरता था। वह विद्यार्थी सुन्दर है, पीला चेहरा, गर्दन तक ढके हुए कलियों की तरह बाल। वह एक हफ्ते तक स्कूल की लड़की की तरह उससे चुपके-चुपके प्रेम करती रही। उसने उपन्यास पढ़ने शुरू कर दिये। उसने इस विद्यार्थी का लारां के साथ मुकाबला किया। लारां इसके मुकाबले में बेवकूफ और बेडौल दिखाई दिया। उपन्यासों के पढ़ने से उसमें नई उमंगें पैदा हुई। पहले उसने अपने खून और अपने शरीर के साथ प्रेम किया

था। अब वह अपनी समझ के साथ प्रेम करने लगी और फिर एक दिन वह विद्यार्थी गायब हो गया।

वह एक लायब्रेरी की सदस्य बन गई। और अब वह पुस्तक के हरेक नायक के साथ प्रेम करने लगी। पढ़ने से उसके स्वभाव पर प्रभाव पड़ा। वह कभी कभी बेमतलब रोने या हँसने लगती। कभी कभी वह कमीलस को याद करती और कभी कभी वह लारां से एक नई उमंग के साथ प्रेम करना चाहती।

जिन उपन्यासों में सच्चित्रता और पवित्रता का वर्णन होता वह उस के विचारों और उसके इरादे में रुकावट पैदा कर देते। वह अभी तक एक बिना सीखा जानवर थी लेकिन उसमें बुरे-भले की समझ पैदा हो चुकी थी। अब उसे मालूम हुआ कि खुश रहने के लिए किसी स्त्री को अपने पति को कत्ल करने की जरूरत नहीं होती।

इधर लारां शान्ति और अशान्ति के संघर्ष से गुजर रहा था। पहले तो वह बहुत धैर्यवान बना रहा जैसे उसके सिर से एक भारी बोझ उतर गया हो और फिर वह अपने आप से पूछता कि क्या सचमुच उसने कमीलस को सीन नदी में फेंक दिया था। अपने अपराध की याद उसे आश्चर्य में डाल देती। उसे अभी तक यकीन नहीं था कि वह खूनी भी हो सकता है। अपनी कायरता और युक्ति के बावजूद जब वह यह सोचता कि अगर उसके अपराध का पता चल जाता तो फिर क्या होता तो उसके माथे पर पसीने की बूंदें दिखाई देने लगतीं।

"वह सचमुच नशे में चूर था।" वह सोचता—"उस स्त्री ने अपनी प्यार भरी थपकियों से मुझ पर सच मुच नशा कर दिया था, ओ हो! मेरे ईश्वर! मैं कितना मूर्ख बन गया!" लारां इस समझ के दबाव से नरम पड़ जाता, ज्यादा कायर बन जाता और ज्यादा युक्ति से काम लेता। वह अपनी पुरानी जिन्दगी की तरफ लौट गया। कई महीनों तक अपने आपको एक इमारत बनाने वाला नौकर प्रगट करता रहा

और अपना काम बड़ी निपुणता के साथ करता। रात को सस्ते रैस्टु-रैंटों में खाना खाता और अपने कमरे में अपनी कुर्सी को दीवार की तरफ झुका कर पाइप पीता रहता। दिन को वह बिलकुल कुछ न सोचता और रात को गहरी नींद सोता। ऐसी नींद जो स्वप्नों से खाली होती है। उसे ऐसा मालूम होता कि उसकी इच्छा मर चुकी है। अब तो उसे थरेसा का कभी ख्याल तक भी नहीं आता था। कभी-कभी वह उसके बारे में यूं सोचता जैसे कोई उस स्त्री के बारे में सोचता हो जिसे बाद में उससे शादी कर लेना हो। वह अपनी शादी के अवसर की इन्तजार में था। एक दिन थरेसा उसकी हो जायेगी और वह फिर स्वप्न देखता कि वह नौकरी छोड़ देगा और केवल आराम के लिये चित्रकारी करने लगेगा और सड़कों पर आवारा घूमा करेगा ये विचार उसे फिर गली इपान्ट-नौनूफको दुकान में ले जाते।

एक रात वह एकान्त से उकता कर अपने कालेज के एक मित्र से मिलने गया जो चित्रकार था और जिसके स्टुडियों में भूरे बालों वाली एक नंगी औरत चादर पर बेचैनी की हालत में पड़ी थी। तस्वीर के पीछे तस्वीर के लिये एक मौडल स्त्री अपने शरीर के पट्ठों को खींचकर अपनी गर्दन पीछे की तरफ डालकर और अपने कूल्हे उठाकर लेटी हुई थी और चित्रकार उस स्त्री की तस्वीर बना रहा था। यह स्त्री कभी-कभी हँसती और अपनी छातियों को पूरे जोर से उभारती। लारां उस स्त्री के सामने जाकर बैठ गया। सिगरेट पीते हुये उसे कुछ देर तक देखता रहा और अपने मित्र के साथ बातें करता रहा। इस दृश्य ने उसकी रगों में खून का संचार तेज कर दिया। वह शाम तक अपने मित्र के स्टुडियो में रहा। फिर जब उस स्त्री ने अपने श्रम के मुताबिक कार्य-क्रम को पूरा कर लिया तो वह उस स्त्री को अपने घर ले आया। एक साल तक उसने उस स्त्री को अपनी प्रेमिका बनाये रक्खा। गरीब लड़की को इससे प्रेम हो गया था। वह इसे एक अच्छा आदमी सम-

भती थी। वह बहुत सवेरे निकल जाती। दिन भर चित्रकारों के सामने भिन्न-भिन्न रूपों में खड़ी रहती और हर रातको निश्चित समय पर लारां के पास चली आती। वह अपनी आमदनी ही से खाना खाती, कपड़े पह-नती और गुजारा करती। वह लारां पर एक पैसे का बोझ नहीं डालती। लारां को उससे कोई दिलचस्पी नहीं थी कि वह कौन है, क्या करती है और कहाँ जाती है। उसने उस लड़की को एक काम आने वाली चीज की तरह स्वीकार कर लिया था। इसी परिचय में थरेसा के शोक की अवधि खतम हो चुकी थी। अब उसने हल्के रंगों की पोशाक पहनना शुरू कर दिया था और एक शाम को लारां ने वह बात मालूम की कि वह जवान और सुन्दर है। लेकिन वह अभी तक उसकी मौजूदगी में एक बेचैनी सी अनुभव करता था।

लारां बड़े आराम के साथ जिन्दगी गुजार रहा था और अब वह नहीं चाहता था कि उस स्त्री के साथ दोबारा मेल मिलाप से उसकी जिन्दगी का मजा बिगड़ जाये, जिसने उसे पागल बना दिया था। लेकिन वह ख्याल बार-बार उसकी समझ पर चोट की तरह पड़ता ताकि उसे थरेसा के साथ शादी कर लेना चाहिये। कभी-कभी वह यह भी सोचता कि शादी की क्या जरूरत है लेकिन दूसरे ही क्षण वह यह सोचता कि उसने फिर व्यर्थ में क्यों एक व्यक्ति को कतल किया था? वह थरेसा को पुकारता हुआ सुनता और उसे अपने खून में खींचता हुआ अनुभव करता। उसे अपने अपराधी साथी से डर भी आता कि एक दिन थरेसा जाकर पुलिस को सच्ची घटना न बता दे। कुछ ईर्ष्या और बदले की खातिर। जब वह यह बातें सोचता तो उसे एक बार फिर नशा सा हो जाता।

उन्हीं दिनों चित्रकारों के लिये वह मौडल स्त्री उसे छोड़ कर चली गई एक एतवार को वह लौट कर न आई। इसमें कोई शक नहीं था कि उसे लारां से ज्यादा कोई अच्छा और आराम दायक आश्रय मिल गया

था। लारां को ज्यादा दुख न हुआ। लेकिन इतना फर्क जरूर पड़ा था कि उसे एक स्त्री के पहलू में सोने की आदत हो गई थी और वह अपनी जिन्दगी में अकेलापन अनुभव करने लगा। एक हफ्ते के बाद उसके शरीर ने विद्रोह किया और वह उपान्ट नियूफ गली की दुकान में लौट आया। वह पूरी शाम वहाँ गुजार देता और थरेसा की तरफ अपनी आँखों में वही आग लिये हुए देखता। थरेसा उसके सामने जोशीले हाव-भाव से काम लेती।

इस तरह उन दोनों की इच्छा व उमंग फिर जाग्रत हुई। एक शाम को जब लारां दुकान बन्द कर रहा था वह ड्योढ़ी में थरेसा के लिये रुका और बोला—"क्या मैं आज रात तुम्हारे पास आऊँ ?"

थरेसा डर गई।

"नहीं नहीं ! हमें अभी कुछ और इन्तजार करना चाहिए।"

"मैं चिरकाल से इन्तजार कर रहा हूँ और मैं इस इन्तजार से तंग आ चुका हूँ।"

थरेसा ने उसकी तरफ तीव्र-दृष्टि से देखा। उसकी आँखें जल रही थीं। उसके हाथ जल रहे थे। वह एक क्षण के लिए हिचकिचाई और फिर बोली—"आओ हम शादी कर लें। फिर मैं तुम्हारी हो जाऊँगी।"

१७

लारां उस गली से आया तो उसके दिमाग में कशमकश सी हो रही थी। वह बेचैन सा हो रहा था। थरेसा के गरम साँस ने और

शादी के लिये उसकी मंजूरी ने उसकी पुरानी उत्कन्ठा को बढ़ाया।

जब वह अपने होटल तक पहुँचा तो उसे अपने कमरे में जाते हुए डर मालूम हुआ। वह उस कमरे में अकेला होगा। बच्चों की तरह डर ने उसे पकड़ लिया। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके कमरे में कोई आदमी छिपा हुआ था। वह आज तक ऐसी बुजदिली का शिकार नहीं हुआ था। वह इस डर से घबराकर एक शराब की दुकान पर गया और वहाँ एक घंटा तक रहा। उसे थरेसा का ख्याल आया और जी ही जी में उस पर बिगड़ने लगा कि उसने उसे अपने कमरे में आने से क्यों रोका। उसका ख्याल था कि उसकी घनिष्टता में वह कभी भय नहीं खाता।

शराब के दुकानदार ने अपनी दुकान बन्द कर दी और उसे वहाँ से चला जाना पड़ा। लारां को अपने कमरे में होटल के एक लम्बे और तंग रास्ते से गुजर कर और अंधेरी सीढ़ियाँ चढ़ कर जाना पड़ता था। आज वह इस रास्ता और लकड़ी की अंधेरी सीढ़ियों से डर रहा था। उसने माचिस की डिबिया खरीदी और हौसला करके होटल के तंग रास्ते की तरफ लपका। पहली ही तिल्ली टूट गई और उसका रंग फक हो गया। उसने दियासलाई दुबारा जलाई और ड्योढ़ी में दाखिल हो गया। वह दीवार के साथ रगड़ कर दियासलाइयाँ जलाता चला गया। उसके हाथ काँप रहे थे और जब वह ऊपर पहुँचा तो कमरे में दाखिल होते ही उसने फौरन दरवाजे बन्द कर दिये। सब से पहले उसने पलंग के नीचे झाँक कर देखा। वहाँ कोई भी नहीं था। वह मुस्कराया। वह सोच रहा था कि वह एकदम इतना क्यों डर गया।

कम्बल ओढ़ कर उसने थरेसा के बारे में सोचा। उसके डर ने उसे उसके दिमाग से निकाल दिया था। वह बार-बार उस शादी से पैदा होने वाले फायदों के बारे में सोचने लगता। और फिर उसने अपने आप ही से कहा—"मैं सो जाऊँगा। मैं उसके बारे में और कुछ भी नहीं

सोचूँगा। मुझे सुबह आठ बजे उठ कर दफ्तर जाना है।" उसने सोने की कोशिश की लेकिन उसके विचारों ने फिर पलटा खाया। जब उसने देखा कि वह सो नहीं सकता तो उसने अपनी आँखें खोल दीं और उसका दिमाग जवान स्त्री के वादों से भर गया। फिर उसके जी में आया कि वह थरेसा के पास जाये। यह ख्याल आते ही वह पलंग पर से कूद पड़ा लेकिन कूदते ही वह सोचने लगा कि उसे फिर उसी अँधेरे रास्ते से गुजरना होगा। वह दोबारा पलंग पर आकर लेट गया।

अचानक उसका हाथ उसकी गर्दन के दाग पर जा पड़ा। दाग को हाथ से छूने से उसे कमीलस की याद आ गई। लारां ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। अभी तक कमीलस ने रातों को उसे कोई तकलीफ नहीं दी थी लेकिन अब गर्दन के दाग ने उसे जिन्दा कर दिया था और उसे ऐसा ख्याल आया कि कमीलस उसके कमरे के एक कोने में खड़ा है। उसने पलंग को हिलता हुआ पाया। कमीलस उसे झिंझोर रहा था ताकि वह पलंग पर से गिर पड़े तो वह उस पर हमला कर दे। लारां बिस्तर की चादर के साथ जोर से चिमट गया। अचानक उसे ख्याल आया कि पलंग बिल्कुल नहीं हिल रहा। वह उठ कर बैठ गया। उसने मोमबत्ती जलाई और अपने आप से कहा।

"बेवकूफ कहीं का।" उसने मोमबत्ती बुझा दी। तकिया में अपना सिर दबा दिया। अब उसने एक नयी प्रतिज्ञा के साथ फैसला किया कि अब वह कुछ भी नहीं सोचेगा। अब थकावट उसके शरीर को पकड़ने लगी थी। वह आधी खुली आँखों की हालत में ही लेटा रहा तो उन्हीं विचारों ने हलचल शुरू कर दी। विचारों के आक्रमण और आधी खुली आँखों की हालत में लारां ने देखा कि वह अपने पलंग पर से उठ कर थरेसा के मकान की तरफ चल पड़ा है। वह ड्योढ़ी से गुजर चुका है। अब वह सीढ़ियाँ चढ़ रहा है और अपने सोने के कमरे का दरवाजा

थरेसा ने नहीं बल्कि कमीलस ने खोला है। हरे और नीले कमीलस ने जैसा कि उसने उसे मार्ग में देखा था। लारां ने उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया। लारां के मुँह से चीख निकल गई। उसने चादर से अपनी आँखें ढांप लीं। वह पसीने से तरबतर हो रहा था।

वह अपने आप को गालियाँ दे रहा था। उसने एक बार फिर सोने की कोशिश की। एक बार उस पर फिर वही थकावट और ज्यों ही उस का इरादा ढीला पड़ा तो वह एक बार फिर अपनी आधी खुली आँखों की हालत में थरेसा से मिलने गया।

कमीलस ने उसका स्वागत किया। वह उठ कर बैठ गया। डर उसके रग रग में घुस चुका था और वह इस डर से छुटकारा पाने के लिए अपनी पूरी ताकत सुना सकता था।

पौ फट रही थी और लारां अभी तक सोने की कोशिश कर रहा था। आखिरकार उसने कोशिश को छोड़ दिया। उठ कर उसने जल्दी में पतलून पहनी। चुल्लू भर पानी से उसने अपने गाल धोये। वह अपने आप कहने लगा। "मैं क्यों ऐसी बातें सोचता रहा। मुझे सो जाना चाहिये था ताकि ताजा दम होकर उठता। आह! अगर रात को थरेसा मान जाती।"

बालों में कंघी करते हुए उसने अपने आप से कहा—"मैं कायर नहीं हूँ। कमीलस क्या है। कुछ भी नहीं। वह मेरा क्या बिगाड़ सकता है। यह सोचना ही बेवकूफी है कि वह मेरे पलंग के नीचे छिपा हुआ है। थरेसा की गोद जब खुलेगी तो कमीलस का दूर दूर तक कोई निशान नहीं मिलेगा।"

शीशे में उसने अपनी गर्दन के दाग को देखा। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उस दाग में कोई सुइयाँ चुभो रहा हो। "थरेसा ही उसका इलाज कर सकती है।" उसने अपनी टोपी पहनी और सीढ़ियों से नीचे

उतर आया। सुबह के पाँच बजे थे। उसे घूमने और हवा की जरूरत थी।

"हमारी थरेसा ने आज रात बहुत बुरी गुजारी है।" मादाम रेकुन ने उसे बताया। "बहुत भयानक स्वप्न देखती रही। करवटें बदलती रही। एक बार तो उसने उसकी चीख भी सुनी। और आज सुबह को वह बीमार थी।"

मादाम रेकुन जब थरेसा से बात कर रही थी तो थरेसा की आँखें लारां पर जमी हुई थीं। बिना किसी शब्द व सन्देह के उन दोनों ने एक ही से डर में रात गुजारी थी। वह दोनों एक दूसरे के सामने दस बजे तक बैठे रहे। आज उनमें बहुत सी बातें मिली जुली थीं। वह दोनों एक दूसरे को समझ रहे थे। और आंखों ही आंखों में एक दूसरे से बिनती कर रहे थे कि वह डूबे हुए व्यक्ति के विरुद्ध अपनी एकता के क्षणों को पास लायें।

१८

कमीलस की परछाईं रात को थरेसा के पास भी आई थी। एक साल के बाद लारां ने प्रेमियों की मिलन की जो मागें की थी उसने उसे मजबूत कर दिया था। उसके शरीर से टीसें उठने लगी थीं। वह भी बिस्तर पर लेट कर यह सोचती रही थी कि शादी की घड़ी को अब और नहीं टाला जा सकता। उसने भी अपने से बार-बार यह कहा था कि जब उसका प्रेमी आसानी से उसके पकड़ में आ सकता था तो वह इतनी

तकलीफ और मुसीबत क्यों उठाये। लेकिन साथ ही साथ लारां और थरेसा के अन्दर कोई चीज टूट चुकी थी। इसके बावजूद वह यह निश्चय कर चुके थे कि वह दोनों एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते।

दूसरे दिन थरेसा ने लारां के सामने शादी पर जोर दिया। लेकिन वह दोनों डर रहे थे कि उनसे कोई ना समझी की हरकत न हो जाये। इस बात को मानते हुए उन्होंने एक और युक्ति सोची कि कुछ ऐसा वातावरण तैयार किया जाये कि मादाम रेकुन खुद उनकी शादी की युक्ति पेश करें। शुक्रवार की शाम को आने वाले मेहमानों के कान में यह बात डाल दी जाये कि थरेसा को दोबारा जरूर शादी कर लेना चाहिये। इस युक्ति की कसौटी पर उन्हें भरोसा था लेकिन इन घड़ियों को पास लाने में जो एक रुकावट सी अनुभव करने लगे थे। उसके कारण उन्हें रात को नींद नहीं आती थी।

उधर लारां उस रात से बहुत ही कायर बनचु का था। जिस रात वह इस बात से डर रहा था कि कमीलस उसके पलंग के नीचे छिपा हुआ है। एक रात को तो वह एक पुल के नीचे सुबह होने तक खड़ा रहा। वह छ घंटे तक नदी के गहरे पानी का दृश्य देखता रहा।

लारां और थरेसा का खून नित्य प्रति दिन जोश मार रहा था। हर रात को उन्हें भयानक स्वप्न दिखाई देते थे। हर रात के गुजरने पर वे अपनी एकता की दृढ़ता के साथ इच्छा करते थे।

थरेसा लारां से इसलिये शादी करना चाहती थी कि वह डर रही थी और उसे लारां की सहानुभूति की जरूरत थी। इन दिनों वह जो उपन्यास पढ़ रही थी उसने उसके दिमाग को परेशान कर दिया था। रात वह करवटें बदल कर गुजार देती।

लारां शादी के लिये उचित कारणों को ढूँढ़ता रहता। वह इस बात को बिना किसी घमंड के साबित करता कि यह शादी जरूरी है। इसी तरह वह खुश रह सकता है। उसका किसान बाप क्योंकि अभी तक

जिन्दा था और न ही उसके जल्दी मरने की आशा थी। इसलिये उसे खतरा था। कि उसका किसान बाप उससे सख्त नाराज होकर और भावुकता का शिकार होकर तमाम सम्पत्ति उसके किसी चचेरे भाई के नाम न कर दे। इस तरह वह उम्र भर गरीब रहेगा। इसके अलावा वह अपनी जिन्दगी में कोई काम करना नहीं चाहता था। इन बातों को सोचकर वह यह नतीजा निकालता कि शादी उसके लिये न केवल फायदे-मन्द है बल्कि खुशी का कारण भी है। इसके बाद उसे यह बात भी याद आती कि उसने कमीलस को केवल इसलिये नदी में डुबा दिया था कि वह थरेसा से शादी कर सके। अपने इस मजबूत इरादे के बावजूद वह कई बार चिन्तित हो जाता और खुशी की लहर उसके गले में घुट कर रह जाती।

१६
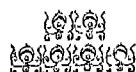
इसी इच्छा में थरेसा और लारां की खुफिया कोशिश रंग लाने लगी। थरेसा बहुत ही उदास रहने लगी। मादाम रेकुन उसके इस चलन से परेशान हो उठी। बुढ़िया ने बार बार थरेसा से इसका कारण पूछा। थरेसा ने बड़ी होशियारी के साथ उचाहट, बेजारी, एकान्त और शरीर में दर्द की शिकायत की और बताया कि वैसे उसका स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा था। वह नहीं जानती थी कि क्या चीज उसकी उदासी का कारण है। यह बातें सुनकर मादाम रेकुन सचमुच डर गई।

इन दिनों वह दुनियाँ की किसी और बात के बारे में बिल्कुल न सोचती। हर वक्त अपनी भतीजी को गर्म हवा भी न लगे—"हे ईश्वर मेरे मरने तक उसे जिन्दगी दे।" उसके बाद उसने अपनी भतीजी की सख्त देख-भाल शुरू करदी। उसने अपनी भतीजी की उदासी का इलाज सोचना शुरू कर दिया।

ऐसे समय में मादान रेकुन ने अपने पुराने दोस्त मैंचाड की सलाह लेना पसन्द किया। शुक्रवार की एक शाम को वह बूढ़े मैंचाड को दुकान के एक कोने में ले गई और उसने अपने डर का कारण बताया।

बूढ़े मैंचाड ने साफ दिल से काम लिया और कहा—"मैं बहुत दिन से देख रहा हूँ कि थरेसा उदास होती जा रही है और मैं जानता हूँ कि उसका चेहरा इतना सुस्त क्यों हो गया है।"

"तुम क्या जानते हो ? कहो ! क्या बात है। कैसे मैं इसके गम का इलाज कर सकूँ।"

"इलाज बहुत आसान है। मैंचाड ने हँसते हुए कहा—"तुम्हारी भतीजी इसलिये उदास है कि वह अकेली है। और दो साल से अकेली है। उसे पति की जरूरत है। हर व्यक्ति यह इच्छा उसकी आखों में देख सकता है।"

मैंचाड के कठोर हृदय से साफ २ कहने से एक क्षण के लिये मादाम रेकुन को सख्त दुख हुआ। वह अपने बेटे की मौत को अभी तक ताज़ा ख्याल कर रही थी। कमीलस की मौत के बाद उसका ख्याल था कि थरेसा का और कोई हो ही नहीं सकता था।

"इसकी जल्दी शादी करदो।" मादाम रेकुन ! मैंचाड ने कहा—"अगर तुम यह नहीं चाहतीं कि वह तुम्हारी आँखों के सामने मुर्झा जाये तो मेरी सलाह पर अमल करो और मुझ पर भरोसा करो कि मैं तुम्हें नेक सलाह दे रहा हूँ।"

मादाम रेकुन फौरन ही उसकी सलाह को स्वीकार न कर सकी।

उसे इस बात पर दुख हो रहा था कि थरेसा की शादी की सलाह देते हुए बूढ़े मैचाड ने एक बार भी कमीलस का नाम नहीं लिया था। मादाम रेकुन के दिल पर इस ख्याल से छुरी चलने लगी कि अब उसके बेटे की याद केवल उसके अपने सीने में सुरक्षित है और बाकी सब लोग उसे भूल चुके हैं। दूसरी तरफ मादाम रेकुन इस बात से भी परेशान थी कि उसकी भतीजी की खामोशी, पीलापन और उदासी उसके लिये असह्य होती जा रही थी। वह जानती थी कि थरेसा के लिये दुकान एक समाधि बन चुकी है। उसे प्रेम और ममता की जरूरत है। इस सोच ने उसे थरेसा की दोबारा शादी की सलाह को मान लेने के लिये मजबूर किया। उसने थरेसा के लिये पति की तलाश शुरू करदी। मगर मादाम रेकुन थरेसा की शादी को कुछ इस तरह करना चाहती थी कि उसे भी खुशी हो। और उसे अपने आखिरी दिनों में पछताना नहीं पड़े।

उन दिनों लारां शाम को रोजाना आने लगा। वह मादाम रेकुन का हर काम में हाथ बटाने लगा। कभी कभी अपने आपको होशियार आदमी प्रकट करने के लिये वह थरेसा की सेहत के बारे में अपनी तसल्ली को भी प्रकट करता। कई बार वह मादाम रेकुन को एक तरफ ले जाता और थरेसा की हालत का कुछ इस ढंग से जिक्र करता कि मादाम रेकुन और भी परेशान हो जाती। मादाम रेकुन उसकी बातें बड़े ध्यान से सुनती।

लारां भर्राई हुई आवाज में कहता—"अगर यही हालत रही तो हम थरेसा को खो देंगे। हम अपने आप से यह बात नहीं छिपा सकते कि वह बीमार है। काश आप इन खुशियों की खातिर ही कुछ करें।"

लारां कभी कभी हिम्मत से काम लेकर कमीलस का नाम लेता। "मेरे गरीब दोस्त की मौत से उसे सख्त दुख हुआ है। वह दो साल से मर रही है। अब कोई बात उसके शोक का इलाज नहीं कर सकती।"

यह सफेद झूठ बूढ़ी औरत को फूट-फूट कर रोने पर मजबूर कर देता। जब वह कमीलस का नाम सुनती, सिसकियाँ भरने लगती। उसके जी में आता कि वह उस व्यक्ति के गले में बाहें डालदे जो उसके बेटे का नाम ले रहा है।

शुक्रवार की एक शाम को मैचाड और ग्रीयूट उस समय खाने ही के कमरे में थे, जब लारां दाखिल हुआ। वह सीधा थरेसा की तरफ बढ़ा और उसने उसका हालचाल पूछा। मैचाड और ग्रीयूट उसकी तरफ देखते रहे। मैचाड ने मादाम रेकुन की तरफ झुककर कान में कहा। "तुम्हारी भतीजी को इसी पति की जरूरत है। उनकी शादी का जल्दी से जल्दी इन्तजाम करो। अगर जरूरत पड़ी तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे।" यह कह कर मैचाड मुस्कराया। उसका ख्याल था कि थरेसा को एक स्वस्थ्य पति की जरूरत है। मादाम रेकुन ने भी लारां की तरफ देखा। वह सोचने लगी कि अगर लारां उसकी भतीजी के साथ शादी कर ले तो वह सभी फायदे इसको हो सकते हैं जो उसके दिमाग में हैं। उस शाम को जबकि दूसरे मेहमान ठोमीनो खेलते रहे मादाम रेकुन बार-बार लाराँ की तरफ देखती रही।

मैचाड से आखिर न रहा गया। उठते हुए उसने लारां को मादाम रेकुन के इरादे से सावधान कर ही दिया। मैचाड को पता चला कि वह नौजवान दोनों औरतों के इतने पास है कि इस सलाह पर हैरान रह गया है। लारां ने उसे बताया कि वह अपनी विधवा दोस्त मादाम रेकुन की भतीजी से अपनी बहन की तरह प्रेम करता है। उससे शादी करना वह इस सम्बन्ध को अपमान समझता है। मैचाड ने उसे इस प्रकार के बीसों उदाहरण देकर समझाया और कुछ जोर दिया। बूढ़े मैचाड ने यहाँ तक कहा कि वह लारां को मादाम रेकुन का बेटा और थरेसा को उसका पति देखना चाहता है। धीरे-धीरे लाराँ मान गया और उसने भी इस बात को इस तरह स्वीकार किया कि जैसे वह इस

शादी को अपना नैतिक कर्त्तव्य समझ कर स्वीकार कर रहा हो। दुकान के बाहर मैचाड और लारां इस शादी पर बहस कर रहे थे और दुकान के अन्दर मादाम रेकुन थरेसा के साथ इस शादी पर सोच-विचार कर रही थी। थरेसा ने मादाम रेकुन की इस सलाह पर सख्त विरोध किया और कहा कि शादी का ख्याल उसके दिमाग में कभी नहीं आया। कि वह केवल कमील्स के साथ निबाहती, मादाम रेकुन रोने लगीं। वह गिड़गिड़ाकर विनती करने लगीं। मादाम रेकुन ने कहा कि यह शादी उसकी जिन्दगी की आखिरी खुशी होगी। थरेसा ने इस दबाव के नीचे प्रतिज्ञा कर ली कि वह अपनी बूढ़ी फूफी की हर इच्छा को पूरा करने के लिये तैयार है।

"लारां को मैं अपने भाई की तरह प्यार करती हूँ। लेकिन अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं उससे अपने पति की तरह प्रेम करने की कोशिश करूँगी।" उसने उठ कर बूढ़ी माँ के गालों पर चुम्बन लिया।

दूसरे दिन मादाम रेकुन और बूढ़े मैचाड के बीच बातचीत हुई। उन दोनों ने एक दूसरे को अपनी-अपनी कोशिश के नतीजे बताये। उन्होंने फैसला किया कि दोनों की सगाई आज ही शाम को कर देनी चाहिये।

उस शाम को ५ बजे मैचाड लारां के आने से पहले ही दुकान में मौजूद था। लारां ज्यों ही आकर बैठा मैचाड ने ऐलान किया—"थरेसा सहमत है!" थरेसा यह भद्दा और सीधा एलान सुनकर पीली रही और वह लारां की तरफ घूरती रही। पहले की तरह ही लारां और थरेसा ने एक दूसरे की तरफ एक क्षण के लिये देखा जैसे वह एक दूसरे से सलाह कर रहे हों। दोनों फौरन भांप गये कि उन्हें इस बात को मान लेना चाहिये। लारां उठा और उसने मादाम रेकुन के पास जाकर उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। बूढ़ी औरत अपने आँसुओं को रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा रही थी। लारां ने मुस्कराते

हुए कहा—"प्यारी माँ ? मैंने अपने बुजुर्ग मैचाड से तुम्हारी खुशी के बारे में रात को बातचीत की थी। तुम्हारे बच्चे तुम्हें खुश देखना चाहते हैं।"

जब बूढ़ी औरत को लारां ने "प्यारी माँ" के नाम से पुकारा तो वह रोने लगी और उसने तेजी के साथ थरेसा का हाथ लारां के हाथ में दे दिया। हाथ मिलते ही लारां और थरेसा का शरीर काँप उठा। उनकी उँगलियाँ जल रही थीं।

"थरेसा क्या तुम्हारी यह इच्छा है कि हम दोनों तुम्हारी फूफी की जिन्दगी को खुश बनायें ?"

"हाँ" थरेसा ने धीमी आवाज में कहा—हमें यह कर्त्तव्य पूरा करना है।"

इसके बाद लारां मादाम रेकुन की तरफ मुड़ा और बोला—"जब मेरा गरीब दोस्त पानी में गिर पड़ा तो वह चिल्लाया, मेरी बीबी को बचाओ। मैं उसे तुम्हारे हवाले करता हूँ।" थरेसा से शादी करके मुझे यकीन हो रहा है कि मैं अपने दोस्त की आखिरी इच्छा को पूरा कर रहा हूँ।"

थरेसा ने जब लारां के ये शब्द सुने तो उसने लारां का हाथ छोड़ दिया। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके दिल पर कोई भारी चोट पड़ी है। मादाम रेकुन ने हिचकियाँ लेते हुये कहा—"मेरे दोस्त ! मेरे प्यारे बेटे ? थरेसा से शादी करलो। मेरा बेटा अपनी कब्र में तुम्हारा धन्यवाद करेगा।"

शादी का फैसला हो गया। कातिलों ने वह इच्छा पाली थी जिसकी कि वह तलाश में थे। आने वाली शुक्रवार को उनकी शादी का ऐलान कर दिया गया। बूढ़े मैचाड का दिल बल्लियों उछल रहा था और वह बार-बार कह रहा था "इस शादी का ख्याल मुझे सूझा था।"

अभी शादी की रसम का पूरा किया जाना बाकी था। लारां को

अपने बाप की स्वीकृति लेने के लिये पत्र लिखना था। बूढ़ा किसान भूल भी चुका था कि उसका कोई बेटा पेरिस में भी है। उसने पत्र लिखा कि उसका बेटा शादी तो क्या अगर आत्महत्या भी करना चाहता है तो कर सकता है। वह उसके लिये एक पाई भी छोड़ नहीं जायेगा। वह जिन्दगी में जितनी उद्दंडता करना चाहे उसे उसकी पूरी आजादी है।

लारां के बाप का पत्र सुनकर मादाम रेकुन के दिल में बहुत ही सहानुभूति की भावना पैदा हुई। उसने अपने नरम दिल के कारण एक उद्दंडता कर दी। उसने अपनी भतीजी के दहेज के तौर पर ४० हजार फ्रांक अपनी सारी उमर की पूंजी थरेसा के नाम लिख दी। लारां ने कहा कि वह नौकरी छोड़ देगा और चित्रकारी किया करेगा। ४० हजार फ्रांक के अलावा दुकान से होने वाली आमदनी उन तीनों को अच्छी तरह जिन्दा रखेगी।

शादी की तैयारियों पर जोर दिया गया। कम से कम रसम की पाबन्दी की सलाह दी गई। ऐसा मालूम होता था कि हर कोई लारां को थरेसा के बाजुओं में ढकेलने के लिये चिन्तित था। आखिरकार निश्चित दिन आ पहुँचा।

२०

उस सुबह को लारां और थरेसा अलग अलग कमरों में बेचैन हुए अपने आप को यकीन दिला रहे थे कि डरावनी रातें खतम हो चुकी हैं।

वह अकेली रात नहीं गुजारेंगे। अब वह डूबे हुए व्यक्ति के खिलाफ अपनी रक्षा अच्छी तरह कर सकेंगे।

एक सप्ताह पहले मादाम रेकुन ने यह देखकर कि लारां के पास फूटी कौड़ी भी नहीं थी। एक बटुआ उसके हाथ में थमा दिया जिसमें ५०० फ्रांक थे। यह उसने अपनी आमदनी से जमा कर रखे थे। लारां ने इस रकम को बिना किसी विरोध के स्वीकार कर लिया था। बूढ़ी औरत के रुपये से लारां ने नसिर्फ अपने लिये कपड़े खरीदे बल्कि थरेसा के लिये कुछ तोफे भी।

नई पोशाक गर्दन पर जहां दाग था वहां काट रही थी। लारां ने अपनी बेचैनी में अपनी पोशाक के कौलर को तोड़ मरोड़ दिया था कि कफदार कालर नरम पड़ जाये। आज उसके कालर के नीचे वह दाग जल रहा था। रिस रहा था।

गिर्जाघर जाते हुए लारां ने अपने दफ्तर के दो साथी अपने साथ ले लिये ताकि वह गवाह बन सकें। आलवर और ग्रीयूट थरेसा की तरफ से गवाह बने। म्युनिस्पल कमेटी के हाल में तमाम रसमें अच्छी तरह पूरी हो गईं। उन्होंने पादरी के पवित्र शब्दों में "हमें स्वीकार है" कुछ इस तरह से और भरी हुई आवाज में कहा कि बूढ़ा ग्रीयूट भी प्रभावित हुआ।

यह फैसला हुआ कि शादी की दावत परिवार और उसके मित्रों तक सीमित रहे और यह दावत किसी रैस्टुरैंट में होनी चाहिये। शाम के छै बजाने के लियेबरात मोटरों में इधर उधर घूमती रही और फिर एक ऐसे रैस्टुरैंट में खाना खाया गया जिसकी दीवारों से भी शराब की दुर्गन्ध आ रही थी।

खाना खाते वक्त लारां और थरेसा ने सुबह सुबह जो खुशी अपनी रगों में महसूस की थी अब गायब हो चुकी थी। वह घटनाओं को यूं हीं गुजरता हुआ देख रहे थे। वह यूँ ही मुस्करा रहे थे। उन्हें किसी चीज

की आशा नहीं थी। उनकी दिल की गहराइयों में एक दर्दनाक चिन्ता बैठ गई थी।

मादाम रेकुन दिल ही दिल में विवाहित जोड़े की कृतज्ञ थी। ग्रीयूट ने जब नौजवान जोड़े के लिये जाम की राय देते हुए कहा—"मैं अपने जवान दोस्तों के बच्चों के लिये जाम पीता हूँ।" तो मियां-बीवी दोनों का रंग पीला पड़ गया। उनके भ्रम में भी नहीं था कि एक दिन उनके यहां बच्चे होंगे।

खाना जल्दी खतम कर लिया गया और ९ बजे बरात डपान्ट नीयूफ गली में पहुँची। नकदी गहने बेचने वाली औरत अभी तक गली में मौजूद थी और उसने नये विवाहित जोड़े का मुस्कराहट के साथ स्वागत किया। उन्होंने इस औरत को मुसकराते हुए पाया तो उनकी रगों में डर की लहर दौड़ गई। शायद वह औरत उनकी पहली मुलाकात का हाल भी जानती थी।

थरेसा को फौरन मादाम रेकुन और सौज़ीन उनके सोने के कमरे में ले गई। मर्द खाने के कमरे में रहे। मादाम रेकुन शादी का मजाक करते हुए बाहर निकली उसने भावुकतापूर्ण आवाज़ में लारां से कहा कि उसकी बीबी उसका इन्तज़ार कर रही है, लारां चौंका और घबराहट की की हालत में उसने सब से हाथ मिलाया और एक शराबी की तरह थरेसा के कमरे में दाखिल हुआ।

◉

२१

लारां ने बड़ी सावधानी के साथ दरवाजा अपने पीछे बन्द कर दिया और दरवाजे से टेक लगा कर एक क्षण के लिये खड़ा हो गया।

अंगीठी में तेज़ आग जल रही थी, दीवार पर लपटें नाच रही थी, मादाम रेकुन ने कमरे की सजावट पर बहुत जोर दिया था और यह कमरा चूने और सुगन्ध से पूर्ण था। अंगीठी के ऊपर दो बर्तनों में फूल थे। पलंग से रंगीन फीते लटक रहे थे। यह कमरा एक सुन्दर बैठक था।

थरेसा अंगीठी के पास एक नीची कुर्सी पर बैठी हुई थी उसकी ठोडी उसकी हथेली पर थी, वह लपटों को घूर रही थी, जब लारां कमरे में दाखिल हुआ तो उसने मुड़ कर उसे देखा तक नहीं। उसने जब थरेसा को इसतरह चुपचाप देखा तो वह बुझ सा गया; जब थरेसा ने लारां की तरफ देखा तो उसकी नजर में निकटता की बजाये दूरी थी। लारां थरेसा के बराबर बैठ गया, उनको इस तरह एक कमरे में अकेले मिले दो साल हो चुके थे, वह उस वक्त से नहीं मिले थे। जब थरेसा एक ग्राहक से रुपये लाने के बहाने लारां के पास उसके होटल में गई थी। और लारां को कमील्लस के कतल का ख्याल सूझा था।

अब वह एक दूसरे की तरफ बिना किसी इच्छा के देख रहे थे। उनके कठोर स्वप्न एक भयानक सच्चाई पर खतम हुए थे। उन्होंने कमील्लस का कतल कर दिया था, उन्हों ने शादी कर ली और अब एक नाराजगी सी पैदा हो रही थी। नजदीकी के बजाये दूरी जन्म ले रही थी।

उन्हों ने अपने दिल की गहराइयों को झंझोर कर देखा कि शायद वहां कोई भावना, कोई इच्छा, कोई मांग पड़ी मिल जाये। लेकिन उनका दिल एक खुला मैदान था जिस पर कोई चीज नहीं थी।

"थरेसा" लारां ने दबी जबान में कहा—"तुम्हें इस कमरे में वह दोपहरें तो याद होंगी। मैं इस दरबाजे से आया करता था और आज मैं इस दूसरे दरवाजे से आया हूँ। अब हम शांति पूर्वक और आजादी से प्यार कर सकते हैं।" थरेसा अभी तक आग को घूर रही थी।

"तुम्हें याद होगा। मैंने एक स्वप्न देखा था कि पूरी रात तुम्हारे साथ गुजारूँ। तुम्हारे बाजुओं में सुबह कर दूँ। मैं आज उस स्वप्न को सच बनाने वाला हूँ।"

थरेसा ने तेजी के साथ अपने आपको हरकत में किया। वह गुन-गुनाती सी आवाज में रो रही थी।

लारां ने कहना जारी रक्खा—"थरेसा हम अपने उद्देश्य में काम-याब हो गये हैं। अब हम एक दूसरे के हैं। भविष्य हमारा है। क्या नहीं है? खुशी और शान्ति का भविष्य। कमीलस जा चुका है।"

कमीलस का नाम लेते ही लारां का गला खुश्क हो गया। वह उससे आगे कोई बात न कह सका।

थरेसा ने उसकी बातों का जवाब देने की कोशिश की। वह बे मतलब बातें करते रहे। इस बात के बावजूद कि वह भविष्य की बातें कर रहे थे। भूत काल उनकी समझ में बार-बार पलट आता था। उनके शब्द एक दूसरे की जिद थे। लारां जब फूलों की बातें करता तो थरेसा को किश्ती में कमीलस का संघर्ष याद आता और जब थरेसा कोई बात कहती तो लारां को कमीलस की गली-सड़ी लाश याद आती।

इन दोनों की नजरें एक दूसरे के शरीर में और दिमाग में प्रवेश कर रही थीं और जो कुछ उनकी समझ व दिल में गुज़र रहा था उसे

देख रही थीं। लारां और थरेसा ने अपनी बातचीत अपनी मुलाकात से शुरू की थी लेकिन उस बातचीत की तान उनकी दुखदायी इन्तजार और उनको जागने की दशा पर टूटी थी। अचानक उन्होंने ऊंची आवाज में बातें शुरू कर दीं। "तुमने गारग में कमीलस को देखा था।"

"हाँ।" और फिर दोनों कातिल काँप उठे।

"क्या उसके चेहरे पर तकलीफ के चिन्ह थे?

लारां इसका जवाब न दे सका। बजाये इसके उसने अपनी गर्दन का दाग थरेसा के होठों की तरफ बढ़ा दिया और बोला—"इसका चुम्बन लो।" लारां की गर्दन यूँ ही खींची की खींची रही और थरेसा ने उसकी गर्दन के दाग का चुम्बन नहीं लिया।

यह क्या है। मुझे यह खबर नहीं थी कि तुम्हारी गर्दन पर दाग भी है।" थरेसा बोली—"यह दाग......लारां ने हकलाते हुए कहा—"यहाँ कमीलस ने दाँत काटे थे। इसका चुम्बन लो थरेसा।" वह चाहता था कि थरेसा इस दाग को चूम ले ताकि इस दाग की जलन हमेशा के लिए दूर हो जाये। थरेसा इस दाग की कहानी सुनकर पीछे हट गई। "नहीं यहाँ नहीं। इस दाग पर खून के छींटे हैं।"

यह सुनकर लारां ने जंगली जानवर की तरह थरेसा के सिर को अपने हाथों में ले लिया और जबरदस्ती उसके होंठ अपनी गर्दन से चिपका दिये। थरेसा के मुँह से चीख निकल गई और लारां अपनी इस दरिन्दगी पर पछताया उसने थरेसा के होठों को बर्फ की तरह सर्द पाया। अंगीठी की लपटों की तरफ घूरते हुए उसने दीवार की तरफ देखा। आग पर से नजर हटाकर उसने जब कमरे की हल्की रोशनी में नजर दौड़ाई तो उसकी नजर धुँधली पड़ चुकी थी। उसने दीवार पर कमील्स की बच्ची को उभरते हुए देखा। डर के मारे उसके मुँह से चीख निकल गई।

"देखो वह रहा कमीलस ! हमारी तरफ बढ़ रहा है। लारां पुकार उठा—"वह कमीलस नहीं है उसकी तस्वीर है।"

"तस्वीर ?

"हाँ तस्वीर जो तुमने बनाई थी।"

कातिल ने अपनी बनाई हुई तस्वीर को देखा। उसे यकीन नहीं आया कि कमीलस के इतने खुरदरे और सख्त अंग उसकी कला की पैदावार थे।

"उठो और इस तस्वीर को उतार कर कहीं रख दो।"

"नहीं मुझे डर लगता है।" थरेसा ने जवाब दिया।

"मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ।"

"नहीं।"

बुजदिली के साथ कातिल थरेसा को घसीट कर तस्वीर के पास ले गया और फिर अचानक उसे न जाने क्या ख्याल आया। वह बोला—"नहीं हमें यह तस्वीर यहीं टंगी रहने देना चाहिये। इसको उतारने का हक तुम्हारी फूफी को है।"

वह दोनों देर तक खामोश रहे। इस खामोशी में उन्होंने अपने सोने के कमरे के दरवाजे के पीछे एक सरसराहट सी सुनी—"यह कौन है। इस दरवाजे से कौन अन्दर आ रहा है।" लारां ने उस दरवाजे की तरफ देखते हुए कहा। इतने में किवाड़ धीरे से खोल कर मादाम रेकुन की बड़ी बिल्ली कमरे में दाखिल हुई। लारां सोच रहा था कि इस बिल्ली क सब कुछ मालूम है। वह बिल्ली की नजरों से नजरें न मिला सका। वह बिल्ली के ठोकर मारना चाहता था। थरेसा चिल्लाई—"ऐसा न करो।"

लारां ने सोचा—"कमीलस इस बिल्ली के अन्दर समा गया है। उसे इस बिल्ली को खत्म कर देना चाहिये। उसने बिल्ली के ठोकर लगाने से परहेज किया। उसे डर था कि बिल्ली अगर चीखी तो यह

कमीलस की चीख होगी। उसे यकीन हो चुका था कि बिल्ली उसके बारे में बहुत कुछ जानती थी। वह उसे खिड़की से बाहर फेंक देना चाहता था। बिल्ली ने अपना रोज का रंग-ढंग कायम रक्खा। उसके पंजे फैले हुये थे और गुस्से में उसकी पीठ उभरी हुई थी। लारां ने डरते हुए खाने के कमरे का दरवाजा खोल दिया और बिल्ली फौरन उस तरफ चली गई।

थरेसा बुझी हुई आग के आगे बैठी रही और लारां खिड़की से पलंग तक और पलंग से खिड़की तक घूमता रहा। दोनों इसी तरह सुबह के इन्तजार में थे। वह बिस्तर पर लेटना नहीं चाहते थे। उनके दिल और उनके शरीर दोनों सर्द पड़ गये थे। उनकी लम्बी खामोशी उन्हें तकलीफ दे रही थी। यह खामोशी कढ़वी यादों से भरी थी।

आखिरकार खिड़की में से दिन का प्रकाश उदय हुआ। थरेसा बिस्तर के कपड़ों को झाड़ रही थी। वह अपनी फूफी के सामने यह जाहिर करना चाहती थी कि उन्होंने रात आराम के साथ गुजारी।

लारां ने खिसियाना होकर कहा—"शायद आज की रात हम आराम से सो सकें.........यह नादानी जारी नहीं रह सकती।"

थरेसा ने उसकी तरफ ठंडी और गम्भीर नजरों से देखा। लारां ने अब भड़कते हुये कहा—"तुमसे शादी मैंने इसलिये नहीं की कि रात जाग कर काटूँ। हम बच्चों की सी हरकत कर रहे हैं। तुमने अपनी सच्ची यादों से मुझे परेशान किया है। आज रात मैं तुम से यह आशा करूँगा कि तुम मुझे अपनी यादों से इस तरह भयभीत न करो।"

वह जबरदस्ती की हँसी हँसा। वह नहीं जानता था कि वह क्यों हँस रहा है।

"मैं कोशिश करूँगी।" थरेसा ने उदासी के साथ कहा। लारां और थरेसा की शादी की रात कुछ इस तरह की थी।

२२

आने वाली रातें और भी ज़ालिम और कठोर थीं। कातिलों ने यह चाहा था कि वह डूबे व्यक्ति के खिलाफ रात को एक साथ रहें लेकिन उनके मिलाप का अजीब ही नतीजा निकला था। वह इकट्ठे होते तो और भी ज्यादा भयभीत होते। वह एक दूसरे को परेशान करते। एक दूसरे को उकसाते। एक शब्द भी मुँह से निकाले बिना दुख और बेचैनी से बेजार होते। थरेसा से मिलने से पहले लारां एक किसान के बेटे की सी अच्छी और धनी जिन्दगी गुजारता रहा था। वह एक जानवर की तरह खाता और सोता। वह दिन भर एक प्रसन्नता-पूर्वक शान्ति महसूस करता। थरेसा ने उसके मजबूत और भारी वज़नदार शरीर को बेचैन कर दिया था। वह अपनी धैर्य, अपनी मजबूरी और अपनी शान्ति खो बैठता। अब वह गाफ़िल नहीं रहता था। इसीलिए वह अंधेरे कोने से, दीवार पर परछाईं से और भी अपने स्वप्नों से डरता था। लेकिन उसकी आत्मा उसे इस बात पर नहीं सताती थी कि उसने कमीलस को कत्ल कर दिया है। उसने एक बार और कत्ल का काम किया होता। अगर वह सोचता कि उससे उसे फायदा होगा। दिन को वह अपने डर पर हँसता। उसका ख्याल था कि थरेसा की मौजूदगी से उस पर डर छा जाता है। रात को जब वह अपनी बीवी के साथ कमरे में बन्द होता तो उसके शरीर पर बर्फ की तरह सर्द पसीना उभर आता। थरेसा ने उसे एक न करने योग्य बीमारी में ग्रसित कर दिया था।

थरेसा पर भी डर व बेचैनी के सख्त दौरे पड़ते लेकिन इस बेचैनी से वह दस वर्ष की उमर से आदी थी। यह उसका स्वभाव भी बन गया था और उसके लिए मामूली बात होने के कारण बेचैनी उसके लिए कष्टदायक नहीं रही थी। डर जब उस पर छाता तो उसकी आदत उस से सामना करती। वह कमीलस की तस्वीर के आगे घुटनों के बल झुक कर उससे दया मांगना चाहती, वह पश्चाताप और धिक्कारना चाहती थरेसा पर बुजदिली के जो दौरे पड़ते थे लारां उससे परिचित था। शादी की पहली रातें उन्होंने बिस्तर पर लेटे हुए बिना गुजार दीं। वह अंगीठी के सामने बैठकर सुबह होने का इन्तजार करते। जहाँ तक उनसे सम्भव होता वे नींद को रोकते। कभी कभी उन्हें मालूम होता कि कमीलस कुर्सी उठा कर उनके बीच आ बैठा है और उनकी बातें सुनता रहा है।

एक सप्ताह तक नये विवाहित जोड़े ने रातें यूं ही गुजार दीं। वह दिन को आराम करते और रात जाग कर काटते और दुख उठाते। सोचते सोचते खुद को निढाल कर लेते। आखिरकार एक रात वह बुरी तरह थक गये और उन्होंने बिस्तर पर लेटने का फैसला किया। वह कपड़ों के साथ पलंग पर ढेर हो गये। वह नहीं चाहते थे कि उनके शरीर एक दूसरे से अलग हों। दो रातें इस तरह गुजर गईं। तीसरी रात को उन्होंने रात के स्वप्न की पोशाक पहनी। लेकिन एक दूसरे से हट कर लेटे। वह दोनों इस बात की बड़ी सावधानी रखते कि उनके शरीर आपस में छूने न पायें। उन दोनों के बीच बहुत चौड़ी जमीन रहती और इस जमीन में कमीलस की लाश लेटी रहती। वह दोनों कमीलस की मौजूदगी महसूस करते। अगर लारां का कभी दिल भी चाहता कि वह थरेसा के गले में बाहें डालदे तो वह कमीलस की लाश से जा टकरायेगा। कभी कभी लारां थरेसा से चुम्बन देने के लिये मजबूर करता। उनके होंठ इतने ठंडे थे कि ऐसा मालूम होता जैसे उनके होठों के बीच मौत ने डेरा डाल दिया हो। थरेसा होठों की इस ठंडक से

कांप उठी । लाराँ के दाँत बजने लगे लेकिन वह क्रोधित हो जाता । वह चिल्ला उठता—"तुम काँप क्यों रही हो ? क्या तुम्हें कमीलस से तो डर नहीं लगती। अब तो उसकी हड्डियाँ भी गल गई होंगी ।"

वह दोनों अपने डर के कारण का एक दूसरे के सामने स्वीकार करने से परहेज करते ।

"हाँ हाँ मैं जानता हूँ कि तुम कमीलस से डरती हो । तुम बेवकूफ हो । तुम में एक चुहिया जितना भी हौसला नहीं है । तुम्हारा ख्याल है कि मेरे होते तुम्हारा पहला पति यहाँ आकर तुम्हारे ऊपर से चादर खींच लेगा ।" यह ख्याल और यह शक कि डूबा हुआ व्यक्ति सचमुच यहाँ पहुँच कर उनके ऊपर से चादर खींच लेगा, उन दोनों के रोंगटे खड़े कर देता ।

लारां कहता—"हमने उसे नदी में फैंक दिया क्योंकि वह हमारे रास्ते में रुकावट था । क्या हम उसे दोबारा नदी में नहीं फेंक सकते थे ? क्यों डरती हो । इधर आओ । मुझ से लिपट जाओ ।"

थरेसा उसके पास आ गई लेकिन वह बर्फ की सिल बनी हुई थी

लारां दो सप्ताह तक यही सोचता रहा कि उसे एक बार फिर से कमीलस को कत्ल करना चाहिये । वह नदी में डूब कर भी जिन्दा था । वह हर रात को थरेसा और उसके बीच सोने के लिये चला आता था । कातिलों ने यह ख्याल किया था कि उन्होंने बड़ी सफलता के साथ कत्ल का काम किया है। लेकिन कमीलस उनके बिस्तर को सुनसान बनाने के लिए बिना नागा आ धमकता था । थरेसा विधवा नहीं थी लेकिन लारां महसूस कर रहा था कि उसने एक ऐसी औरत से शादी की है जिसका पति जिन्दा है और पति भी कैसा एक डूबा हुआ आदमी ।

२३

धीरे-धीरे लारां पागलपन की सीमा तक पहुँच गया। उसने इरादा कर लिया कि वह अपने विस्तर से कमीलस को भगाकर रहेगा। पहले वह कपड़ों के साथ सो जाता था और थरेसा से जरा दूर हट कर लेटता था लेकिन अब उसने उदासी और गुस्से की हालत में यह फैसला किया कि वह थरेसा को अपने बाजुओं में कुचल कर रहेगा। उसे याद आया कि थरेसा से उसने इसलिये शादी की थी कि वह रात के अपने भयानक स्वप्नों को मार भगायेगा। एक रात को उसने थरेसा को अपने पहलू में जोर से दबा लिया। थरेसा भी इस हालत से तंग आ चुकी थी। उसते लारां को खूब जवाब दिया। उसके बावजूद डूबा हुआ व्यक्ति उनके बीच मौजूद था। वह दोनों जानते थे कि इस तरह वह अपनी मुसीबतों को बढ़ा रहे हैं। उनकी आलिंगन खुद को धोखा देना था। उन्हें इस आलिंगन से तकलीफ़ हो रही थी। उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था कि डूबा हुआ व्यक्ति उनके ऊपर से चादर खींच रहा है। उन्होंने इस अप्रसन्नता और हालत पर विजय पाने के लिये हाथ-पांव मारे लेकिन बेफायदा। वह दोनों एक दूसरे से अलग हो गये। और ठंडी आहें भरने लगे। उन्होंने अपनी सिसकियों में कमीलस को हँसते हुये सुना। वह कमीलस को बिस्तर पर से मार भगाने में असफ़ल रहे। उन्होंने यह आखिरी बार कोशिश की थी। और अब वह अपनी हार पर यह महसूस कर रहे थे कि अब वह कभी भी आलिंगन नहीं कर

सकेंगे। उस मजनुनाना प्रेम ने जिससे उन्होंने अपने डर को खतम करना चाहा था, उन्हें और भी ज्यादा गहरे डर के अंधेरे में ढकेल दिया था। यह महसूस करते हुए कि उनके बीच एक ठंडी लाश रुकावट थी। वह खून के आँसू रोये। वह दुख और बेचैनी की हालत में एक दूसरे से नजरों ही नजरों में यह सवाल कर रहे थे। अब उनका क्या नतीजा होगा।

२४

लारां और थरेसा को एक रिस्ते में बाँधकर जैसा कि बूढ़े मैचाड ने सोचा था, शुक्रवार की शाम फिर शुरू हो गई थी' कमीलस की मौत के बाद मेहमानों का यह खटका लगा रहता था कि एक दिन यह मजलिश ठप हो जायेगी। यह सोचते ही मैचाड और ग्रीयूट उदास हो जाते थे। फिर जब थरेसा की उदासी का जमाना शुरू हुआ तो मेहमान मेल-जोल की बजाय एक गैरपन सी महसूस करते। इस गैरपन को दूर करने के लिये मैचाड ने इस शादी के लिये एड़ी चोटी का जोर लगाया था।

शादी के बाद के शुक्रवार को ग्रीयूट और मैचाड दुकान में विजयी की तरह दाखिल हुए। यह घर एक बार फ़िर उनका अपना घर था। वह सोच रहे थे कि इस घर में वहुत बड़ा परिवर्तन हो चुका है। कमीलस की याद भी अब इस घर में नहीं रही। भूतकाल अपनी सब खुशियों के साथ फिर जन्म ले चुका था। थरेसा कभी कभी उन लोगों

के आने पर आपत्ति करती लेकिन लारां उसे चुप रहने को कहता। पुलिस अफसरों की मौजूदगी इसलिये जरूरी था कि उन पर कोई किसी तरह का शक न करे।

इन्हीं दिनों में लारां और थरेसा का दोहरा जीवन शुरू हुआ।

सुबह को लारां तेजी के साथ पोशाक बदलता। काफी के बड़े प्याले और गरम-गरम दूध के साथ नास्ता करता जो उसके लिये थरेसा तैयार करती। जब वह बहुत जल्दी से टोस्ट खाता तो मादाम रेकुन अब तो बहुत कमजोर हो गई थी, उसे देखकर बहुत खुशी होती। नास्ता करते ही लारां ताजा-दम हो जाती। उसके चेहरे पर एक ताजगी और एक खुशी पैदा हो जाती। वह दफ्तर पहुँचता और सारा दिन जमाहियाँ लेता रहा। उस वक्त उसे यही ख्याल आता कि वह त्याग-पत्र देदे और चित्रकारी शुरू करदे। शाम को वह बड़ी नाराजगी के साथ लौटता उपान्ट-नियूफ गली की दुकान उसके लिये डराबनी जगह बन चुकी थी।

थरेसा भी कुछ इस तरह की हालत से गुज़र रही थी। जब तक लारां उसके पास रहता। वह बेचैन रहती। उसने नौकरानी को जबाब दे दिया था। बात यह थी कि वह हर वक्त अपने आप को व्यस्त रखना चाहती थी। वह कमरे में झाड़ू लगाती। बर्तन धोती, कपड़े धोती, फिर वह रसोई में जाकर खाना तैयार करती। मादाम रेकुन थरेसा के हर वक्त काम पर लगे रहने पर हैरान होती। खाना तैयार करने के बाद थरेसा नीचे जाकर काउन्टर पर खड़ी हो जाती। रात को बेचैनी से ऊंघती रहती। उसको नींद नहीं आती। जब कोई ग्राहक दुकान में दाखिल होता तो अपनी आँखें खोल देती। कुछ सामान कागज़ में बाँध देती और उसे ग्राहक को पकड़ा देती। दुकान की नमी को महसूस करते हुए उसे एक बार फिर यह ख्याल आता कि उसे इस दुकान में जिन्दा दबा दिया गया है। ४ बजे वह दोबारा रसोई में दाखिल होती और लारां का खाना बनाती और जब लारां दुकान में दाखिल होता तो

थरेसा का चेहरा पहले की तरह फिर सुस्त हो जाता। शरीर के अंग खिंच जाते और वह फिर बेचैन हो जाती। शाम इसके बावजूद अच्छी गुजरती। थरेसा और लारां दोनों अपने कमरे में जाने के ख्याल से काँप उठते और कोशिश करते कि ज्यादा देर तक दुकान में रहें। आरामकुर्सी में धंसी हुई मादाम रेकुन उनकी तरफ देखती रहती और कभी कभी मुस्करा देती।

शुक्रवार की शाम को उन्हें जरा तकलीफ होती क्योंकि उस वक्त वह दोनों एक दूसरे की मौजूदगी को कुछ क्षणों के लिये भूल जाते। थरेसा अब भी शुक्रवार की शाम का बेचैनी के साथ इन्तजार करती। वह तो अपने आपको यहाँ तक तैयार पाती कि अगर किसी रोज ग्रीयूट और मैचाड नहीं आयेगें तो वह उनको खुद ले आयेगी। मेहमानों की मौजूदगी में लारां उसके दिमाग का बोझ न रहता। वह चाहता था कि मेहमान हर वक्त उसके घर में मौजूद रहें। इस तरह सप्ताह में एक बार वह कांपे बिना एक दूसरे का सामना करते।

एक दि। उन दोनों पर एक नया डर छा गया। मादाम रेकुन को लकवा मार गया। अब उन्हें यह डर था कि मादाम रेकुन आरामकुर्सी पर हर बक्त उनके सामने बेहोश-बे हरकत पड़ी रहेगीं। मादाम रेकुन कुछ ऐसे वाक्य मुँह से बोलती कि लकेव की वजह से वह बिल्कुल समझ में न आते। उसकी आवाज बहुत कमजोर हो चुकी थी। और उसके अंगों ने काम करने से इन्कार कर दिया था। मादाम रेकुन की आवाज उनके बुरे स्वप्नों को और भी ज्यादा भयभीत बना देती। अब उनका दुख और बेचैनी रात के ११ बजे की बजाये शाम के ६ बजे ही शुरू हो जाती।

उन्होंने बुढ़िया के इलाज के लिये दोड़-धूप की, डाक्टर आया, दवायें आई। वह हर वक्त उसके हाल को जानने में लगे रहते। उधर मादाम रेकुन ने अपने बेटे की मौत की बाद से इतनी खुशी कभी

महसूस नहीं की थी। अपने बच्चों के इस ध्यान पर उसका दिल भर आता। जी ही जी में वह बहुत खुश होती। थरेसा और लारां अभी तक अपनी दोहरी जिन्दगी गुजार रहे थे। इन दोनों में से हर एक में दो भिन्न २ रूप थे। एक रूप तो बेचैन और डरावना था जो अंधेरे के फैलते ही कांपने लगता था। और दूसरा सुस्त व निकम्मा और खुद को भूल जाना था। जो सुबह के होते ही आशा का सांस लेने लगता था। वह दोनों ही जिन्दगियाँ गुजार रहे थे। एक जिन्दगी तो वह थी जब वह दोनों अकेले होते तो दर्द और तकलीफ से चिल्लाते और दूसरी जिन्दगी यह थी कि लोगों की मौजूदगी में वह खुश और सन्तुष्ट नजर आते।

मैचाड प्रायः-कहा करता—"मियाँ बीबी कितने खुश हैं। वह ज्यादा बातें नही करते लेकिन ज्यादा सोचते जरूर हैं।"

उनके सभी जानने वालों की यही राय थी। कभी कभी तो लाराँ और थरेसा को एक आदर्श जोड़ा समझा जाता। लेकिन दोनों ही जानते थे कि कमीलस की लाश उनके बीच रुकावट है और उनकी रातें डरावनी हालत में गुजरती हैं।

२५
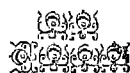
शादी को चार महीने बाद लारां ने सोचना शुरु किया कि "उसे इन फायदों से आनन्द लेना चाहिये। जिसके वह स्वप्न देखता रहा है और जिनका उसने अपने आपसे शादी हो जाने पर वायदा किया था।

वह अपनी बीबी को छोड़ देता और कमीलस की परछाईं से दूर भाग जाता, अगर उसके दिमाग में शादी के बहम न होते। वह रात को कष्टों को सह लेता, दिन भर असंख्य कष्टों का शिकार होता केवल इस लिये कि अपने अपराध के लाभों सेआनन्द ले सके। अगर वह थरेसा को छोड़ जायेगा तो फिर वह गरीब हो जायेगा, थरेसा के साथ रह कर वह मादाम रेकुन के४० हजार फ्रांक की आमदनी से कुछ किये बिना जिन्दगी गुजार सकता है। यह भी सम्भव था कि अगर यह ४० हजार फ्रांक नकदी में तबदील हो सकते तो वह उन्हें लेकर फरार हो जाता, इन बातों ने लारां को थरेसा के साथ मिला रखा था।

एक शाम को उसने मादाम रेकुन और थरेसा को बताया कि उसने त्याग-पत्र दे दिया है और वह दो सप्ताह तक हमेशा के लिये अपनी नौकरी छोड़ देगा। थरेसा ने इस बात पर चिन्ता प्रकट की,उसने फिर जल्दी ही आगे कहा कि वह एक छोटा सा स्टुडियो किराये पर ले रहा है और चित्रकारी शुरु कर रहा है। अब क्यों कि उसके पास थोड़ा सा पैसा है वह प्रसिद्धि प्राप्त कर सकता है। बातें करते हुए लारां कुछ इतनी तीखी नजरों से थरेसा की तरफ देख रहा था जैसे कह रहा हो। "आज तुमने इंकार किया तो मैं सब कुछ बता दूंगा।" अतःयह फैसला किया गया कि चित्रकार एक स्टुडियो किराये पर लेगा और उसे सौ फ्रांक मासिक खर्च के लिये मिलेंगे।इस नये खर्च के अनुसार परिवार का बजट बनाया गया।

दूसरे ही दिन लारां ने एक छोटा सा स्टुडियो किराये पर ले लिया। इस स्टुडियो पर एक महीने से उसकी नजर थी। वह अपनी नौकरी को एक नया ठिकाना ढूंढे बिना नहीं छोड़ सकता था। दो सप्ताह के बाद वह अपने साथियों से जुदा हुआ और अपने स्टुडियो में चला आया। यह स्टुडियो एक गुफा की तरह था। इसकी दिवारें भूरे और मैले रंग की थी। लारां ने इसको उस वक्त के फैशन के अनुसार सजाया वह दो कुर्सियां

लाया जिनकी सीटें टूटी हुई थीं एक मेज लाया जिसने उसको कठिनाई से दिवार के साथ टेक लगा कर पैरों पर उसे खड़ा किया ताकि गिर न पड़े । इस स्टुडियो में एक बड़ा कौच हीऐश्वर्च की चीज था । उसने इस स्टुडियो में दो सप्ताह हाथ में बुर्स पकड़े बिना गुजार दिये । वह सुबह आठ या नौ बजे आता , कोच पर लेट कर सिगरेट पीता । दोपहर होते तो वह सोंचता रात में अभी बहुत देर है,

बेकारी और आलस ने उकताहट पैदा की, उसने कैनवस खरीदी और काम शुरु कर दिता,उसके पास इतना रुपया नहीं था कि वह किसी मौडल-औरत को किराये पर लेता,इसलिये उसने अपनी समझ ही की मदद से तसवीरें बनाना शुरु कर दी । इसके अलावा वह सिर्फ दो तीन घंटों तक तसवीर बनाता और पेरिस के बाजारों की सैर करता । एक दिन उसकी मुलाकात कालिज के अपने एक पुराने दोस्त से हुई जो अपन उद्देश्य में सफल हो चुका था और प्रसिद्धि भी प्राप्त कर चुका था ।

चित्रकार ने उसे देखते ही कहा-"ओ हो तुम" प्यारे लारां मैं तो तुम्हें पहचान ही नहीं सका ।तुम बहुत दुबले हो रहे हो ।"

" मैं शादी कर चुका हूँ " लारां ने घबराये हुए ढंग से कहा,

" सचमुच तुमने शादी कर ली है ? "

" हां और मैं ने एक स्टुडियो भी किराया पर लिया है । " लारां ने थोड़े से शब्दों में उसे अपनी शादी का हाल सुनाया और फिर अपने भविष्य की युक्तियें बतायी । उसके दोस्त ने उसकी तरफ हैरानी से देखा ।

" तुम इस पोशाक में सचमुच सुन्दर दिखाई देते हो , एक राजदूत के से कपड़े पहनते हो ! "

" क्या तुम मेरा स्टुडियो नहीं देखोगे ? लारां ने अपने दोस्त को दावत दी ।

" क्यों नहीं । "

स्टुडियों में पहुंचकर उसके दोस्त ने आस-पास नजर दौड़ाई तो वह दीवारों पर तसवीरें देखकर और भी हैरान हुआ ।पांच तसवीर ही दिवारों पर टंगी हुई थीं तीन औरतों के सिर और दो मर्दों के सिर । इन तसवीरों को पूरी मजबूती के साथ बनाया गया था । तसवीरें प्रभा-वशाली थीं । हर तसवीर अपने भूरे आर्न्त दृश्य के मुकाबले में बुर्स की शानदार रंगसाजी का प्रतिनिधत्व कर रही थी । चित्रकार इन तसवीरों को देखकर सचमुच हैरान रह गया ।

यह तसवीरें क्या तुमने बनाई हैं ? "

"हाँ" लाराँ ने जवाब दिया । "इन तस्वीरों को हम अपनी मुख्य तस्वीर के लिये खाकों के तौर पर इस्तेमाल करूँगा ।"

"मजाक नहीं करो यह तस्वीरें सचमुच तुमने बनाई है ।"

"बिल्कुल—मेरी ही बनाई हुई हैं ।"

चित्रकार अभी तक इन तस्वीरों के सामने खड़ा था । "वह तस्वीरें किस चित्रकार की बनाई हुई हैं और तुम तो चित्रकारी को सिर्फ मन-बहलाव समझते रहे हो । इसलिये मुझे यकीन नहीं आता ।"

"चित्रकार देर तक तस्वीरों के सामने खड़ा रहा । उनमें इतना अनोखापन और इतनी शक्ति थी कि वह एक निपुण कला की समझ का पता देती थी । लारां के दोस्त ने ऐसी तस्वीरें कभी नहीं देखी थीं । वह वापिस मुड़ा और बोला—"मुझे मालूम नहीं था कि तुम इतने अच्छे चित्रकार भी हो सकते हो । तुमने यह तेज समझ कहाँ से प्राप्त की । आम तौर पर इस तरह की योग्यता प्राप्त नहीं की जा सकती ।"

यह जिस दुख और बेचैनी में से गुजर रहा था उसने उसे चित्रकार बना दिया था । जाने से पहले उसके दोस्त ने तस्वीरों की तरफ फिर एक बार देखा—"मुझे सिर्फ एक आलोचना करनी है । तुम्हारी सब तस्वीरों की शक्लों में किसी परिवार के लोगों की सी एक रूपता है ।

अगर तुम इन तस्वीरों से कोई एक बड़ी तस्वीर बनाना चाहते हो तो तुम्हें इन शक्लों को जरा बदलना होगा।" और फिर वह दरवाजे तक पहुँच कर बोला—"तुम से मिलकर मैं बहुत खुश हुआ हूँ। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया है। तुम सचमुच एक योग्य नौजवान हो।"

लारां अपने दोस्त को सीढ़ियों तक छोड़कर आया तो उसे और भी ज्यादा दुख हुआ। तस्वीरों में शक्लों की सादृश्यता का उसे पहले भी शक था। वह उन तस्वीरों के सामने खड़ा न रह सका। उसने दूर से उन तस्वीरों की तरफ देखा। पहले तस्वीर एक बूढ़े की थी। दूसरी तस्वीर भूरे बालों वाली एक लड़की की थी और उसकी आँखें कमीलस की आँखें थीं। बाकी तीन तस्वीरों में भी कमीलस के शरीर के अंग मौजूद थे। इन शक्लों में एक और गहरी सादृश्यता भी थी। इन शक्लों पर उदासी और दुख के गहरे चिन्ह थे और लारां को इस उदासी और दुख से नफरत थी। लारां को इस वक्त ख्याल आया कि रास्ते में क्योंकि कमीलस को वह बहुत देर तक देखता रहा था इसलिये वह लाश इन शक्लों में भी पैदा हो गई थी। अब उस पर एक नया डर छा गया कि वह जो भी तस्वीर बनायेगा, उसमें कमीलस के शरीर के अंग होंगे। इस तरह वह चित्रकारी कैसे कर सकेगा।

दूसरे दिन उसने भिन्न शरीरों की तस्वीरें बनाईं और फिर खाके खींचे। वह जान बूझकर शरीर के अंगों में गल्ती से काम लेता। लेकिन जब इन तस्वीरों को गौर से देखता तो उसमें भी कमीलस मौजूद होता। यहाँ तक कि कुत्तों और बिल्लियों की शक्लों में भी कमीलस की शक्ल प्रगट हो जाती। वह बुरी तरह क्रोधित हो गया। उसने मुक्का मारकर तस्वीरें फाड़ दीं। उसे यकीन हो चुका था कि वह कमीलस के सिवा किसी और की तस्वीर बना ही नहीं सकता।

अब वह स्टुडियो में काम नहीं कर सकेगा। तस्वीर बनायेगा तो वह कमीलस को नई जिन्दगी देगा। अगर वह स्टुडियो में रहना चाहता

है तो उसे अब कोई और तस्वीर नहीं बनानी चाहिये उसे ऐसा मालूम हुआ कि उसका हाथ उसके अपने शरीर का अंग ही नहीं रहा।

२६

मादाम रेकुन को जिस गंभीर क्षण का खतरा था वह सामने आ गया था। वह लकवा जो महीनों से उसके रगों में रंग रहा था अब आखिरी चोट लगाने वाला ही था। एक शाम को जब वह थरेसा के साथ धीरे-धीरे बातें कर रही थी उसकी जबान एक दम रुक गई और बात बीच में से ही कट गई। जब उसने मदद के लिये पुकारना चाहा तो वह बोल न सकी। उसके हाथ-पाँव सिल हो गये। वह गूँगी और बेहोश बे हरकत हो गई।

थरेसा और लारां डर से उछल पड़े। वह मादाम रेकुन के तड़पने की शक्ति न ला सके। वह उनके सवालों का जवाब नहीं दे सकती थी। इशारों से यह नही बता सकती थी कि उसे कहाँ तकलीफ है। अचानक उन्हें मालूम हुआ कि उनके सामने पत्थर की तरह पड़ी हुई बूढ़ी औरत अब एक लाश है। साँस लेती हुई लाश। उस दिन के बाद से उनकी जिन्दगी असह्य हो गई। उनकी शाम पहले से सख्त मुसीबतों से गुजरने लगी। अब दुकान भी उनके लिये डरावनी जगह बन गई। उन्होंने बुढ़िया को स्थायी तौर पर लैम्प के नीचे डाल दिया ताकि रोशनी उसके चेहरे पर पड़ती रहे और वह उन्हें जिन्दा दिखाइ दे।

बुढ़िया की मौजूदगी को महसूस न करते हुए लारां और थरेसा

में प्राय: तू तू मैं मैं होने लगी और वह इतना शोर गुल मचाते कि बुढ़िया आँखें खोल देती। कुछ दिन के बाद मादाम रेकुन के एक हाथ में जरा सी हरकत पैदा हुई। अब वह स्लेट पर लिख कर वता सकती कि उसे किस चीज की जरूरत है। लारां और थरेसा खाने के वक्त, दोपहर को और सुबह नाश्ते के वक्त और दिन भर बुढ़िया को एक कुर्सी पर बैठाकर अपने सामने रखते, जैसे उसका अस्तित्व उनके अपने अस्तित्व के लिए बहुत जरूरी हो।

इस पर भी शुक्रवार की शाम के उत्सव जारी रहे। वह मादाम-रेकुन से बातें करते जैसे किसी मूर्ति से बातें कर रहे हों। वह मादाम रेकुन से सहानुभूति-पूर्ण बात कहने से भी परहेज करते। वह केवल आपके मजे की खातिर बुढ़िया का सुबह शाम ध्यान देते। ग्रीयूट प्राय: इस बात का दावा करता कि वह मादाम रेकुन के हर इशारे और चेहरे के उतार-चढ़ाव को भली भाँति समझता है। वह प्राय: मादाम रेकुन के मतलब को समझने लगता। वह बड़े घमंड से कहता—"मैं मादाम-रेकुन की आँखों को पुस्तक की तरह पढ़ सकता हूँ।"

लेकिन बूढ़ी औरत को समझना आसान नहीं था। यह ठीक था कि वह सब बातें समझ लेती थी लेकिन वह अपने शरीर में ही दफन हो चुकी थी। उसके पास आवाज नहीं रही थी। इशारे नहीं रहे थे। हरकत नहीं रही थी। लारां जब उसकी तरफ देखता तो सोचता—"कौन जाने कि इस शरीर में क्या जादू खेला जा रहा है।"

लारां गलती पर था। मादाम रेकुन खुश थी कि उसकी इतनी खबर ली जा रही है। वह खुश थी कि उसके बच्चे उसकी इतनी सेवा कर रहे हैं। दिन पर दिन उसकी आँखों में ज्यादा मिठास आती जा रही थी। अब उसे अपनी आँखों को इस्तेमाल करने का ढंग भी आ गया था।

मादाम रेकुन कई सप्ताह तक इस तरह जिन्दा रही। लारां और थरेसा उसे अपने बीच रखने की बेफायदा कोशिश करते। जब उन्हें मालूम होता कि वह उन्हें हर वक्त देखती रहती है और उनकी बातें हर वक्त सुनती रहती है तो वह पागल हो जाते। उन्हें कमीलस दिखाई देने लगता और वह उसे मार भगाने की कोशिश करते। ऐसे वक्त में उनके मुँह से ऐसे शब्द निकल जाते हैं जिनसे मादाम रेकुन पर एक भयानक सत्य प्रकट होने लगता। लारां पर विचित्र तरह का दौरा होता और वह इस दौरे के कारण ऊट-पटाँग बकने लगता। आखिरकार बुढ़िया को सब बातों का पता चल गया। इस चेतावनी ने बुढ़िया को अन्दर ही अन्दर मरोड़ कर रख दिया। लेकिन वह कोई हरकत नहीं कर सकती थी। उसका एक हाथ जो थोड़ा काम करने लगा था वह भी सुन्न हो गया। वास्तव में बिजली के कोंधे की तरह उसके शरीर के अन्दर की जिन्दगी को भी राख बना दिया था। उसने बहुत कोशिश कि की उसके सम्मान पर जो भार गिरा है उसे उतार फैंके, लेकिन वह लाचार थी। उसके अन्दर एक भूचाल भी आया लेकिन उसमें हरकत न पैदा हुई।

वह अभी तक प्रेम, ध्यान, देखभाल और खुशी की जिन्दगी गुजार रही थी। लेकिन उसकी जिन्दगी के आखिरी कुछ दिन कितने कठोर हो गये थे। ईश्वर ने उसे ६० साल तक धोखा दिया था। या तो ईश्वर ने यह सच्चाई उसे पहले बता दी होती या लकवे की बजाये मौत उस पर हमला कर देती।

क्या यह सच है कि कमीलस को लारां और थरेसा ने मिलकर कत्ल किया है? अपनी इस मिली जुली इच्छा की तसल्ली के लिये उन्होंने अपराध के लिये जाल बिछाया। थरेसा जिसको उसने पाल-पोस कर बड़ा किया था। जिससे उसने एक माँ की ममता के साथ प्यार किया था, वह उसके बेटे की कातिल है और वह बार-बार जी ही जी में कहती—"मेरे बच्चे ही मेरे बच्चे के कातिल हैं। लारां और थरेसा की गर्दन की तरफ

लपकना चाहती लेकिन अपनी लाचारी पर और भी कुढ़ती। उस वक्त उसकी आँखों में आँसू आ जाते।

थरेसा के दिल में असीम सहानुभूति जाग्रत हुई।

"हमें उसको बिस्तर पर लेटा देना चाहये।" उसने लारां से कहा।

लारां ने जब अपने बाजुओं में मादाम-रेकुन को उठाया तो उस वक्त उसने जोर लगाया कि उसकी ऊँगलियों में जिन्दगी लौट आये ताकि वह अपने बेटे के कातिल का गला घोट सके और वह यह भी नहीं चाहती थी कि उसके बेटे का कातिल उसे अपनी गोद में उठायें। लेकिन ईश्वर उसके खिलाफ था। वह उसकी तरफ फटी-फटी आँखों से देखने के सिवा और कुछ न कर सकी।

"बड़ी खुशी से मुझे घूरती जाओ। तुम अपनी आँखों से मुझे खा नहीं जाओगी।" लारां ने जी ही जी में कहा और फिर उसने बुढ़िया को धम से बिस्तर पर गिरा दिया। बुढ़िया बेहोश हो गई और एक क्षण के लिये अपने दुख की हालत को भूल गई। उसके बाद से वह हर सुबह व शाम को अपने बेटे के कातिल की गोद की तकलीफ बर्दाश्त करती।

२७

यह डर ही का गम्भीर क्षण था, जिसने नौजवान जोड़े को अपने दिल का रहस्य प्रकट करने और मादाम रेकुन की मौजूदगी में अपने अपराध को मानने पर मजबूर कर दिया था। उन दोनों में से कोई भी

मादाम रेकुन पर यह जुल्म तोड़ना नहीं चाहता था।

आने वाली शुक्रवार की शाम को उन दोनों के दिल में एक अजीब खलबली सी मची हुई थी। थरेसा ने लारां से कहा कि अपाहिज मादाम-रेकुन को खाने के कमरे में छोड़ना क्या बुरा नहीं होगा। क्योंकि बुढ़िया सब कुछ जानती थी और हो सकता था। कि वह सब पर उनके रहस्य को प्रकट करदे।

क्यों नादान बनती हो। उसमें जबानी हिलाने की ताकत ही कहाँ है ?"

"वह कोई और रास्ता न ढूंढले।" थरेसा ने जबाब दिया।

"नहीं नहीं! डाक्टर मुझे बता चुका है कि अब उसमें रत्ती भर जान बाकी है। वह खतम हो चुकी है। और ज्यादा दिन जिन्दा भी नहीं रहेगी।

"मैं तो यही कहूँगी कि मादाम-रेकुन को उसके कमरे में बंदकर दिया जाये और मेहमानों से कहा जाये कि वह बीमार है।"

"वह बेवकूफ मैचाड सीधा उसके कमरे में जा निकलेगा। कहेगा कि वह अपनी दोस्त मादाम-रेकुन से जरूर मिलेगा। और फिर हम मुंह दिखाने के लायक नहीं रहेंगे।"

"अच्छा तो जो होता है होने दो।"

उस शाम को जब मेहमान वहाँ पहुँचे तो मादाम-रेकुन पहले की तरह अपनी जगह आराम-कुर्सी में बैठी थी। उस दिन मेहमान पहले इधर उधर की बातें करते रहे और फिर मैचाड ने अपाहिज औरत का हाल मालूम किया और उसके बाद वह डोमिनो खेलने लगे।

जिस दिन से मादाम-रेकुन को वह भयानक रहस्य मालूम हुआ था, उसी दिन से वह शुक्रवार की शाम का इंतजार कर रही थी। वह अपनी शक्ति, को जमा करती रही थी कि मेहमानों के सामने अपराधियों का एलान करेगी। यह सोचते हुए कि उसकी जबान उसका साथ नहीं

देगी वह आश्चर्य-जनक कोशिश से काम लेते हुए अपने दाँए हाथ की उँगली को हरकत में लाने में सफल हो गई। उसने मेजपर पड़े-हुए मोमजामे पर उंगली से लिखना शुरू कर दिया।

डोमिनो खेलने वालों ने जब सफेद, नरम और मुर्दा हाथ को हरकत में देखा तो हैरान रह गये। ग्रीयूट ने खेलना बंद कर दिया।

"देखो थरेसा-! मादाम-रेकुन अपनी उंगली को हरकत में ला रही है।" बूढ़ा मैचाड चिल्लाया—"शायद इसे किसी चीज की जरूरत है।"

थरेसा जवाब न दे सकी। उसकी रगों में खून जम गया दोनों कातिल सांस रोके इंतजार में थे।

"हां! मादाम रेकुन को किसी चीज की जरूरत है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ वह डोमिनो खेलना चाहती है।" ग्रीयूट बोला।

मादाम रेकुन ने इन्कार में सिर हिलाने की जबरदस्त कोशिश की वह कहना चाहती थी कि वह डोमिनो नहीं खेलता चाहती। मादाम रेकुन मुश्किल से मोमजामा पर अपनी उंगली और घसीटने में सफल हुई थी कि ग्रीयूट चिल्लाया—"मैं समझता हूँ, मादाम रेकुन डोमिनो खेलना चाहती हैं।"

लाचार बुढ़िया ने गुस्से से भरी हुई नजरों से ग्रीयूट की तरफ देखा। मैचाड ने आखिर उसे चुप कराया। "छोड़ो भी। हाँ मेरे दोस्त लिखो। कुछ बोलो।" और फिर उसने मोमजामा पर नजर की। आलवर भी मोमजामा पर झुकगया।

वह बोला—"मैं समझ गया। मादाम ने थरेसा तुम्हारा नाम लिखा है। थरेसा।"

"हाँ हाँ! लिखो मेरे प्यारे दोस्त!" मैचाड ने अपनी बात दोहरायी।

थरेसा मुश्किल से अपनी चीख को अपने गले में रोक रही थी।

मादाम रेकुन अब ज्यादा रुक रुक कर लिखरही थी। आलवर एक बार फिर मोमजामा पर झुक के बोला—"मैं बिल्कुल अच्छी तरह

समझ रहा हूँ। तुम्हारी फूफी ने थरेसा तुम दोनों के नाम लिखे हैं। थरेसा और लारां।"

बूढ़ी औरत प्रमाण में अपनी आँखें घुमाती रही। अब तो बूढ़े मैचाड ने भी मादाम रेकुन का लिखा हुआ लेख ऊँची आवाज में पढ़ा। "थरेसा और लारां दोनों हैं........."

"हां ! हां लिखो कि थरेसा और लारां दोनों ही.........लेकिन क्या हैं। क्या तुम्हारे प्यारे बच्चे है ? अथवा क्या तुम यह लिखना चाहती हो कि थरेसा और लारां दोनों ही तुम्हारे प्यारे बच्चे हैं।"

दोनों कातिलों को काटो तो शरीर में खून नहीं था। वह बदला लेने वाले हाथ को देख रहे थे। जो लिखते-लिखते अब फिर अकड़ गया था और बेजान हो गया था।

ग्रीयूट जिसे दुख हुआ था कि उसका किसी ने बिश्वास नहीं किया था कि वह मादाम रेकुन की हर बात समझता है कि इस वक्त मादाम-रेकुन डोमिनी खेलना चाहती थी खामोश हो गया लेकिन उससे निचला बैठा भी नहीं जाता था। वह तंग आकर बोला—"मैं अच्छी तरह समझता हूँ। मादाम को मेज पर लिखने की क्या जरूरत थी, जब मैं उनका मतलब पूरा कर सकता था। मादाम रेकुन लिखना चाहती थी कि थरेसा और लारां दोनों ही मेरी बहुत अच्छी देख-रेख कर रहे हैं।"

"इसमें तो कोई शक ही नहीं।"

ग्रीयूट ने मोहरे उठाते हुये कहा—"आओ अपना खेल शुरू करें।"

वह सब एक बार फिर डोमिनी खेलने लगे। और लाचार बूढ़िया बड़ी ईप्सा के साथ अपने पत्थर की तरह जमे हाथ की तरफ देख रही थी कि उसके जीने का क्या फायदा है। उसे जल्दी ही जमीन के नीचे अपने बेटे से जा मिलना चाहिये।

२८
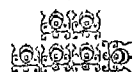
दो महीनों से थरेसा और लाराँ तकलीफ सहते आ रहे थे। अब वह एक दूसरे के लिये दुःख का कारण थे। धीरे-धीरे उनके दिल में नफरत उभरने लगी। वह एक दूसरे की तरफ गुस्से से भरी हुई नजरों से देखते। उनकी आखों में धमकियाँ छिपी होतीं।

दोनों यह बात जानने लगे थे कि वह एक दूसरे के लिये असह्य भार है। और उनकी जिन्दगी खुश हो सकती है अगर वह एक दूसरे के सामने न आयें। सच यह है कि अब वह अपने अपराध से निराश थे। उनका अपराध ही उनके गम व गुस्से का कारण था। वह इस बात को मानना नहीं चाहते थे कि उनकी शादी उनके कतल के अपराध की सजा है। एक दूसरे के सम्बन्धित दो दुश्मनों की तरह हर वक्त उनकी नसें तनी रहतीं। हर शाम को एक नया झगड़ा होता। ऐसा मालूम होता था कि कातिल पागल हो उठने के लिये मौके की तलाश में रहते थे। उनका पूरा अस्तित्व जुल्म और तकलीफ सहने के लिये तत्पर रहता था। और वह तब तक चिल्लाते रहते थे जब तक कि थकावट उन्हें कमजोर नहीं कर देती थी।

मादाम रेकुन आराम कुर्सी में उनकी यह सब बातें सुनती रहती। अब उसे अपने बेटे के कतल का तमाम हाल मालूम हो चुके थे उसकी आँखों से टपटप आँसू गिरने लगते। थरेसा को कभी कभी फूफी पर दया आ जाती और वह उसकी तरफ़ इशारा करते हुए लारां को

चुप रहने की बिनती करतीं। एक शाम को जब लारां नाराज होने और बिगड़ने के अवसर की तलाश में था, उसने पानी को मामूली तौर से ज्यादा गरम पाया। "पानी ठंडा क्यों नहीं?"

"मुझे बर्फ नहीं मिल सकी।"थरेसा ने जवाब दिया।

"अच्छा तो मैं उसे नहीं रोकूँगा।"

"पानी काफी ठंडा है।"

"यह गर्म है और इसमें कीचड़ का सा मजा है।'

थरेसा ने क्रोधित होकर कहा—"यह नदी का पानी है।" और वह रोने लगी।

"तुम रो क्यों रही हो?"

"मैं रो रही हूँ कि कमीलस को तुमने कतल किया है और मैं बेकसूर हूँ।"

"तुम झूँठ बोलती हो। मैंने नदी में उसे इसलिये फैंका कि तुमने उसे कतल कर देने के लिये मुझ से प्रार्थना की थी।"

"तुम झूँठ बोलते हो।"

इसके बाद खानदानी झगड़ा शुरू हो गया। लारां ने थप्पड़ मारने के लिये अपना हाथ उठाया। थरेसा ने अपना दायां गाल आगे बढ़ा दिया और लारां का हाथ जहाँ था वहीं रुक गया।

अपाहिज मादाम रेकुन हर वक्त उन्हें देखती रहती। उस वक्त उसे बहुत खुशी होती थी जब लारां ने चोट लगाने के लिये अपना हाथ उठाया था।

२६

एक नया लक्ष्य शुरू हुआ । डर से थरेसा अपने तमाम साधन परखने के बाद और यह न जानते हुए कि उसे किस तरफ मुड़ना चाहिये उसने लारां की मौजूदगी में कमीलस का शोक शुरू कर दिया ।

उसकी नसें खिच कर जैसे टूट गई थीं । उसका दिल नरम पड़ गया था और कभी-कभी उसका दिल सहानुभूति और दुख से भर जाता था । वह मादाम रेकुन को फूट-फूट कर रोकर प्रभावित करती रहती । अपाहिज बुढ़िया उसकी दैनिक जीवन की जरूरत बन गई थी । थरेसा को वह भी घमंड न हुआ कि प्रेम के आंसू उसकी फूफी के दिल पर छुरी चलाते हैं । एक दिन तो थरेसा ने अपनी फूफी के गाल का चुम्बन भी ले लिया और गिड़गिड़ा कर कहने लगी—"मुझे माफ कर दो । मुझे माफ कर दो ।" और फिर तो उसने उसे अपना रोज का नियम बना लिया । कभी-कभी वह कहती —"तुम कितनी अच्छी हो । तुम्हारी आँखें दया और सहानुभूति से भरपूर हैं । तुमने मुझे माफ कर दिया है ।" बुढ़िया का कष्ट बहुत ही बढ़ गया था । क्योंकि थरेसा समझ रही थी कि उसने उसे माफ कर दिया है । वह चीखकर अपने इरादे को प्रगट करना चाहती थी लेकिन वह कितनी लाचार हो चुकी थी ।

कभी लारां अगर थरेसा को मादाम रेकुन के सामने गिड़गिड़ाता हुआ देख लेता तो बहुत नाराज होता—"तुम क्यों रोती हो । क्या मैं

भी कभी घुटनों के बल झुका हूँ ?" थरेसा की यह आदत उसे बहुत परेशान कर देती ।

थरेसा अपने पति से कहती—"सुनों हमने एक कसूर किया । हमें लज्जित और पश्चाताप करना चाहिये ।

"मैं जानता हूँ तुम मक्कारी से काम ले रही हो । अगर तुम्हें मजा आता है तो जरूर आँसू बहाओ ।"

उसने जवाब देने की बजाये मादाम रेकुन के गाल का चुम्बन लिया ।

"उसे अकेला छोड़ दो ।" लारां चिल्लाया ।

थरेसा अपने पति को तंग करने के लिये कमीलस की प्रशंसा व गुणगान शुरू कर देती ।

"वह बहुत नेक था ।"

"हाँ वह बहुत नेक था और तुम्हें याद होगा कि तुमने अपनी पहली मुलाकात में मुझ से क्या कहा था ।"

"वह बहुत नेक था । मैं उससे प्रेम करती थी ।"

लारां ने गुस्सा से आग-बबूला होकर कहा—"तुम्हें उससे प्रेम था ।"

"हाँ मैं उससे अपने भाई की तरह प्यार करती थी ।"इतना कह कर वह कमीलस की याद में फूट-फूट कर रोने लगी । उसने हिचकियाँ लेते हुए कहा—"वह नेक था । वह तुझ से अच्छा था ।"

"बोलती जाओ ।"

"मैं तुम से नफरत करती हूँ । मुझे उससे प्रेम था । तुम कातिल हो ।"

"चुप रहो ।" लारां ने लाल होते हुए ऊँची आवाज में कहा—"मैं क्यों चुप रहूँ । मैं सच्ची बात कह रही हूँ ।"

लारां में अब धैर्य की ज्यादा ताकत नहीं रही । वह थरेसा पर टूट

पड़ा। उसने थरेसा के मुक्के मार कर उसे जमीन पर गिरा दिया।

"मुझे भी कतल करदे जंगली जानवर। कमीलस ने मुझ पर कभी हाथ नहीं उठाया था और वह फिर रोने लगी। उस दिन के बाद से कातिल की ज़िन्दगी और भी डरावनी हो गई। थरेसा लारां को चिढ़ाने की खातिर हर वक्त कमीलस की प्रशंसा करती रहती और वह गुस्सा में अब थरेसा को हर रोज पीटने लगा।

३०
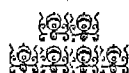
आखिर वह वक्त आ गया जब मादाम रेकुन की सहने की शक्ति जवाब दे गई और उसने फाका से खुद को खतम कर देना चाहा। वह धैर्य खो चुकी थी। अपने सामने अपने कातिलों की मौजूदगी उस पर आफत ढाती।

दो दिन तक मादाम रेकुन ने न कुछ खाया, न कुछ पीया। अगर उसे जबरदस्ती कुछ खिलाने पिलाने की कोशिश की जाती तो वह अपने जबड़ों को बन्द कर लेती। थरेसा बार-बार विनती करती लेकिन मादाम रेकुन अपनी बची-खुची शक्ति से इस संघर्ष को जारी रखना चाहती थी।

लारां बिल्कुल निष्पक्ष रहा। वह हैरान था कि थरेसा मादाम रेकुन की आत्म-हत्या को रोकने के लिये एड़ी-चोटी का जोर क्यों लगा रही है।

वह बार-बार उससे कहता—"बुढ़िया को अकेला छोड़ दो।" और

इस बात का मादाम पर बहुत असर होता। उसकी बदला लेने की भावना और भी मजबूत हो जाती। लेकिन साथ ही यह भी शब्द होता कि अगर लारां की इच्छा पूरी हो गई तो वह दोनों खुशी की जिन्दगी गुजार सकेंगे और फिर उसने सोचा कि आत्म-हत्या सचमुच बहुत बड़ी कायरता है। उसे जिन्दा रहकर कातिलों से बदला लेना चाहिये। जभी वह कमीलस से जाकर कह सकेगी। "मैंने तुम्हारा बदला ले लिया।" उसे बदले की खुशी से मस्त होकर अपनी आँखें सदा के लिये बन्द करनी चाहीं इसलिए थरेसा ने जो खुराक उसे दी वह चुपके से उसे निगल गई।

इसके बाद मादाम रेकुन ने देखा कि मियाँ बीबी का झगड़ा सख्त होता जा रहा है। लारां और थरेसा ने एक दूसरे से अलग होने के बारे में सोचा। वह दोनों नारकीय जिन्दगी गुजार रहे थे। जब लारां दिन को घर से बाहर निकल जाता तो थरेसा अपने कमरे में घूमती रहती। उसकी समझ में नहीं आता कि उसकी जिन्दगी में जो बेचैनी पैदा हो चुकी है वह इसे किस तरह दूर करे। जब वह मादाम रेकुन के सामने रोकर खामोश हो जाती तो अपने आपको बेकार समझने लगती। आखिरकार उसने अपनी नौकरानी को फिर बुलवा लिया कि वह दोपहर को आ जाया करे।

नौकरानी के आ जाने के बाद थरेसा ने मादाम रेकुन के सामने रोना भी बन्द कर दिया। वह अपना दिल बहलाने की खातिर अपनी नौकरानी की बातें सुनती रहती।

धीरे धीरे दुकान के ग्राहक भी आने बन्द हो गये। वह किसी और दुकान पर जाने लगे। ग्राहक इस दुकान से इसलिए आकर्षित हुए कि थरेसा विचित्र ढंग से उनका स्वागत करती थी। क्योंकि जब वह लारां के हाथ से पिटती थी तो किसी ग्राहक के आने पर अपने आंसू पोंछते हुए नीचे उतर कर दुकान में आती थी और ग्राहक के साथ प्यारे ढंग

से बर्ताव करती थी या सीढ़ियों में खड़ी होकर कह देती थी जो चीज वह मांग रहा है खत्म हो चुकी है। मुहल्ले की मजदूर लड़कियाँ मादाम रेकुन की सभ्य बातचीत की आदी हो चुकी थीं। वह थरेसा के असभ्य ढंग को कैसे सह सकतीं। उन्होंने उस दुकान का रुख करना छोड़ दिया। दुकान से आमदनी बन्द हो गई और ४० हजार फ्रांक पूंजी कम होनी शुरू हो गई। कभी कभी थरेसा सारी दोपहर गायब रहती। वह कहाँ जाती थी किसी को भी मालूम नहीं था। उसने नौकरानी को दोबारा इसलिए बुलवाया था कि न सिर्फ उसे उसकी सेवा की जरूरत थी बल्कि वह चाहती थी कि वह दुकान की देखभाल भी किया करे। अपनी शादी के ५ महीने के बाद थरेसा को बहुत दुख हुआ। जब उसे मालूम हुआ कि वह गर्भवती है। लारां से बचने का ख्याल उसके लिए खौफनाक था। उसे डर था कि वह एक मुर्दा लाश को जन्म देगी। उसने अपने पति से कुछ नहीं कहा। उसने अपने पति को खानदानी झगड़े के लिए भड़काया और जब वह पीटने के लिए तैयार हो गया तो उसने अपना पेट आगे कर दिया ताकि लारां वहां ठोकर मार सके। दूसरे दिन उसका गर्भ गिर गया।

लारां एक भयानक और निराश जिन्दगी गुजार रहा था। हर नया दिन वही भय यही विनाश और वही जंगलीपन अपने साथ लाता। जब भविष्य आशा से खाली हो जाये तो हाल और भी ज्यादा पेचीदा हो जाता है। बेकारी उसे मार रही थी। जब वह सुबह को थरेसा को पीटता था तो उसे बहुत संतोष होता था। रात भर गुस्से की लहरें जमा होती रहती थीं और थरेसा को पीटने से ही उन्हें बुराइयों से बचने का रास्ता मिलता था। थरेसा जब भी पिटती तो वह उसकी गर्दन पर दाग को जरूर नोचती और इस तरह लारां का जख्म हर रोज ताजा हो जाता। वह जब थरेसा को पीट कर अध-मुआ कर देता तो बहुत तेजी से दीवार में ठोकरें मारता। ऐसा करने में उसे मजा आता।

और मादाम रेकुन की बड़ी बिल्ली को तो देखकर उसका खून खौलने लगता। बिल्ली को अगर उसने अभी तक मारा नहीं था तो उसका कारण यही था कि वह उससे डर जाता था। खाना खाते वक्त जब कभी वह मुड़ कर देखता और बिल्ली की नजरें अपने ऊपर जमी पाता तो बिल्ली से पूछने लगता—"बोलती क्यों नहीं। मुझ से क्या चाहती है ?" और कभी कभी वह बिल्ली की पूँछ पर पैर रख देता। बिल्ली मियाऊँ-मियाऊँ करती तो उसे वह किसी आदमी का विलाप मालूम होता।

एक शाम को बिल्ली ने कुछ इस तरह लारां को घूर कर देखा कि वह भड़क उठा। उसे फौरन यह ख्याल आया कि आज ही बिल्ली को खतम कर देना चाहिए। उसने खाने के कमरे का दरवाजा खोल दिया और उसने बिल्ली को गर्दन से पकड़ लिया। मादाम रेकुन समझ गई कि उसकी प्यारी बिल्ली का क्या नतीजा निकलने वाला है। उसकी आंखों में आँसू आ गये। लारां ने दो तीन बार बिल्ली को अपने सिर से ऊपर जोर से घुमाया और उसे अपनी पूरी ताकत के साथ कमरे की बाहर की दीवार से टकरा दिया। बिल्ली की हड्डी हड्डी चूर होगई और बिल्ली डपान्ट नियूफ की शीशा वाली छत पर बेहोश जा गिरी। उस रात मादाम रेकुन अपनी बिल्ली के लिए इस तरह रोई जिस तरह वह कभी अपने बेटे के लिए रोई थी। उस रात थरेसा पर हिसटीरिया का दौरा पड़ा।

लारां ने बिल्ली से छुटकारा पाया तो उसे अपनी बीवी के बारे में चिन्ता पैदा हुई।

थरेसा चुप रही। वह बहुत गम्भीर हो गई। अब वह मादाम रेकुन के सामने अपनी आंखों में आँसू भर कर गिड़गिड़ाती भी नहीं थी। उसने लारां को उकसाना भी छोड़ दिया था। वह अब उसके बारे में सिर्फ इतनी परवाह भी नहीं रखती थी कि वह भूखा न रहे। अब

वह घर से प्रायः बाहर रहने लगी थी। इन परिवर्तनों से लारां हैरान भी होता और भयभीत भी। वह सोचता कि थरेसा की यह खामोशी और गम्भीरता एक दिन उसका दम घोंट देगी और वह तसल्ली की खातिर किसी पादरी या मजिस्ट्रेट के आगे अपने अपराध को मान लेगी। थरेसा जब भी बाहर जाती तो उसे ऐसा मालूम होता कि वह किसी रहस्य की तलाश में है जिसे वह सब कुछ बता सके। दो बार उसने थरेसा का पीछा करने की कोशिश की लेकिन वह हमेशा भीड़ में गुम हो जाती। अब यह ख्याल उसे सताने लगा कि थरेसा बहुत ही दुखी होकर सत्य बात को प्रगट कर देगी। इसलिए वह उसके इस भेद खोलने को उसके गले में दबा देना चाहता था।

३१
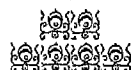
एक सुबह को अपने स्टुडिओ में जाने की बजाये लारां अपनी गली के एक शराबखाने के एक कोने में जम कर बैठ गया। और गली की तरफ टकटकी बाँध कर देखता रहा। उसकी नजरें थरेसा को ढूँढ रही थीं। रात को थरेसा ने उससे कहा था कि वह आज सुबह को सवेरे ही घर से निकल जायेगी और शाम को जरा देर से लौटे।

लारां ने कोई आधा घंटा इन्तजार किया होगा कि उसने थरेसा को तेज-तेज कदम उठाते हुए गली से बाहर निकलते देखा। उसने फीके रंग की पोशाक पहन रखी थी। उसको पहली बार दिखाई दिया कि उसकी बीवी एक वेश्या के कपड़े पहने हुए है। वह अपने कूल्हे मट-

काती हुई चल रही थी। हर मर्द जो उसके पास से गुजरता था वह उसे घूर कर देखती थी और किसी बहाने से अपनी जुराबों के फुंदने सुधारने के लिए अपना लहंगा घुटने तक उठाती थी और आगे बढ़ जाती थी। लारां उसके पीछे पीछे हो लिया

आज का दिन जरा धुंधला-धुंधला था और थरेसा धीरे धीरे चल रही थी। जो व्यक्ति सामने से उसे देखता था वह उसकी पीठ को भी उसके आगे से गुजर कर जरूर देखता था।

थरेसा रियूड-मेडी सीने को होली। लारां को एक झरझरी सी आई। यहां ही पुलीस चौकी थी। उसने फिर अपने डर को झटकते हुए अपने दिल को तसल्ली दी की अगर वह थाने की तरफ बढ़ी तो वह उस पर झपट पड़ेगा। सड़क के मोड़ पर थरेसा ने पुलिस के सिपाही की तरफ बड़े गौर से देखा। लारा काँप उठा यह समझते हुए कि वह पुलिस के सिपाही के पास जा रही है वह बाजार की एक दुकान के दरवाजे को आड बना कर खड़ा हो गया। उसे डर था कि उसे अभी अभी गिरफ्तार कर लिया जायेगा। मगर थरेसा पुलिस के सिपाही से दूर निकल गई। जब वह सैंटे-मचल के बाजार में पहुँची तो थरेसा ने एक रैस्टोरेंट का रुख किया। वह रेस्टुरैंट में पहुंच कर बाजार की तरफ दीवार के साथ एक मेज पर बैठ गई। वहाँ पहले ही बहुत सी औरतें मौजूद थीं और उन औरतों के झुरमुट में एक विद्यार्थी कहकहे लगा रहा था और फिर उसने बैरे को शराब लाने का आर्डर दिया।

थरेसा भूरे बालों वाले इस नौजवान के साथ बड़ी निस्संकोच होकर बातें करती रही। दो वैश्याएं एक मेज पर से उठ कर थरेसा के पास आ गई और पुरानी सहेलियों की तरह उससे बातें करने लगी। यह औरतें सिगरेट पी रही थीं; इस रैस्टुरैंट के कुछ मर्द खुले बन्दों अपने साथ बैठी हुई औरतों को चूम रहे थे और राह चलते लोग उनकी

तरफ आँख उठा कर भी नहीं देख रहे थे। जैसे यह सब बातें इस रैस्टुरैंट की मामूली बातें हों।

थरेसा ने जब अपना जाम खतम कर लिया तो वह उठी और भूरे बालों वाले उस नौजवान के साथ बाजार रियूड-लाहाप की तरफ चली गई। लारां बराबर उनका पीछा करता रहा। कूचा सेंट-आन्दरे में पहुँच कर वह एक रिहायसी मकान में घुस गये और लारां ठीक सड़क के बीच में खड़ा रहा और उस घर की तरफ़ देखता रहा।

लारां तमाम बातें समझ गया, और ज्यादा इन्तजार न करते हुए उसने खुश हो कर एक नारा लगाया।"ओहो वह काफी खुश मालूम होती है और वह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकती।

एक बात पर उसे अफसोस हो रहा था कि इस तरह की रंग-रेलियाँ मनाने में थरेसा ने क्यों पहल कर दी थी। उसे ऐश व ऐश्वर्य का क्यों ख्याल न आया। उसके सारे दुख दूर हो जाते। उसके दिल की तमाम गन्दगी धुल जाती। उसकी धोखाबाजी ने उसके लिए खुशी का रास्ता खोल दिया था। थरेसा उसके लिये अब चिरकाल से एक बेगाना बन चुकी थी। वह एक घन्टे के संतोष के लिए थरेसा को सैकड़ों बार बेचने के लिये तैयार था।

वह बड़ी बेफिक्री के साथ सड़क पर टहलने लगा। वह आज खुश था। वह दिल ही दिल में थरेसा का धन्यवाद कर रहा था कि पुलिस के पास जाने की बजाये अपने चाहने वाले के पास गई थी।

उस शाम को दुकान की तरफ लौटते हुये लारां ने फैसला किया कि वह अपनी बीवी से दो चार हजार फ्रांक मांगेगा। उसने सोचा कि क्रोध आदमी के लिये बहुत महंगा है और औरत के लिये बहुत सस्ता क्योंकि वह खुद को बेच सकती है। वह बड़ी बेसबरी के साथ थरेसा के आने का इन्तजार करने लगा। जब वह आई तो उसने मुसकरा कर उसका स्वागत किया। उसने इस बात का बिल्कुल कोई जिक्र नहीं किया

कि उसने उसका सुबह को पीछा किया था। थरेसा ने थोड़ी सी पी रक्खी थी। उसके कपड़ों से जो अच्छी तरह उसके शरीर से अच्छी तरह लिपटे हुए नहीं थे तम्बाकू की दुर्गन्ध आ रही थी। वह थकी हुई थी, इसलिये उसका रंग फीका पड़ गया था।

खाना चुपके-चुपके खाया गया। थरेसा ने किसी चीज को हाथ न लगाया। लारां ने अपनी कुहनियाँ मेज पर टेक दीं और साफ साफ पाँच हजार फ्रांक की मांग कर दी।

"नहीं।" थरेसा ने शिष्टता से जवाब दिया। "अगर मैंने तुम्हारी लगामें ढीली करदीं तो तुम हमारे सिर पर छत भी नहीं बची रहने दोगे।"

"शायद ऐसा ही हो। लेकिन मुझे उसकी परवाह ही नहीं, मुझे रुपयों की जरूरत है।"

"नहीं। एक बार और नहीं। तुमने अपनी नौकरी छोड़ दी। दुकान से अब एक पाई की आमदनी नहीं रही। हर वक्त मुझे बैंक से रुपये निकालवाने पड़ते हैं। तुम्हें इन सब बातों को समझना चाहिये।"

"इंनकार करने से पहले जरा सोच लो। मैं तुमसे एक बार कह चुका हूँ कि मुझे पाँच हजार फ्रांक की जरूरत है। और मैं यह रकम लेकर रहूँगा। और तुम्हें यह रकम मुझे देनी होगी।"

लारां का गम्भीर और शान्तिपूर्ण ढंग थरेसा को हैरान कर रहा था। "हाँ मैं जानती हूँ कि तुमने जैसा आरम्भ किया था वैसा ही परिणाम पास लाना चाहते हो। हम चार साल से तुम्हें पाल रहे हैं। तुम सिर्फ यहाँ शराब पीने और खाना खाने आते है। हुजूर आप कुछ भी तो नहीं करते।" और थरेसा ने एक स्पष्ट गाली दी।

"इन दिनों तुम्हारी जबान बहुत निखर गई है। मैं जानता हूँ कि तुम किस तरह के लोगों के पास अब जाने लगी हो।"

थरेसा एक क्षरण के लिये चौंकी और फिर ढिठाई के साथ बोली—

"लेकिन मैं कातिलों के पास नहीं जाती।"

लारां का चेहरा पीला पड़ गया। लेकिन उसने खुद को सम्भालते हुए कहा—"सुनो मेरी जान! नाराज होने की जरूरत नहीं। अगर हम खुद को बर्बाद नहीं करना चाहते तो हमें यह समझौता करना ही पड़ेगा। मैंने तुमसे पाँच हजार फ्रांक इसलिये मांगे हैं कि मुझे उनकी जरूरत है। और मैं तुम्हें बता दूँ कि मैं उन रुपयों को अपने दोनों के दिमाग की शान्ति के लिये इस्तेमाल करना चाहता हूँ।" और वह विचित्र ढंग से मुस्कराया।

"तुम सोच लो और उसके बाद मुझे अपना आखिरी जवाब बता दो।"

मैं सोच चुकी हूँ। तुम्हें एक फूटी कौड़ी नहीं मिल सकती।"

लारां उठखड़ा हुआ। थरेसा सहम गई कि वह उसे पीटने न लगे। लेकिन लारां उसके पास न आया। उसने उसे बहुत ही कठोरता के साथ बताया कि वह जिन्दगी से तंग आ चुका है और वह जल्दी ही पास के पुलिस थाने में जाकर कतल की सारी कहानी कह डालेगा। "तुमने मेरी जिन्दगी असह्य बना दी है। हम दोनों पर मुकदमा चलेगा और हम दोनों को मौत की सजा होगी और खेल खतम होगा।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है कि तुम इस तरह मुझे डरा-धमका सकते हो। तुम अगर पुलिस थाने नहीं जाओगे तो मैं खुद जाऊँगी, मैं फाँसी तक तुम्हारा साथ दूँगी। इसलिये आओ और मेरे साथ पुलिस थाने चलो।"

वह उठी और सीढ़ियों की तरफ बढ़ी।

"बहुत अच्छा आओ चलो। हम दोनों साथ चलें।"

और आज वह दोनों सीढ़ियों से उतर कर दुकान में आये तो दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा। दोनों डर रहे थे। उन्हें ऐसा मालूम हुआ जैसे कीलों से उन्हें जमीन में गाड़ दिया गया हो। उन्हें पुलिस,

जेल और फिर फांसी का तख्ता दिखाई देने लगा। दोनों के हौसले टूट गये। थरेसा ने पहले बात की—"मैं भी कितनी मूर्ख हूँ कि इतनी छोटी सी रकम पर परेशान हो रही हूँ। आखिर एक दिन तुम्हें ही यह रुपया हड़प करना है। मैं क्यों रोकूँ।"

ज्यों ही यह रकम लारां की जेब में आई। उसने शराब पीना शुरू कर दिया। वेश्याओं के यहाँ जाना शुरू कर दिया और उसने आवारा-गर्दी और व्यभिचार की जिन्दगी को अपना लिया। वह रात गये घर लौटता और दिन को सोता और सच्चाई से हमेशा फरार तलाश करता। जब लोग उसके इर्द-गिर्द शोर मचाते तो वह अपने अन्दर की बड़ी और गरम खमोशी को सुनता और जब वह किसी का चुम्बन लेता जाम चढ़ाता तो उसका सब दुख दूर हो जाता। अब वह ज्यादा खाने-पीने और ऐयाशी के लायक भी नहीं रहा था। इस क्रोध के बाद भी उसे बहुत ही कष्ट होता।

अब थरेसा ने बाहर जाना बहुत कम कर दिया था। उसने सिर्फ एक महीना तक लारां की सी जिन्दगी गुजारी थी। वह शाम को बहुत थोड़ी देर के लिये घर आती थी मादाम रेकुन को खाना खिलाकर और उसे पलंग पर लेटा कर वह दूसरे दिन की सुबह तक के लिये घर से निकल जाती। एक बार तो वह और उसका पति पूरे चार दिन तक लगातार बाहर रहे। उसे भी व्यभिचार की जिन्दगी नहीं भूली थी। अब वह घर रहकर गंदगी पसंद करने लगी। मैला-कुचैला पेटीकोट, बिखरे और उलझे हुए बाल, भद्दा चेहरा और हाथ। अब वह गंदगी से खुद को भूल जाने की फिक्र में थी।

जब दोनों कातिल थक गये और उन्हें जब यह मालूम हो गया कि सड़ी-गली जिन्दगी ने भी उन्हें स्वीकार नहीं किया है तो उन्होंने अपने अंधेरे और नमीदार कमरे को एक बार फिर एक जेल खाना पाया।

उन्होंने फरार का रास्ता पकड़ा था लेकिन वह अपने खूनी सम्बन्धों को तोड़ने में सफल नहीं हुए थे।

अब एक बार फिर शाम के झगड़े शुरू हो गये। वह दिन भर एक दूसरे पर चोटों की बौछार करते और दर्द व तकलीफ से बिलबिलाते रहते।

वह एक दूसरे से डरते रहते। पाँच हजार फ्रांक की मांग करते वक्त जो घटना हुई थी उसे बार बार दोहराया जाता, उन दोनों को यह तसल्ली थी कि उनमें से हर एक गद्दारी पर तत्पर है। वह बहुत गुस्से की हालत में धमकी देते कि वह पुलिस से सारा हाल कह देंगे लेकिन जल्दी ही हिम्मत उनकी टूट जाती और वह दूसरे को बचन देते कि वह खामोश रहेंगे। वह पुलिस के सामने अपने अपराध को स्वीकार करने की खातिर बीसों बार दरवाजे तक जा चुके थे। वह एक दूसरे के आगे पीछे होते। गाली गलौच के बाद वह अपने इरादे को छोड़ देते। हर झगड़े के बाद वह ज्यादा शक करते और ज्यादा डरावने हो जाते। सुबह से शाम तक वह एक दूसरे की देखभाल करते। इसी लिये वह घर से बाहर न निकलते।

वह हमेशा एक दूसरे को अपनी नजरों के सामने रखते, अगर थरेसा दुकान में जाती तो लारां उसका पीछा करता और अगर लारां दरवाजे में खड़ा होकर सड़क की तरफ देखने लगता तो थरेसा उसके पीछे आ खड़ी होती।

अनबन की यह स्थिति देर तक जारी नहीं रह सकती थी। अपनी अपनी जगह वह दोनों एक नये अपराध के बारे में सोचते जिसकी बदौलत वह एक दूसरे से पहले इस परिणाम से बच सके जिसका हर वक्त उन्हें खटका लगा रहता था। दोनों एक दूसरे से जुदाई की फौरन जरूरत को महसूस करते। अबके कतल का अपराध, जो उनके ख्याल में आता वह उसके दोष व परिणाम पर जरा भी गौर न करते।

नया कत्ल करने के फैसले ने उन दोनों को शान्त कर दिया था।

उन्होंने अपनी अपनी जगह ढूंढनी शुरू कर दी, वह एक दूसरे को मार देने की न होने वाली हार की जरूरत को महसूस करते रहे। दोनों अपने अपने ढंग पर सोच रहे थे कि अब की भी अगर वह कानूनी बंधन से बच निकले तो किसी विदेश में जा रहेंगे। अपने दहेज की बची खुची रकम को थरेसा हर वक्त अपनी आलमारी की दराज में रखती। उन्हों ने यह सोचना बन्द कर दिया था कि मादाम-रेकुन का क्या होगा।

लारां की मुलाकात अपने कालेज के एक दोस्त से हुई जो एक दवाई बेचने वाले के प्रयोगशाला में नौकर था। लारां का यह दोस्त उसे अपने प्रयोगशाला में ले गया और भिन्न-भिन्न दवाइयों का उसे नाम बताने लगा। एक शाम को जब लारां ने इरादा कर लिया था कि आज रात को वह थरेसा को कत्ल कर देगा तो थरेसा को गिलास में पानी पीते हुये देखकर याद आया कि उसने अपने दोस्त के प्रयोगशाला में एक शीशे के बर्तन में एक जहर देखा था जिसके बारे में उसके दोस्त ने उसे बताया था कि इस जहर का असर कितना खतरनाक है। यह जहर आँख झपकते आदमी को खत्म कर देता है और किसी को पता भी नहीं चलता कि मौत का कारण क्या है। दूसरे दिन वह अपने दोस्त से मिलने गया और जब उसके दोस्त की पीठ उसकी तरफ थी वह जहर की शीशी को चुराने में सफल हो गया। उसी को थरेसा ने लारां की अनुपस्थिति का फायदा उठाते रात हुये रसोई खाने की छुरी को खूब तेज किया। उसकी छुरी से रोटी काटी जाती थी।

◉

३२

आने वाली शुक्रवार को रेकुन परिवार के मेहमान बारबार यह कह रहे थे कि आज परिवार के लोग पहले से ज्यादा तल्लीन और खुश हैं। उस शाम की बैठक रात के ग्यारह बजे तक रही। ग्रीयूट ने जाते हुए कहा कि उसने ऐसी प्रसन्नतापूर्ण शाम पहले कभी नहीं गुज़ारी।

आलवर की बीबी सोजीन गर्भवती थी इस लिये वह देर तक थरेसा से बातें करती रही। लारां बड़े ध्यान से बूढे मैचाड और आलवर की कहानियाँ सुनता रहा। ग्रीयूट और मैचाड चार साल से बराबर मादाम रेकुन के यहाँ हर शुक्रवार को आते रहते थे और वह एक बार भी इस महफिल से उकताये नहीं थे। आलवर बड़े आग्रह के साथ कहता कि इस घर के खाने के कमरे से ईमानदारी की महक आती है। थरेसा के चेहरे पर अगर कभी लारां की चोट की खराश पड़ी होती तो बहाना बनाती कि वह गिर पड़ी थी।

बूढ़ी अपाहिज मादाम रेकुन ने अब कभी अपने बेटे के कातिलों का भेद खोलने की कोशिश नहीं की थी। वह लारां और थरेसा के सम्बन्धों से महसूस करने लगी थी कि उसके बदले का दिन दूर नहीं। उसकी बस यही एक इच्छा थी कि वह इस कष्ट और इस आपत्ति को अपनी आँखों से देखे जो उन दोनों को बर्बाद करके रख देगी।

ग्रीयूट खामोश बुढ़िया से बातें करता रहा-"इस घर में इतनी खुशी और शान्ति है कि यहां से जाने को जी नहीं चाहता।"

बूढ़ा मैचाड बोला—"सच तो यह है कि यहां आकर मेरा सोने को जी नहीं चाहता। वर्ना अपने घर पर तो मैं ऊंघता रहता हूँ।"

आलवर कहता—"यहां खुशी इसलिये है कि इमानदारी मौजूद है।"

सोजीन थरेसा से कह रही थी—"मैं कल ९ बजे आऊंगी,"

"नहीं।" थरेसा ने तेजी से जवाब दिया।" मैं कल सुबह शायद बाहर जाऊँगी।"

जब मेहमान चले गये तो पति-पत्नी ने संतोष का सांस लिया। कल से वह कुछ ज्यादा गम्भीर हो गये थे और एक दूसरे की मौजूदगी में दुख महसूस नहीं करते थे। वह खामोश अपने ऊपर के कमरे में आ गये। मादाम-रेकुन को उसके बिस्तर पर लेटाने के बाद खाने के कमरे को साफ करना उनकी आदत थी और वह रात के लिये मीठा पानी तैयार किया करते थे।

आज रात को जब वह इधर आये तो वह एक क्षण के लिये बैठ गये। वह एक दूसरे से आँखें नहीं मिला रहे थे। उनके होंठ पीले पड़ गये थे। एक क्षण की खामोशी के बाद लारां बोला—" क्या आज हम सोयेंगे नहीं।"

,'क्यों नहीं।" थरेसा ने काँपते हुए कहा जैसे बहुत सर्दी हो,वह उठी और उसने पानी की बोतल उठाई।

"तुम क्यों कष्ट करती हो। लाओ यह बोतल मुझे दो, मैं पानी लाता हूँ। तुम अपनी फूफी का हाल-चाल पूछो।"

यह कह कर लारां ने वह बोतल थरेसा के हाथ से छीन ली और फिर उसने थरेसा की तरफ पीठ करके ज़हर की शीशी पानी की बोतल में उंडेल दी। इतने में थरेसा आलमारी की दराज तक जा पहुंची थी। उसने रसोईघर की छुरी उसमें से निकाल कर अपने रात के सोने की पोशाक की बड़ी जेब में रख ली थी।

उस वक्त आने वाले खतरे का दोनों को एक साथ महसूस हुआ। और वह बिजली की-सी तेजी के साथ एक दूसरे की तरफ मुड़े। उन दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा। थरेसा ने लारां के हाथ में जहर की शीशी देखी और लारां ने थरेसा के रात के सोने की पोशाक की जेब से निकाला हुआ छुरी का ज़रा सा हिस्सा जगमगाता हुआ देखा। कुछ क्षणों के लिये वह दोनों बुत बने खड़े रहे। दोनों सारा मामला भांप गये। दोनों अपना ख्याल एक दूसरे के दिमाग में पाकर हैरान हो गये। उन दोनों को अपने पर दया भी आई। और एक दूसरे से डर भी आया।

मादाम रेकुन को यह महसूस करते हुए कि परिणाम पास है। उन की तरफ टकटकी बांध कर देखा और अचानक थरेसा और लारां ने सिसकियां लेना शुरू कर दिया। और वह एक दूसरे के बाज़ुओं में जा गिरे। उन्हें उस वक्त यह महसूस हो रहा था कि उनके सीने में एक कोमल और कोई मधुर सा आनन्द उभर रहा था। वे कुछ कहे बिना रोते रहे और उस गंदी ज़िन्दगी के बारे में सोचते रहे जो उन्होंने गुजारी थी। और अगर उन्होंने जिन्दा रहने की कायरता से काम लिया तो यह गंदी जिन्दगी उन्हें और गुजारनी होगी। और फिर भूत का ख्याल करके उन्होंने खुद को व्यस्त पाया और अब वह आराम और शांन्ति चाहते थे।

उनकी नजरें मिली। छुरी और ज़हर की शीशी की मौजूदगी में उनकी कृतज्ञता-पूर्ण आंखें चार हुई। थरेसा ने वह शीशी लारां के हाथ से ले ली और आधी पीली। फिर उसने वह शीशी लारां को दे दी और वह उसे खतम कर गया। जहर ने तेजी से अपना काम किया और वह एक दूसरे पर गिर पड़े। जैसे उन पर बिजली टूट पड़ी हो। और थरेसा के होठ अपने पति की गर्दन के दाग से टकराये जहां कमीलस के दांतों का निशान था।

उनकी लाशें रात भर खाने के कमरे के फर्श पर पड़ी रहीं। मुड़ी हुई, फैली हुई। लैम्प की पीली-पीली रोशनी उन पर पड़ रही थी। ११ घंटे तक मादाम रेकुन अपाहिज बेहरकत और खामोश उनके पैरों को घूरती रही वह उनको जी भर के देखना चाहती थी। और घृणा भरी नज़रों से उन पर अपनी विजय का आनन्द ले रही थी।